परिवार

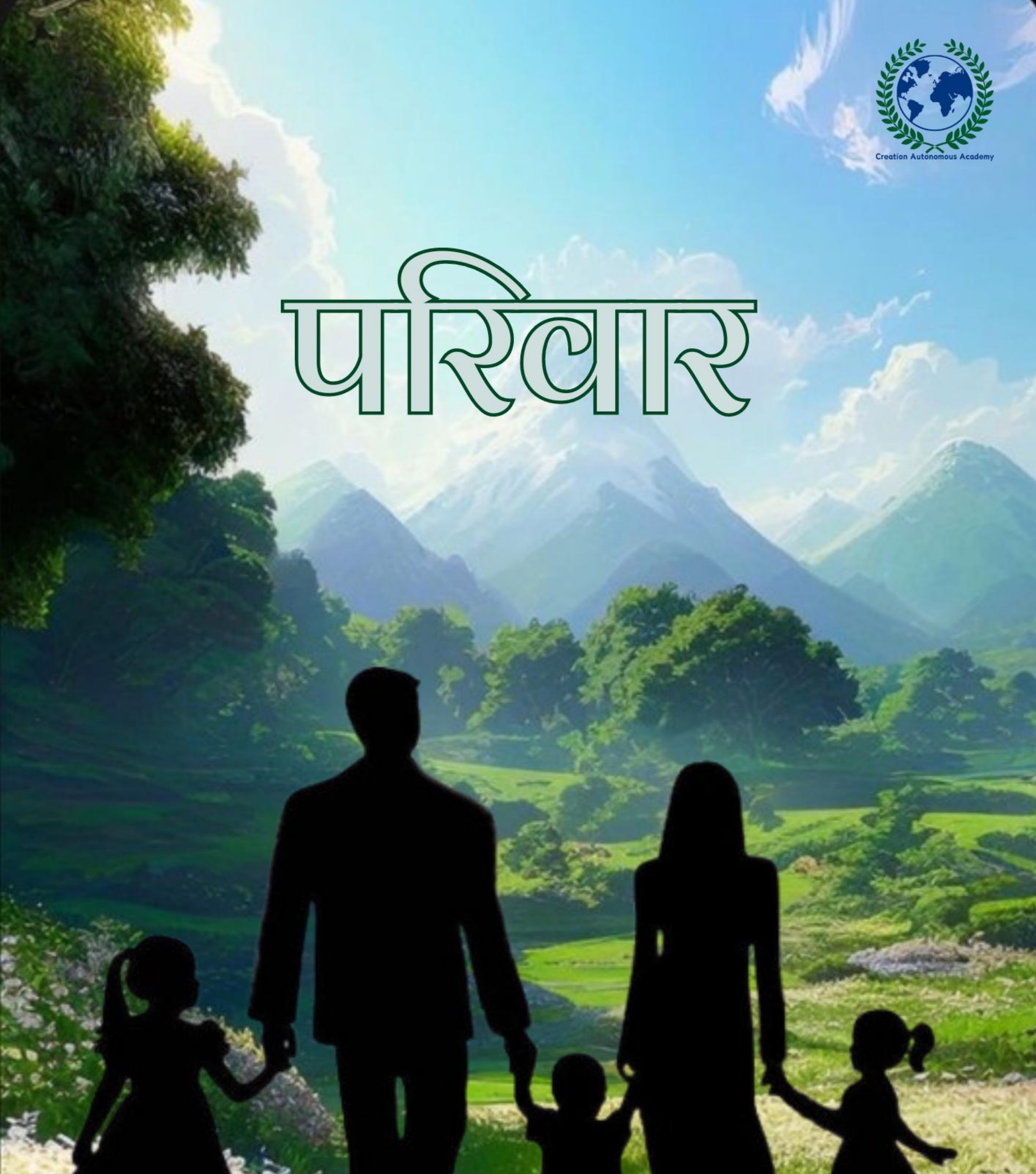

लेखक
डॉ0 रामराज डेविड

आभार

सर्वप्रथम मैं परमेश्वर का धन्यवाद करता हूं कि उसने मुझे अपनी बुद्धि और समझ प्रदान की कि मैं परिवार पर कुछ लिख सकूं। तत्पश्चात मैं अपने शिक्षकों के प्रति आभार प्रकट करना चाहता हूं जिन्होंने मुझे इतनी गहनता से वचन की शिक्षा प्रदान किया। जिन्होंने मुझे यह पुस्तक लिखने के लिए प्रेरित किया। में उन सभी व्यक्तियों का आभारी हूं जिन्होंने पुस्तक के लेखन, संशोधन, टाइपिंग, और अंतिम रुप देने में, मुझे सहयोग प्रदान किया। उन मित्रों का भी मैं आभारी हूं जिनका स्नेह और सहयोग मुझे हमेंशा मिलता रहा।

Creation Autonomous Academy

लेखक का प्राक्कथन

आज के समय में कलीसिया में परिवार की शिक्षा की अत्यंत आवश्यकता है। यह सेवा अधिक समय की मांग करती है।

ऐसी स्थिति में इस विषय पर हिन्दी में बहुत कम सामग्री उपलब्ध है। जो कुछ उपलब्ध है भी वह नगन्य है और आम विश्वासियों की पहुंच से बाहर है।

यह अध्ययन इस बात पर ध्यान केन्द्रित करेगा कि किस प्रकार पवित्र आत्मा की अगुवाई में परिश्रम पूर्वक सही प्रकार से परिवार की देखभाल किया जाए। लेखक ने स्वयं पारिवारिक जीवन व्यतीत करते हुए विभिन्न बातों का अनुभव किया है। जिनको इस अध्ययन में शामिल किया है।

' परिवार ' नामक यह पुस्तक अनेक वर्षों के अध्ययन-अध्यापन एवं पारिवारिक जीवन के अनुभव के उपरान्त हिन्दी भाषी विश्वासी परिवारों की आवश्यकता के अनुसार तैयार की गयी है। यह पुस्तक पारिवारिक जीवन में मार्गदर्शन के लिए लिखी गयी है। ताकि कलीसिया के परिवारों को उनकी आवश्यकता के अनुसार देखरेख किया जा सके। यह पुस्तक सभी पाठकों के लिए सरल, रोचक एव व्यवहारिक है। पुस्तक में उदाहरणों का समुचित प्रयोग किया गया है।

मेरी इच्छा है कि भारतीय परिवार इस पुस्तक से सहायता प्राप्त करें। सही व्यवहारिक पारिवारिक जीवन हेतु इस पुस्तक का उपयोग करें। मैं वस्तुतः इस पुस्तक के प्रथम संस्करण को प्रस्तुत करने के द्वारा पाठकों से यह आशा करता हूं कि वे इसका भरपूर उपयोग अपने परिवारिक जीवन में करेंगे।

डॉ० रामराज डेविड

Creation Autonomous Academy

विषय-सूची

अध्याय-01 विवाह पर अध्यात्मविज्ञान	05
अध्याय-02 पति-पत्नी के सम्बन्ध को समझना	10
अध्याय-03 पति-पत्नी की भूमिका व जिम्मेदारियां	12
अध्याय-04 मसीही पालन-पोषण की अनिवार्यताएं	19
अध्याय-05 एक सामंजस्यता का जीवन जीना	28
अध्याय-06 परिवार के लिए परमेश्वर की योजना	32
अध्याय-07 वेदी के रुप में परिवार	34
अध्याय-08 सेवा की बुलाहट और चुनौतियां	43
अध्याय-09 सेवा और परिवार में संतुलन बनाना	49
अध्याय-10 मसीही परिवार का नीतिशास्त्र	53
अध्याय-11 थकान से निपटना	59
अध्याय-12 परिवार के रुप में परमेश्वर की विश्वासयोग्ता का उत्सव मनाना	66
अध्याय-13 प्रलोभन और शमन	69
अध्याय-14 धन्य परिवार	71
अध्याय-15 परिवार की वित्तीययोजना और देना	76

Creation Autonomous Academy

अध्याय-1
विवाह पर अध्यात्मविज्ञान

- यह परमेश्वर की ओर से है जो अपने लोगों साथ वाचा के सम्बन्ध में प्रवेश किया।
- विवाह की वाचा एक पुरुष और एक स्त्री के लिए है जो जीवन भर सहभागी के रुप में रहने के लिए बांधते हैं
- यह बपतिस्मा लिए हुए व्यक्तियों के लिए है।
- विवाह परमेश्वर का बिनाशर्त प्रेम का नमूना है।
- प्रत्येक विवाह के लिए दो बातें आवश्यक हैं एकता और घुलनशीलता (बिनाशर्त, स्थायी सर्मपण, जब तक मृत्यु अलग न करे) ये दोनों वचन पर आधारित हैं (उत्पत्ति 2:25, मत्ती 19:3-9, मर० 10:2-12, लूका 16:18, 1 कुरि० 7:2-6, 10-11, 39-40, इफि० 5:32, रामियों 7:2-3)
- विवाह की वाचा में दो पार्टी हैं बपतिस्मा लिए हुए एक पुरुष और एक स्त्री, जो विवाह करने के लिए स्वतंत्र हैं, बिना किसी लालच व दबाव के।
- विवाह के कुछ नियम हैः

  चर्च समूह के सामने किया जाए।
  विवाह में पति-पत्नी व बच्चों के अधिकारों व नियमों का परिचय कराया जाता है।
  विवाह में दो गवाह होते हैं।

1-विवाह एक संस्थान के रुप में-

विवाह का ईश्वरीय दृष्टिकोण-

विवाह स्वयं सृष्टिकर्ता द्वारा एक संस्थान के रुप में स्थापित किया गया है।

मसीह में विवाह-

नए नियम में यह सरलता से दिखाया गया है, प्रभु यीशु ने इस संस्थान को बहुत आरम्भ में ही पुष्टि कर दिया, और इसके गौरव व मूल आवश्यकता को पुनः स्थापित करने के द्वारा पिछली खराबी को समाप्त कर दिया। (मर० 10:2-9, 10-12) प्रेम उसे उसके कलीसिया के लिए उद्धारकर्ता के रुप में उसे एकताबद्ध करता है।

प्रेरित-

नए नियम की पत्रियां कहती हैं विवाह सब में आदर की बात समझी जाए (इबा० 13:4) और कई आक्रमणों के प्रतिउत्तर में, उन्होंने इसे सृष्टिकर्ता के अच्छे कार्य के रुप में प्रस्तुत किया। (1 तीमु० 4:1-5) उन्होंने विवाह को विश्वासयोग्य के बीच ऊंचा उठाया क्योंकि यह वाचा के रहस्य और प्रेम सहित है जो मसीह और उसकी कलीसिया को एक करता है। (इफि० 5:22-23) वे कहते हैं इसलिए विवाह प्रभु में बनाया गया है (1 कुरि० 7:39) और वैवाहिक जीवन नयी सृष्टि के गौरव के अनुसार जिएं (2 कुरि० 5:17), मसीह में (इफि० 5:21-33), मूर्तिपूजकों की आदत के विरुद्ध मसीहियों को सुरक्षित रखा है। (1 कुरि० 6:12-20, 9-10, 1 पत० 3:1-7) और न्यायिक व्यवस्था सहायता करती है कि वे विभिन्न मानवीय परिश्थितियों व शर्तों में विश्वास के अनुसार वैवाहिक जीवन जिएं।

Creation Autonomous Academy

प्रथम शताब्दी-

कलीसिया इतिहास के प्रथम श्ताब्दी के दौरान, मसीहियों ने ''अन्य मनुष्यों के समान'' विवाह किया परिवार के पिता की कार्यवाही के साथ, और मात्र घरेलू अधिकारों व नियमों के साथ, उदाहरण के लिए हाथों को एक करते हुए। उन्होंने अपने आत्मिक समाज के नियमों का उल्लंघन नहीं किया, उन्होंने मूर्तिपूजक झूठ के प्रत्येक घरेलू परम्पराओं को समाप्त किया। उन्होंने सुरक्षा व शिक्षा के विशेष महत्व को स्थापित किया, उन्होंने विवाह में अध्यक्षों की देखरेख को स्वीकार किया, उन्होंने विवाह में परमेश्वर के लिए एक विशेष सर्मपण व विश्वास के साथ सम्बन्ध को दिखाया। कभी कभी विवाह के संस्कार में बलिदान के उत्सव व विशेष आशीष का आनन्द लिया।

पूर्वी परम्पराएं-

बहुत प्राचीन काल से पूर्वी कलीसियाओं में कलीसिया का पासवान स्वयं विवाह के उत्सव में परिवार के पिता के स्थान पर अथवा उनके साथ सक्रिय रुप से भाग लेता था। यह बदलाव एक समय के परिणामस्वरुप नहीं था बल्कि परिवार के निवेदन व और नागरिक अधिकारियों की सहमति के उत्तर में लाया गया था। इस कारण समारोह औपचारिक रुप से परिवार के साथ आगे ले जाया गया छोटे छोटे प्रज्वलित संस्कारों के साथ परिवार के साथ आगे ले जाया गया। जैसे जैसे समय बीता इस विचार ने आकार लिया कि विवाह के रहस्य के संस्कार के सेवक मात्र जोडे अकेले नहीं लेकिन कलीसिया के पासवान भी हैं।

पश्चिमी परम्पराएं-

पश्चिमी कलीसियाओं में समस्या कौन से तत्व विवाह में नियम बनाये गए न्यायिक दृष्टिकोण से खड़े हुए विवाह के मसीही दर्शन व रामी कानून के बीच में। यह पत्नी मात्र वैधानिक तत्व विचार को लेने के द्वारा हल किया गया। यह सत्य है कि काउन्सिल आफ टरेन्ट के समय से क्लेन्डेस्टाइन विवाहों में यह निर्णय वैध माना गया। अभी भी याजक की आशीष और उसकी कलीसिया के गवाह के रुप में उपस्थिति छोटे संस्कार के रुप में, एक लम्बे समय तक कलीसिया द्वारा प्रोत्साहित की जा रही थी। बाद में विवाह की आवश्यक वैधता के लिए पास्टर की उपस्थिति और गवाही साधारण विहित रुप में आयी।

नयी कलीसियाएं-

वैटिकन काउन्सिल द्वितीय की आवश्यकता अनुसार और विवाह के उत्सव के लिए नए संस्कार, इस आशा के साथ नए छोटे छोटे और न्यायिक रुप विकसित होंगे, कलीसिया के अधिकारियों के मार्गदर्शन के अर्न्तगत, उन लोगों के बीच जो अभी अभी सुसमाचार के लिए आए, उनके स्वयं के परम्पराओं को अधिकारिक मूल्य के साथ मसीही विवाह की वास्तविकता को प्रसन्नतापूर्ण बनाने के लिए विकसित होंगे। इस बदलाव की शर्तो के साथ कलीसियाओं की बहुसंख्यकता को देने के लिए, आधारभूत एकता के साथ इसलिए कानूनी बहुसंख्यकवाद की सीमा के बाहर न जाएं।

मसीही और कलीसियाई एकता के चरित्र और पत्नियों के परिपक्व दान तथ्य में हो सकते हैं कि कई भिन्न तरीकों में अभिव्यक्त हों,बपतिस्मा के प्रभाव के अर्न्तगत वे प्राप्त किए जाएं और गवाहों की उपस्थिति द्वारा, जो याजक उस पद पर हों के बीच। आजकल कई मान्यताएं इन तत्वों के अवसर हैं।

धर्मवैज्ञानिक अनुकूलन-

धर्मवैज्ञानिक कानूनों के सुधार में इसके कई व्यक्तिगत और सामाजिक बदलावों के लिए यहां विवाह का एक सार्वभौमिक दृष्टिकोण होगा। कलीसिया अवश्य जागरुक हो कि न्यायिक नियम अवश्य सहायता के लिए सेवा करें और विवाह के मानवीय मूल्यों को अधिक उपयोगी बनाने के लिए शर्तों को विकसित करने के लिए हों। यह न सोचा जाए कि ये नियम विवाह के सम्पूर्ण वास्तविकता को उठा सकते हैं।

संस्थान के व्यक्तिगत दृष्टिकोण-

सभी सामाजिक संस्थानों के लक्ष्य व विषय आरम्भ में मानवीय व्यक्ति बनने के लिए आवश्यक हैं जो इसके भाग के लिए होंगे और सामाजिक जीवन की आवश्यकता में पूर्ण रुप से खड़े होंगे।जीवन की सहभागिता की अंतरंगता व प्रेम के लिए विवाह एक उपयुक्त स्थान है और उनके व्यवसायिक रेखा में व्यक्तियों के कल्याण को उन्नत करने के तरीके हैं। इसलिए विवाह स्वयं के लिए कुछ सामान्य अच्छाइयों के लिए व्यक्तियों के बलिदान के तरीके का विचार नहीं हो सकता, सामान्य अच्छाई सामाजिक जीवन की उन शर्तों लोगों को अनुमति देती हैं समूंह के रुप में अथवा व्यक्ति के रुप में अधिक सरलता व अधिक पूर्णता से अपनी आवश्यकता को पूरा करने के लिए अनुमति देती हैं।

ढांचा और सर्वोच्च ढांचा नहीं-

विवाह आर्थिक वास्तविकताओं के विषय के लिए इसके आरम्भ में और इसके पूरे दौरान, यह चीजों और संसाधनों के व्यक्तिगत स्वामित्व के लिए एक सर्वोच्च ढांचा नहीं है। जब विवाह व परिवार आर्थिक शर्तों से जकड़ जाते हैं एक पुरुष व एक स्त्री वाचा का प्रतिउत्तर देते हैं मानवीय स्वभाव के लिए और उस आवश्यकता के लिए जिसके लिए सृष्टिकर्ता ने उन्हें उनमें रखा है। यही कारण है कि विवाह मात्र जोड़े के व्यक्तिगत निधि के लिए नहीं बल्कि उनके लिए एक बड़ी सहायता के लिए है।

2-मसीही विवाह के संस्कार की विचारधारा-

प्रभु यीशु मसीह ने एक भविष्यद्वाणी के तरीके से कहा कि विवाह की वास्तविकता परमेश्वर ने मनुष्य के आरम्भ में रचा था। (उत्पत्ति 1:27, 2:24, मर० 10:6, मत्ती 19:4,5)और इसे अपने मृत्यु और पुनरुत्थान से पुनः स्थापित किया। इस कारण से मसीही विवाह प्रभु में जिया जाता है। (1 कुरि० 7:39) और यह मसीह के उद्धार के कार्य के तत्व द्वारा बताया जाता है।

पुराने नियम में वैवाहिक एकता परमेश्वर और इस्राएल के लोगों के बीच वाचा से बतायी गयी है। (होशे 2, यिर्मायाह 3:6-13, यहेजकेल 16, 23, यशायाह 54), नए नियम में, मसीही विवाह एक नए गर्व के लिए आता है मसीह और कलीसिया की एकता के रहस्य के एक प्रतिनिधित्व के रुप में। (इफि० 5:21-33)सर्वोच्च प्रेम व प्रभु के वरदान जो उसके खून और विश्वासयोग्ता की छाया हैं और उसकी पत्नी के संलग्नक कलीसिया मसीही विवाह के लिए नमूना और उदाहरण बनेगी।

यह मसीह और कलीसिया के बीच प्रेम की वाचा में वास्तविक सहभागिता का सम्बन्ध है। यह स्वयं में मसीही विवाह एक वास्तविक संकेत और संस्कार का चिन्ह है जो मसीह की कलीसिया संसार में और उसके पारिवारिक प्रत्याशा में प्रतिनिधित्व करते हैं, यह सही रुप से घरेलू कलीसिया कहलाता है। (लूका 11)

वास्तविक अर्थ में संस्कार-

एक तरीके से विवाह यीशु और उसकी कलीसिया के बीच एकता के रहस्य के समान हो जाता है। उद्धार के अर्थतंत्र में विवाह पर्याप्त है धर्मी ठहराने के लिए एक बड़े अर्थ में शीर्षक संस्कार।

Creation Autonomous Academy

यह संस्कार का वास्तवीकरण भी है। यह इसका अनुशरण करता है कि मसीही विवाह स्वयं में एक वास्तविक और सत्य चिन्ह है उद्धार का, जो परमेश्वर के अनुग्रह को प्रमाणित करता है। इस कारण कैथोलिक कलीसिया के सदस्य सात संस्कार मानते हैं।

बपतिस्मा, वास्तविक विश्वास, इरादा, विवाह संस्कार-

अन्य संस्कारों के समान, विवाह अनुग्रह को प्रमाणित करता है अन्तिम विश्लेषण में जो कार्य मसीह द्वारा किया गया है यह जो प्राप्त करने का विश्वास मात्र ही नहीं है। इसका अर्थ यह नहीं हैं कि अनुग्रह प्रमाणित करता है कि विवाह का संस्कार विश्वास के बाहर या विश्वास की अनुपस्थिति में है। यह इसका अनुशरण करता है-परम्परागत सिद्धान्त-संस्कार का फलवन्त प्रभाव पाने के लिए विश्वास कारण है। विवाह की वैधता, जैसे भी यह लागू नहीं होता कि यह प्रभाव अवश्य फलवन्त होगा।

आज ‘अविश्वासी का बपतिस्मा’ एक नयी समस्या खड़ी कर रहा है जब विशेष रुप से कमी, अथवा इनकार की अपेक्षा विश्वास स्पष्ट है। मसीह और कलीसिया की क्या आवश्यकता है न्युनतम शर्त जो आवश्यक है संस्कार की योजना में एक वास्तविक मानव क्रिया। समस्या है इरादे की व्यक्तिगत विश्वास अनुबंधित पार्टी अवश्य भ्रमित न हों, लेकिन वे अवश्य पूर्ण रुप से अलग न किए गए हों। अनुग्रह व उद्धार की आवश्यकता न पायी जाए। ऐसे में विवाह की वैधता पर शंका होती है कि यह सही तरीके से अनुबंधित है या नहीं। इसके लिए आवश्यक है कि पास्टर विवाह के संस्कार के लिए विश्वास की मांग करे।

अद्‌भुत अन्र्तसम्बन्ध-

कलीसिया के लिए सामाजिक और विश्वास द्वारा बपतिस्मा संस्कार आधार है जिसके द्वारा विश्वासी मसीह की देह का सदस्य बनता है। ‘अविश्वासी का बपतिस्मा’ इस आदर के महत्व में समस्या खड़ी करता है।

- विश्वास
- बपतिस्मा
- कलीसिया की सदस्यता
- कलीसिया के क्रियाकलाप में सक्रिय सहभागिता
- विवाह

इन सब में आपस में अन्र्तसम्बन्ध है।

3-सृष्टि और उद्धार-

विवाह परमेश्वर की इच्छा द्वारा है।-

Creation Autonomous Academy

सब कुछ की सृष्टि मसीह में हुई है, मसीह द्वारा और मसीह के दृष्टिकोण में विवाह एक सत्य सृष्टिकर्ता का संस्थान है जो मसीह, दूल्हा, दूल्हन, कलीसिया के साथ की एकता के रहस्य में आता है। विवाह का उत्सव दो बपतिस्मा प्राप्त व्यक्तियों के बीच होता है जो मसीह और कलीसिया के प्रेम को दिखाता है।

मसीह के कार्यों की अभिन्नता-

दो बपतिस्मा प्राप्त व्यक्तियों के बीच, विवाह एक संस्थान के रुप में सृष्टिकर्ता परमेश्वर की इच्छा द्वारा है जिसे वह विवाह संस्कार से अलग नहीं कर सकता, क्योंकि विवाह संस्कार का स्वभाव बपतिस्मा प्राप्त के बीच दुर्घटनावश तत्व नहीं है यह आवश्यक है और इसे अलग नहीं किया जा सकता है।

प्रत्येक विवाह बपतिस्मा प्राप्त व्यक्तियों के बीच अवश्य संस्कारित हो।-

यह बपतिस्मा प्राप्त व्यक्तियों के बीच के अलावा कोई अन्य विवाहित कथन वास्तविक व सत्य नहीं है यह मसीह की इच्छा से आता है, जिसमें मसीही पुरुष और स्त्री, स्वतंत्रता पूर्वक एक दूसरे के लिए अपने आपको देते व एक दूसरे को स्वीकार करते व व्यक्तिगत रुप से मन की कठोरता को हटाना जो मसीह ने कहा (मत्ती 19:8) और संस्कार द्वारा, वास्तविक व सत्य विवाह की एकता के रहस्य मसीह की उसकी कलीसिया के साथ सम्मिलित है, जो वास्तविक जिम्मेदारी प्रेम के साथ जीने की देता है। किसी और तरीके से कलीसिया नहीं पहचान सकती दो बपतिस्मा प्राप्त व्यक्ति विवाह की समानता व गर्व को अपने जीवन में मसीह में नयी सृष्टि हैं यदि वे विवाह संस्कार द्वारा एक नहीं हैं।

गैर मसीही के विवाह की वैधता-

मसीह के अनुग्रह की महानता है कि वह सभी लोगों के लिए है, यहां तक कि वे जो कलीसिया के बाहर हैं, क्योंकि परमेश्वर सभी को बचाना चाहता है। सभी मानवीय वैवाहिक प्रेम व मजबूती विवाह में रचित स्वभाव है ‘जैसे कि यह आरम्भ में है’। वे पुरुष व स्त्री जिन्होंने सुसमाचार का संदेश नहीं सुना है और वे एक वैध विवाह में मानवीय वाचा द्वारा एक हो गए हैं। यह वैध विवाह बिना अधिकृत अच्छाई व मूल्यों के बिना नहीं है, जो इसके स्थायित्व को सुनिश्चित करता है। ये चीजें जिनके बारे में पत्नियां जागरुक नहीं हैं, सृष्टिकर्ता परमेश्वर से आती हैं कई तरीके से वैवाहिक प्रेम मसीह को उसकी कलीसिया से एक करता है।

मसीहियों की एकता जो उनके बपतिस्में की आवश्यकता के लिए सावधान नहीं रहते।-

कुछ लोग यह विश्वास करते हैं कि वे बिना संस्कार के विवाह कर सकते हैं। परन्तु वे वैध विवाहनहीं कर सकते क्योंकि बिना विश्वास के कि चर्च की शुभकामनाएं क्या हैं। ऐसे विवाह कलीसिया द्वारा नहीं पहचाने जा सकते हैं। बिना बपतिस्मा प्राप्त व्यक्तियों के विवाह संस्कार स्वाभाविक नहीं है। स्वाभाविक विवाह एक संस्कार के लिए है।

प्रगतिशील विवाह-

यह गलत और बहुत ही खतरनाक है मसीही समुदाय के साथ परिचय कराने के लिए जोड़े को अनुमति देना कि वे विवाह समारोह का सफलता से उत्सव मनाएं विभिन्न स्तर पर, यहां तक कि वे जुड़े हैं कि एक याजक व धर्मसेवक सहायता करे अथवा प्रार्थना करे गैर संस्कारित विवाह में जैसा बपतिस्मा प्राप्त व्यक्ति उत्सव मनाते हैं।

नागरिक विवाह-

राज्य विवाह के व परिवार के कानून बनाते हैं। सामान्यतः इनके अर्न्तगत किया गया विवाह नागरिक विवाह कहलाता है। गैर मसीहियों के लिए यह संस्कारित विवाह माना जाता है।

Creation Autonomous Academy

4-विवाह की अविच्छेद्यता-

सिद्धान्त-

प्राचीन कलीसियाओं की परम्परा मसीह व प्रेरितों की शिक्षा पर आधारित है, जो विवाह की अविच्छेद्यता को प्रमाणित करती है यहां तक कि व्यभिचार के मामलों में। यह सिद्धान्त कई खण्ड लागू करता है जिनका अनुवाद करना कठिन है।

कलीसिया का सिद्धान्त-

विवाह के बंधन को व्यभिचार के द्वारा नहीं तोड़ा जा सकता है।

अध्याय-2

पति-पत्नी के सम्बन्ध को समझना

आत्मिक सम्बन्ध-

यदि एक जोड़ा आवश्यक कदमों को लेता है, एक दूसरे की भावनाओं को व समझता व आदर देता है, वे अपना जीवन पूर्ण रुप से जीने के लिए सक्षम होंगे। वे एक दूसरे की गलतियों व कमजोरियों को क्षमा करेंगे और भूलेंगे। विवाहित जीवन सीखने का एक बहुत बडा क्षेत्र है।

एक सही सम्बन्ध-

- एक सही सम्बन्ध विकसित हो सकता है यदि पति व पत्नी के बीच सही समझ हो।
- प्रेम, निकटता, देखभाल और सर्मपण जितना सम्भव हो सके आवश्यक है।
- बीते दिनों का अनुभव न करें।

जोड़े में प्रेम के लिए आवश्यक है।-

- सोच व प्रेम के साथ सुनें
- धैर्य व क्षमा विकसित करें
- टपने सहभागी की कमजोरियों को दूसरों सामने न बताएं।
- छोटी-2 बातों पर अलग न हो बल्कि अपनाने वाले बनें।

पति-पत्नी के अच्छे सम्बन्ध के लिए सलाह

1-तानाशाह न बनें।
2-निर्णय लेने की प्रक्रिया में सहभागी बनें।
3-भावनात्मक न बनें
4-अपने शब्दों में सावधान रहें
5-प्रेम दिखाएं
6-अपनी पत्नी के मित्र बनें
7-सम्मान दिखाएं
8-घर में एक दूसरे के साथ कार्य करें
9-बातचीत महत्वपूर्ण है
10-बीती समस्याओं को भूल जाएं
11-सरलता से रहें
12-अपनी पत्नी को एकान्त का समय दें।
13-अपनी गलतियों को मानें
14-शारीरिक सम्बन्ध महत्वपूर्ण है।
15-एक साथ खाना खाएं
16-अपने बातचीत के विषयों पर सावधान रहें

Creation Autonomous Academy

पति-पत्नी के सम्बन्ध को उन्नत करने के तरीके

1-एक साप्ताहिक सम्बन्ध दिनांक रखें। पिकनिक, टहलना आदि

2-महत्वपूर्ण मुद्दों पर बातचीत के पहले अपने सहभागी का ध्यान उस ओर सुनिश्चित करें।

3-छोटी चीजें दें।

4-वास्तविक शब्द कहने के पहले मैं आप से प्रेम करता हूं कहने के लिए तरीका खोजें।

5-'मैं आपसे प्रेम करता हूं' कहना

6-अपनी भावनाओं को प्रेमी, बनाने वाले तरीके से बताएं।

7-निष्पक्षता से लड़ें। समस्या का समाधान निकालें।

8-प्रेम प्रसंगयुक्त कार्य करें और आप प्रेम प्रसंगयुक्त अनुभव करेंगे।

अपने और अपनी पत्नी के बीच भिन्नता को समझना

1-भिन्न असुरक्षा का अर्थ है कि भिन्न चीजें हमें दुख पहुंचाती हैं।

2-भिन्न असुरक्षा भिन्न भावनात्मक आवश्यकताओं की ओर ले जाती है।

3-भिन्न दिमागी बनावट का अर्थ है बातचीत के भिन्न तरीके ।

4-भिन्न यौन बनावट का अर्थ है शयनकक्ष में भिन्न दृष्टिकोण।

Creation Autonomous Academy

अध्याय-3

पति-पत्नी की भूमिका एवं जिम्मेदारियां

विवाह में पति की भूमिका

एक पुरुष,एक पति, और एक पिता के लिए वचन हमें एक स्पष्ट नमूना देता है। इस नमूने को 'दास अगुवा' के नाम से जाना जाता है। मैं आशा करता हूं कि जो नमूना मैं आपको बताना चाहता हूं आपको बाइबल आधारित एक पति की भूमिका को पहले की अपेक्षा अधिक स्पष्टता से समझने में आपकी सहायता करेगा। जब इसे सही तरीके से अनुवादित व लागू किया जाता है, यह मात्र पति और पत्नी की स्वतंत्रता का विचार नहीं है, लेकिन यह आपकी आपके विवाह में अर्न्तविरोधों के समय में एक टीम के रुप में अच्छा कार्य करने में आपकी सहायता करेगा।

1-एक अगुवा बनें।-

वचन एक विवाह के लिए स्पष्ट सांगठनिक ढांचा प्रदान करता है। उदाहरण के लिए: परन्तु मैं चाहता हूं कि तुम यह जान लो कि प्रत्येक पुरुष का सिर मसीह है और प्रत्येक स्त्री का सिर पुरुष है और मसीह का सिर परमेश्वर है।-1 कुरि० 11:3

हे पत्नियों अपने-अपने पति के ऐसे अधीन रहो जैसे कि प्रभु के अधीन हो। क्योंकि पति तो पत्नी का सिर है, जिस प्रकार मसीह भी कलीसिया का सिर है और स्वयं देह का उद्धारकर्ता है। पर जैसे कलीसिया मसीह के अधीन है, वैसे ही पत्नियां भी हर बात में अपने-अपने पति के अधीन रहें।-इफि० 5:22-24

हे पतियों अपनी-अपनी पत्नी से प्रेम करो जैसा मसीह ने भी कलीसिया से प्रेम किया और अपने आपको उसके लिए दे दिया कि उसको वचन के द्वारा जल के स्नान से शुद्ध करके पवित्र बनाए, और उसे एक ऐसी महिमायुक्त कलीसिया बनाकर प्रस्तुत करे, जिसमें न कलंक, न झुर्री, न इनके समान कुछ हो, वरन् पवित्र और निर्दोष हो। इसी प्रकार उचित है कि पति भी अपनी पत्नी से अपनी दे हके समान प्रेम करे। जो अपनी पत्नी से प्रेम करता है वह स्वयं अपने आप से प्रेम करता है। कोई अपनी देह से घृणा नहीं करता, वरन् उसका पालन-पोषण करता है, जैसे कि मसीह भी कलीसिया का पालन-पोषण करता है, क्योंकि हम उसकी दे हके अंग हैं।-इफि० 25-30

सिर का यह अर्थ नहीं है कि स्त्री नीचे है, जहां एक पुरुष एक स्त्री पर दबाव बनाता व चाहता है कि स्त्री उसके प्रत्येक आज्ञा के प्रति आज्ञाकारी रहे। परमेश्वर स्त्री को द्वितीय स्तर के नागरिक के रुप में नहीं देखता है। उसका वचन स्पष्टता से बताता है कि हम सब उसके समान बच्चे हैं और समान मूल्य व समान धन हैं। जैसे कि गलातियों 3:28 हमें बताता है, 'अब न कोई यहूदी है और न यूनानी, न दास है और न स्वतंत्र, न पुरुष है और न स्त्री, क्योंकि तुम सब मसीह यीशु में एक हो।' गलातियों 3:28

Creation Autonomous Academy

पति जो संदेश नहीं प्राप्त करता-

नए नियम की शिक्षा स्पष्ट करती है कि स्त्री को आदर दिया जाए और पुरुष के समान समझा जाए। कई पति यह संदेश नहीं पाए हैं। वे पत्नी की नीचे करते हैं अथवा असंवेदनशील हैं और शोषण करते हैं। पुरुष परमेश्वर द्वारा बनाया गया है। जब परमेश्वर ने अदन के बगीचे में आदम के लिए हव्वा को प्रस्तुत किया, परमेश्वर के लिए और अपने लिए आदम ने उसे एक महान वरदान के रुप में प्राप्त किया। जब पति, विशेष रुप से मसीही पति अपनी पत्नी को परमेश्वर से प्राप्त वरदान व सहायक के रुप में नहीं लेता, वे पत्नियां एक व्यक्ति के रुप में मूल्य पाने के लिए परमेश्वर की इच्छा के बाहर रास्ते खोजती है।

क्या आप एक अगुवा हैं? वह मनुष्य जो स्वाभाविक अगुवा है उनको इस प्रश्न का उत्तर हां में देने में कोई कष्ट नहीं होगा। वे जानते हैं कैसे लेना, नियंत्रण करना, मार्गदर्शन करना और चीजों को पूरा करना है। कुछ पुरुष मजबूत नहीं हैं अथवा स्वाभाविक अगुवे नहीं हैं। कैसे वे घर में अगुवाई करेंगे?

एक उत्तरदायित्व का पद-

पौलुस सभी को समान रुप से कहता है। परमेश्वर ने पति को उत्तरदायित्व के पद पर रखा है। इसका कोई मतलब नहीं है कि पुरुष के पास किस प्रकार का व्यक्तित्व है। आपकी पत्नी आपसे लड़ती और आपको अगुवाई करने के लिए आश्चय में डालती है पर इसमें कोई अन्तर नहीं आता। मैं विश्वास करता हूं कि हमारी पत्नियां चाहती हैं और अगुवाई के लिए उन्हें हमारी आवश्यकता है। आप इस मांग के पद के विरुद्ध नहीं हैं, परमेश्वर ने आपको वहां रखा है। आप उसकी सिद्धता से अगुवाई नहीं करेंगे, लेकिन आप अपने पत्नी व परिवार संरक्षण के साथ सेवा करने के द्वारा देखभाल करें।

वचन पति के लिए एक विवाह में अगुवाई की अपेक्षा अधिक है। उसी खण्ड में आप उस प्रकार की अगुवाई का एक नमूना देने के लिए पढ़ें। प्रेरित पौलुस कहते हैं पति पत्नी का सिर है जैसे मसीह कलीसिया का सिर है। यह तुलना पति की मसीह के साथ अर्थ को प्रकाशित करता है कि कैसे एक पुरुष अपनी पत्नी का सिर बन सकता है। वह इस प्रकार उसका सिर है कि उसके कल्याण में रुचि रखे। वह उसका रक्षक है, उसका तरीका मसीह है, जो कलीसिया का सिर है इसलिए वह उसका उद्धारकर्ता है।

2-बिना शर्त अपनी पत्नी से प्रेम करें।-

इफि० 5:25 पतियों अपनी पत्नियों से प्रेम करो, जैसे मसीह ने कलीसिया से प्रेम किया और स्वयं को उसके लिए दे दिया। आपका अपनी पत्नी की बिनाशर्त स्वीकार्यता उसके कार्य करने पर आधारित नहीं है, लेकिन उसका धन जैसे आपके लिए परमेश्वर का वरदान है। यदि आप अपनी पत्नी को बिनाशर्त प्रेम करना चाहते हैं, सभी समय आप सुनिश्चित करें कि उसका भावनात्मक भण्डार भरा रहे। एक तरीका है कि आप उसे स्वीकार करें। उसे मौखिक रुप से बताएं कि आप उसकी कीमत करते हैं, आदर करते हैं, और प्रेम करते हैं।

शब्द प्रेम को प्रकट करते हैं इसमें कोई प्रश्न नहीं है, लेकिन कार्यों द्वारा भी प्रेम करें। आप को दोनों को करने की आवश्यकता है। जैसा कि प्रेरित यूहन्ना ने अपने एक पत्री में लिखा है,' हम कथन अथवा जीभ से नहीं, वरन् कार्य तथा सत्य द्वारा भी प्रेम करें। 1 यूहन्ना 3:18

घर में पुरुष की अगुवाई में एक बलिदान पूर्ण कार्य करना है। पिछले समय आपने अपनी पत्नी के लिए कब कुछ दिया जिसका आपके लिए आवश्यक मूल्य था, आपका खेल, एक मछली पकड़ने की यात्रा, आपका शौक? कभी कभी आवश्यक है कि जिसमें आप को आनन्द होता वह आप दें जिससे कि आपकी पत्नी को एक छुट्टी मिले और उसके लिए आपका प्रेम दिखे।

Creation Autonomous Academy

3-अपनी पत्नी की सेवा करें।-

नए नियम के अनुसार, पत्नी का सिर होने का यह अर्थ नहीं है कि आप अपनी पत्नी के मालिक बनें, लेकिन उसके सेवक बनें। पुनः इस प्रकार की अगुवाई के लिए मसीह हमारा नमूना है। यीशु केवल सेवा के विषय में बात ही नहीं करता, जब उसने अपने चेलों के पैर धोए उसने इसे दिखाया। (यूहन्ना 13:1-7) मसीह कलीसिया का सिर, एक दास के स्वभाव को लिया वह मनुष्य के समान हो गया। (फिलि० 2:7)

एक सबसे अच्छा तरीका है अपनी पत्नी की सेवा करने का कि उसकी आवश्यकता को समझें व उसको पूरा करें। क्या आप जानते हैं कि आपकी पत्नी की मुख्य तीन आवश्यकताएं अभी क्या हैं? यदि वह एक युवा मां है, उसके पास आधारभूत आवश्यकताओं का कई सेट है। यदि आपके बच्चे बड़े हो गए और चले गए और आप खालीपन में हैं, आपकी पत्नी के पास भिन्न आवश्यकताओं का सेट है जिसे आप पूरा करने का प्रयत्न करें। क्या वह किसी चीज के विषय में चिंतित है? उसको क्या कष्ट हैं? किस प्रकार का दबाव वह अनुभव करती है? इस प्रकार के प्रश्नों का उत्तर देना सीखें और तब उसकी चिंताओं, उसके कष्टों और उसके दबावओं को दूर करने के लिए आप क्या कर सकते हैं उसे करें।

आप अपनी पत्नी की आशाओं और स्वप्नों विषय में क्या जानते हैं? वह बहुत सारे हैं-आप जानते हैं वह क्या हैं? क्या आप उसके वरदानों को विकसित कर रहे हैं? यदि उसको सजावट की आदत है, क्या आप उसको विकसित कर रहे हैं।

उपलध कराना-

दूसरा तरीका है अपनी पत्नी की सेवा करने का उसके लिए उपलब्ध कराएं। यह प्रयोजन पहले परिवार की भौतिक आवश्यकताओं को पूरा करने की जिम्मेदारी से जुड़ा है। पौलुस 1 तीमु० 5:8 में कहता है,'परन्तु यदि कोई अपने लोगों की, और विशेषकर अपने परिवार की , देखभाल नहीं करता तो वह अपने विश्वास से मुकर गया है और एक अविश्वासी से भी निकृष्ट है।

अपनी पत्नी के लिए उपलब्ध कराने का यह भी अर्थ है कि आत्मिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए पहलकदमी लेने में उसकी सहायता करना। आप इसे ईश्वरीय चरित्र का नमूना देकर करें, उसके साथ प्रार्थना करने के द्वारा, परमेश्वर के वचन में एक साथ समय व्यतीत करने के द्वारा और उसे आत्मिक रुप से उत्साहित करने के लिए तरीके देखनें के द्वारा करें।

एक अगुवा, एक प्रेमी और एक दास बनने के लिए अपने जीवन को जिएं जो वरदान परमेश्वर ने आपको-आपकी पत्नी दिया है। आप अपना जीवन उसके लिए दें, न्याय सिंहासन से यीशु कहेगा,'शाबास मेरे अच्छे विश्वासयोग्य दास।'

विवाह में पत्नी की भूमिका

महिलाओं को स्पष्ट रुप से समझने की आवश्यकता कि कैसे वे अपने पतियों से सम्बन्ध रखें। हमारे लिए यह स्पष्टता से देखना आवश्यक है कि बाइबल इस विषय में क्या कहती है। एक पत्नी के रुप में परमेश्वर ने अनोखी जिम्मेदारी दिया है।

Creation Autonomous Academy

1-अपने पति की सहायक बनें।-

क्यों हम सबको दूसरों के लिए सहायक बनने के लिए बुलाया गया है, बाइबल इस जिम्मेदारी के विशेष अभ्यास के स्थान में पत्नियों को रखा है।उत्पत्ति की पुस्तक हमें बताती है कि परमेश्वर ने महसूस किया कि पुरुष के लिए अकेला रहना अच्छा नहीं है, तब उसने 'उसके लिए एक उपयुक्त सहायक' बनाने का निर्णय लिया। (उत्पत्ति 2:18)

सहायक शब्द जो यहां उपयोग किया गया है उसका इबानी अर्थ परमेश्वर के लिए उपयोग किया जाता है कि केवल परमेश्वर है जो सहायक है। ठीक वही शब्द एक पत्नी के लिए उपयोग किया गया है जो यह साबित करता है कि स्त्रियों को यह अद्‌भुत शक्ति अपने पतियों के जीवन में भलाई के लिए दी गयी है। परमेश्वर ने पत्नियों को अपने पतियों की सहायता के लिए बनाया कि जैसा परमेश्वर ने उनको बनने के लिए बनाया वे वैसे बनें।

2-अपने पति का आदर करें।-

इफि० 5:33 में पौलुस कहता है,‘पत्नी अवश्य अपने पति का आदर करे।’ जब आप अपने पतियों को आदर देंगी आप उस पर श्रृद्धा रखेंगी, उसे देखेंगी, आदर करेंगी, पसन्द करेंगी और उसका सम्मान करेंगी। इसका अर्थ है उसके विचार को महत्व देंगी, उसके बुद्धि और चरित्र को निहारेंगी, अपने लिए उसके सर्मपण की सराहना करेंगीऔर उसके आवश्यकताओं और मूल्यों पर विचार करेंगी।

पतियों के पास कई आवश्यकताएं हैं।

- एक पुरुष के रुप में उसके व्यक्तित्व में आत्मविश्वास
- उसको सुनने वाली बनें
- साहचर्य
- आवश्यकतामंद बनें

इन आवश्यकताओं को पूरा करना अपने पति का आदर करना इन सबके विषय में है। उसके नम्बर एक के मित्र बनें। प्रत्येक पति अपनी पत्नी से चाहता है कि वह उसकी टीम में हो, जब आवश्यक हो उसे सिखाने के लिए, लेकिन हममें से प्रमुख उसके प्रशंसक बनें। एक पति को एक पत्नी की आवश्यकता है जो उसके पीछे हो, उसमें विश्वास करे, उसका सम्मान करे, और उसकी प्रशंसा करें संसार में प्रतिदिन।

3-अपने पति से प्रेम करें।-

तीतुस 2:4 में पत्नियों के लिए बुलाहट है,‘अपने पतियों को प्रेम करें।’ एक अच्छी परिभाषा है कि किस प्रकार के प्रेम की आपके पति को आवश्यकता है ‘बिनाशर्त स्वीकार्यता’। दूसरे शब्दों में अपने पति को वैसे ही स्वीकार करो जैसा वह है-एक अपूर्ण व्यक्ति के रुप में।

प्रेम का अर्थ है एक आपसी यौन सम्बन्ध को पूरा करने के लिए सर्मपण। हम महसूस करते हैं कि यौन की अपेक्षा प्रेम के लिए बहुत कुछ है, लेकिन हम देख रहे हैं कि कैसे हम अपने पतियों को प्रेम करने के परमेश्वर की आज्ञा को पूरा कर सकते हैं। इसलिए हम प्रेम को उनके दृष्टिकोण से देखें न कि अपने दृष्टिकोण से देखें। सर्वे दिखाता है कि यौन एक पुरुष की एक प्रमुख महत्वपूर्ण आवश्यकता है-यदि प्रमुख महत्वपूर्ण नहीं। जब एक पत्नी आत्मीयता विरुद्ध जाती है, अरुचिकर है, अथवा मात्र निष्क्रिय रुचि है, उसका पति इनकार का अनुभव करेगा। यह उसके स्वरुप में कटौती करेगा, उसे रुलाएगा जो उसके केन्द्र में है, और अलगाव लाएगा।

मेरे पति की यौन आवश्यकता अधिक महत्वपूर्ण और उच्च होगी मेरी प्राथमिकताओं की सूची की अपेक्षा जैसे कि घरेलू कार्य, प्रोजेक्ट्स, क्रियाकलाप, और यहां तक कि बच्चे। इसका यह अर्थ नहीं है कि मैं प्रतिदिन और पूरे दिन यौन के विषय में ही सोचती रहूंगी, लेकिन इसका यह अर्थ है कि में अपने पति की आवश्यकताओं को याद रखने के लिए तरीके खोजूंगी।

4-अपने पति की अगुवाई के लिए अपने आपको समर्पित करें।-

सर्मपण शब्द शामिल करते ही कई महिलाएं नाराज हो जाती हैं। वे सोचती हैं कि उनकी पहचान खो जाएगी। वे सोचती हैं कि सर्मपण उन्हें उनका उपयोग किए जाने तथा शोषण किए जाने की तरफ ले जाएगा। दूसरी तरफ यह गलत विचार है कि सर्मपण का अर्थ है अंधीआज्ञाकारिता जो महिलाओं का भाग है। वे अपने पति से कुछ कह नहीं सकती, कोइ प्रश्न नहीं कर सकतीं, वे केवल आज्ञाकारी बनकर फल ला सकती हैं और गर्भ धारण कर सकती हैं। परमेश्वर के मस्तिष्क में क्या है? यहां एक कंजी खण्ड है वचन में:

हे पत्नियों अपने-अपने पति के ऐसे अधीन रहो जैसे कि प्रभु के अधीन हो। क्योंकि पति तो पत्नी का सिर है, जिस प्रकार मसीह भी कलीसिया का सिर है और स्वयं देह का उद्धारकर्ता है। पर जैसे कलीसिया मसीह के अधीन है, वैसे ही पत्नियां भी हर बात में अपने-अपने पति के अधीन रहें। हे पतियों अपनी-अपनी पत्नी से प्रेम करो जैसा मसीह ने भी कलीसिया से प्रेम किया और अपने आपको उसके लिए दे दिया कि उसको वचन के द्वारा जल के स्नान से शुद्ध करके पवित्र बनाए, और उसे एक ऐसी महिमायुक्त कलीसिया बनाकर प्रस्तुत करे, जिसमें न कलंक, न झुर्री, न इनके समान कुछ हो, वरन् पवित्र और निर्दोष हो। इसी प्रकार उचित है कि पति भी अपनी पत्नी से अपनी दे हके समान प्रेम करे। जो अपनी पत्नी से प्रेम करता है वह स्वयं अपने आप से प्रेम करता है। कोई अपनी देह से घृणा नहीं करता, वरन् उसका पालन-पोषण करता है, जैसे कि मसीह भी कलीसिया का पालन-पोषण करता है, क्योंकि हम उसकी दे हके अंग हैं।-इफि० 5:22-30

पति-पत्नी की जिम्मेदारियां

पति-पत्नी की जिम्मेदारियां क्या हैं?-

- सबसे पहले स्त्री के समान पुरुष अपने माता-पिता और बहन-भाइयों को विवाह के बाद छोड़ेगा।
- ये दो आत्माएं एक साथ होंगी एक समूह में जिसे परिवार कहा जाता है।
- अपनी पत्नी के साथ रहने के लिए और एक नया जीवन आरम्भ करने के लिए तैयार रहें, किसी की सहायता व सर्मथन के बिना।यह समय मानव को जिम्मेदारी देता है।
- पतिः
    - परिवार को आर्थिक रुप से मजबूत बनाएं।
    - परिवार को चलाने के लिए आधारभूत आवश्यकताओं को पूरा करें।
    - सभी सम्भव समयों में अपनी पत्नी की सहायता करें।
- पत्नीः
    - अपने घर के कल्याण की देखभाल करें।
    - यह सुनिश्चित करें कि परिवार एक दिन में तीन बार भोजन खाए।
    - अपने पति को अकेले दुख उठाने की अनुमति न दें।
- पति-पत्नीः
    - अपने सहभागी के बीच उच्च विकसित समझ की मजबूत बूनियाद डालें।
    - बिनाशर्त प्रेम को दिखाना
    - पति समान भाग ले बच्चों को खड़ा करने की भूमिका में
    - किसी भी परिस्थिति में अपनी पत्नी से बुरा व्यवहार न करें, उसे बुरा अनुभव न कराएं, उससे घृणा न करें।
    - एक पति के रुप में एक उचित भाग अपने वेतन का अपनी पत्नी के लिए प्रत्येक माह अलग करें। (यदि पत्नी पूर्णकालिक गृहणी है तो।)
    - वह एक है जो आपके बच्चों को स्वस्थ वातावरण प्रदान करने के लिए कठिन मेहनत करेगी।
    - अपने पत्नी के कार्य में हाथ बंटाएं, भोजन पकाने में भाग लें, सफाई अथवा धोने में, जो भी आपके लिए सम्भव हो।
    - उसके प्रतिदिन के कार्य में उसे गर्व महसूस कराएं।

Creation Autonomous Academy

- यदि वह कम्पनी या कार्यालय में कार्य करती है तो घर लौटने पर घरेलू कार्यों में सहायता करें।
- यह सुनिश्चित करें की आपकी पत्नी स्वस्थ रहे और तनाव का अनुभव न करे अथवा कार्य के दौरान दर्द न महसूस करे।
- पत्नियां आप सुनिश्चित करें नियमित बाहर जाने व पुनः रचना के बजाए पति के लिए पर्याप्त स्थान दें।
- यह सुनिश्चित करें कि आपका पति आर्थिक रुप से मजबूत रहे, यदि आपकी तरफ से सहायता या सलाह नहीं दी जा रही है।
- कठिन परिस्थितियों का हल निकालने में उसकी सहायता करें जो व्यवसायिक कठिनाईयों अथवा अन्य कारणों से खड़ी होंगी।

- **पिता और बच्चेः**
  - शिक्षित करना, केवल पिता ज्ञान को बच्चों के अन्दर मन में रोप सकता है।
  - बच्चों को सही आधारभूत स्कूली शिक्षा के लिए स्कूल भेजना
  - यह सुनिश्चित करें कि बच्चे रहने के क्षेत्र में वातावरण का आनन्द ले सकें।
  - बच्चों के क्रिया कलाप व शैक्षिक प्रगति को सचेत व शांति से देखें।
  - बच्चों के साथ खाली समय बिताएं और यह सुनिश्चित करें किवे अच्छा अनुभव करें।
  - बच्चों विचारों, धैर्य, शौक, जीवन के उद्देश्य व शिक्षा पर बातचीत करें।
  - बच्चों की शाम के अध्ययन व गृहकार्य में सहायता करें।
  - स्कूल ले जाएं व ले आएं
  - सप्ताह के अन्त में अपने परिवार को बाहर ले जाएं रात के भोजन या मूवी हेतु और परिवार के साथ समय व्यतीत करें।
  - यदि आपका पुत्र चाहता है कि जीवन के प्रत्येक स्तर पर उसके लिए आप व्याख्या करें तो आप अपने अनुभव को उसके सामने रखें जिससे वह सीखेगा।
- **मां और बच्चेः**
  - आरम्भिक स्तर पर बच्चों का बढ़ना जैसे भोजन खिलाना, सुलाना, विशेष देखभाल करना
  - बचपन में बच्चों को प्रेम की आवश्यकता होती है जो उसे मां दे सकती है।
  - बच्चों की सामान्य आवश्यकताओं और स्वास्थ्य की पूर्ण देखभाल
  - गृहकार्य में उनकी सहायता करना
  - लड़कियों की विशेष देखभाल करना जिन्हें विवाह तक मार्गदर्शन की आवश्यकता होती है।

Creation Autonomous Academy

पत्नी की जिम्मेदारियांः

- अपनी भावनाएं और आवश्यकताओं को प्रभावी रुप से प्रकट करना।
- पुरुष का मन तक उसके पेट के रास्ते जाना।
- अपने जीवन में यौन का कार्यक्रम बनाएं।
- अपने पति से मुद्दे पर बात करने के लिए समझदार बनें।
- अपने पति को बदलने का प्रयाश न करें।
- अपनी आवश्यकताओं से समझौता किए बिना अपने पति की आवश्यकताओं को पूरा करें।
- अपने पति की सबसे अच्छी मित्र बनें।

- घर और बच्चों की आवश्यकता
- भावनात्मक मजबूती और परिपक्वता

पति की जिम्मेदारियां:

१-घरेलू जिम्मेदारियों पर अपनी पत्नी से बातचीत करें। उनका उचित वितरण करें।
२-पमुख वित्तीय बातचीत में पत्नी की राय लें।
३-अपने पत्नी के साथ सर्मपण का अनुशरण करे।
४-अपनी पत्नी के व्यक्तिगत रुचि के लिए समय दे।
५-अपनी पत्नी के बारे में क्या पसन्द करता है उसे बताए।
६-लोगों के बीच अपनी पत्नी का सम्मान करे।
७-अपनी पत्नी को व्यक्तिगत उन्नति के लिए उत्साहित करे।

Creation Autonomous Academy

अध्याय-4
मसीही पालन-पोषण की अनिवार्यताएं।

भक्त बच्चे अभक्तिपूर्ण संस्कृति में हैं।

1-कैसे हमारी संस्कृति हमारे बच्चों के पालन-पोषण को प्रभावित करती है?

हम हमारे संसार में गवाही दे रहे हैं, न्यायियों की पुस्तक के दिनों में क्या स्थान लिया। उन दिनों में इस्राएलियों का कोई राजा न था, प्रत्येक वही करता था जो उसकी दृष्टि में अच्छा लगता था। (न्यायियों 17:6) बहुत से माता-पिता प्रभु से वापस लौट गए, वे अपनी स्वयं की रुचि व स्वार्थ पूर्ण आवश्यकताओं की सेवा कर रहे हैं। वे अपने स्वयं के बच्चों की जिम्मेदारी नहीं लेना चाहते हैं। जैसे भी हो बाइबल कलीसियाओं या सरकारों को कभी निर्देश नहीं देती कि वे खड़े हों बच्चों की सुरक्षा करें, बच्चों को प्रशिक्षित करें। परमेश्वर ने विशेष रुप से माता-पिता को जिम्मेदारी दिया है कि वे अपने बच्चों को पालन-पोषण करें, मार्गदर्शन करें, शिक्षा दें, प्रशिक्षित करें, और अनुशासित करें। प्रभु ने अन्दर दिशानिर्देश भी दिया है कि कैसे बच्चों को खड़ा किया जाए। माता-पिता यह घोषणा करते हैं कि वे मसीही हैं, लेकिन यदि वे प्रभु यीशु मसीह के प्रभुत्व के अधीन अपने को समर्पित नहीं करते तो वे भ्रम व विकृति से अपने घरों को भरते हैं। मात्र जब आप अपने जीवन व अपने घर का प्रभु यीशु मसीह को बनाते हैं तभी आप भक्त माता-पिता बनते हैं औा भक्त बच्चों को खड़ करते हैं।

2-अभक्तिपूर्ण संस्कृति में मैं अपने बच्चों की तेजी से खड़ा होने में कैसे सहायता कर सकता हूं?

बच्चों, तुम परमेश्वर से हो और तुम उन पर विजयी हुए हो, क्योंकि वह जो तुममें है, उससे जो संसार में है कहीं बढ़कर है। (1 यूहन्ना 4:4) यूहन्ना का उद्धरण हाथ पर युद्ध की वास्तविकता को दिखाता है। **विशेष रुप से जब आपके बच्चे बड़े हो रहे हैं, वे आमने-सामने दबाओं और प्रभावों का अपने चारों तरफ सामना करेंगे।** इसे अनदेखा करना झूंठा होगा। यूहन्ना की तरह उन्हें याद दिलाना होगा कि प्रभु में वे कौन हैं और महान विजय में कि वहां उनमें प्रभु की सामर्थ्य निवास कर रही है। उन्हें अनुग्रह प्रदान करें और असफलता के समय में उनकी सहायता करें, लेकिन परमेश्वर की अद्भुत सामर्थ्य जो उन्हें बाहर आने के योग्य बनाएगी उसके बारे में बताएं।

3-विशेष रुप से जब आपके बच्चे बड़े हो रहे हैं, वे आमने-सामने दबाओं और प्रभावों का अपने चारों तरफ सामना करेंगे।

Creation Autonomous Academy

एक बच्चे को उस मार्ग की शिक्षा दें जिस मार्ग से उसे जाना है, और जब वह बड़ा होगा वह इसे नहीं छोड़ेगा। परमेश्वर ने माता-पिता को एक प्रतिज्ञा दिया हैः यदि तुम अपने बच्चों की जिम्मेदारी लेते हो और उन्हें परमेश्वर का वचन सिखाते हो-कैसे एक धार्मिकता का जीवन जीना है परमेश्वर को प्रेम करने और दूसरों को अपने समान प्रेम करने के द्वारा-वे बच्चे परेश्वर के मार्ग को नहीं छोड़ेंगे। आपके बच्चे अपनी स्वयं की एक इच्छा रखते हैं और आप दबाव से परमेश्वर को उनके गले में नहीं उतार सकते-लेकिन यदि आप अपने बच्चों को परमेश्वर के रास्ते पर खड़ा करने के प्रति ईमानदार हैं, और अपने घर में एक उदाहरण हैं, वे याद करेंगे और जीवन में बाद में वापस लौटकर आएंगे। आप अपने बच्चों को पाप के मार्ग से बचने की शिक्षा दें। (नीति० 1:10-15) मात्र उन्हें दर्शन न दें-उन्हें सिखाएं। परमेश्वर का वचन उन्हें बुद्धि की शिक्षा देगा। याद रखें परमेश्वर का वचन कभी खाली वापस नहीं लौटेगा। (यशा० 55:11) पवित्र आत्मा उन्हें याद दिलाएगा कि उन्होंने क्या सीखा था और उनमें कायलता लाएगा।

4-कैसे मैं अपने बच्चों को अच्छे के लिए प्रभावित कर सकता हूं?

बच्चे शाब्दिक रुप से आपके उदाहरण द्वारा सीखेंगे। इसलिए अपने स्वयं के पाप को बहाना न बनाएं, इसे महसूस अथवा अनदेखा करें। यदि आप झूंठे हैं तो वे भी झूंठे होंगे। यदि आप घृणा करने वाले हैं तो वे भी घृणा करने वाले बनेंगे। यदि आप आलसी हैं, अथवा बेईमान अथवा अन्य कोई नकारात्मक व्यवहारों की सूची, वे आपकी अगुवाई का अनुशरण करेंगे। हमने पाया है कि जवान बच्चे सभी जगह भक्ति के प्रभावों का खुले रुप से प्रतिउत्तर देते हैं। वे प्रार्थना करने के लिए, बाइबल की कहानियों को सुनने के लिए और प्रभु यीशु के विषय में गीत गाने के लिए अपेक्षा से अधिक है। जब माता-पिता इन क्रियाकलापों के लिए सचेत रुप से समय निर्धारित करेंगे, मैं विश्वास करता हूं कि यह समान आत्मिक जागरुकता लाएगा, और बच्चों को पवित्र आत्मा के प्रभावों के प्रति अधिक संवेदनशील बनाएगा। बच्चे आपके विवाहित जीवन में जो अवलोकन करते हैं उसके द्वारा विशेष रुप से प्रभावित होते हैं। जो बाइबल में उल्लिखित विवाह की रुपरेखा है उसके अनुसार उस प्रकार का विवाहित जीवन जिएंः परमेश्वर की आज्ञा के प्रति परिपक्व प्रेम और सम्मान का जीवन जिएं। क्या आपके बच्चे आपके जीवन में यीशु की वास्तविकता को देखते हैं? यदि नहीं तो यह आरम्भ करने का समय है। अपनी असफलता को पहचानें। प्रभु से उसकी क्षमा मांगें। उससे कहें कि वह आपको रास्ता दिखाए।

बच्चे जो देखते व सुनते हैं उसकी नकल करते हैं। कई बार हमारे बच्चे हमारे तरीकों व गलत आदतों को ले लेते हैं। आप अपने बच्चे से कैसे कह सकते हैं कि वह झूंठ न बोले, जब आप झूंठ बोलते हैं? कैसे आप अपने बच्चे से कह सकते हैं कि वह न पिए, जब आप पीते हैं? एक माता-पिता के रुप में आपका कार्य अवश्य आपके शब्दों को पीछे ले जाएगा। न केवल आपके बच्चे आपके गलत व्यवहारों, कार्यों और आदतों को अपनाएंगे बल्कि वे मसीहियत के खराब उदाहरण होंगे। **क्या आप महसूस करते हैं जब आप प्रभु यीशु की शिक्षाओं के विपरीत जीवन जीते हैं, अपने बच्चे से पहले आप परमेश्वर का गलत प्रतिनिधित्व कर रहे हैं?** हम अपने बच्चों को परमेश्वर के मार्ग की प्रभावी रुप से शिक्षा नहीं दे सकते जब हम उनके विपरीत जीवन जी रहे हैं।

5-उन समयों के विषय में क्या जब मैं एक माता-पिता के रुप में असफल होता हूं?

यदि हम विश्वासघाती हों, फिर भी वह विश्वासयोग्य बना रहता है, क्योंकि वह स्वयं अपना इनकार नहीं कर सकता। (2 तीमु० 2:13) माता-पिता की आवश्यकता है कि परमेश्वर के अनुग्रह द्वारा उत्साहित हों। एक माता-पिता होने के नाते हम अपनी स्वयं की सीमाओं के विपरीत निरन्तर दौड़ें। अपनी वर्तमान क्षमताओं से बाहर आप परखे व जोड़े जाएंगे। हम अद्भुत अनुग्रह और दया के परमेश्वर को जानते व उसकी सेवा करते हैं। लम्बे समय तक माता-पिता के रुप में बनने व बढ़ने में वह प्रेमपूर्वक और सरलता से हमें पुनः स्थापित करता है व हमारी सहायता करता है। जितना सम्भव है अपने जीवन में अधिकाई से प्रवेश करने की अनुमति ऐसे प्रेमी परमेश्वर को प्रदान करें। प्रभु यीशु के लहू के द्वारा आप उसकी संतान हैं। वह निरन्तर अपनी विश्वासयोग्यता आपके लिए प्रमाणित करेगा, पहले की अपेक्षा दृढ़ बनने के लिए आपकी सहायता करेगा, माता-पिता के रुप में आप अपने परिवार व बच्चों के लिए दर्शन रखेंगे।

माता-पिता के रुप में आप परमेश्वर के प्रतिनिधि हैं। आपकी एक बड़ी जिम्मेदारी है कि आप प्रभु के वचन के प्रति आज्ञाकारी हों। आवश्यक है कि हम यीशु के जीवित उदाहरण बनें, क्योंकि हम प्रतिदिन संसार, पाप व दुष्ट से संघर्ष करते हैं। इसलिए यह बहुत ही महत्वपूर्ण है कि हम प्रतिदिन प्रभु के वचन में बने रहकर प्रभु के साथ निकटता से चलें। माता-पिता सिद्ध नहीं हैं। जब आप एक गलती करते हैं, परमेश्वर का गलत प्रनिधित्व करते हैं, अथवा एक खराब उदाहरण हैं, इसे प्रभु व अपने बच्चों से स्वीकार करें। वे अंगीकार व पश्चाताप का सही उदाहरण देखें। यह उनकी परमेश्वर के अनुग्रह को, उनके स्वयं के जीवन और विकास के सम्मानजनक वातावरण में समझने में सहायता करेगा।

Creation Autonomous Academy

6-कैसे मैं अपने बच्चे के साथ जुड़ सकता हूं?

अवश्य है कि हम अपने प्रत्येक बच्चों की संवेदनशीलता व व्यक्तित्वों को अलग करने के लिए संवेदनशील हों। अन्यथा एक के प्रति कम व दूसरों के प्रति अधिक प्रतिक्रिया देने के वास्तविक जोखिम की और दौड़ेंगे। यह प्रत्येक बच्चे को व्यक्तिगत रुप से जानने के लिए समय लगाने की मांग करता है, और तब हम कैसे उनकी आवश्यकताओं के लिए प्रतिउत्तर देने व निर्देशित करने को ले सकते हैं। माता-पिता के रुप में हमारा कार्य है कि हम अपने बच्चों को जीवन के लाभकारी मार्गों की ओर बुद्धिमानी के साथ मार्गदर्शन करें, और उन बातों से दूर रखें जो बातें उस मार्ग में बाधा उत्पन्न करती हैं, परमेश्वर की प्रतिज्ञा, मैं विश्वास करता हूं, वह कार्य कर रही है, हम अपने बच्चों कि लिए ढांचा खड़ा करें जो पश्चाताप व पुनः स्थापना को अनुमति दे यहां तक कि जब वे घरों में रहने के लिए जाएं।

क्योंकि यहोवा जिस से प्रेम करता है उसे डांटता भी है, जैसे कि पिता उस पुत्र को जिसे वह अधिक चाहता है। (नीति० 3:12) अपने बच्चों को अपना समय व उपस्थिति प्रदान करें। उनके साथ अपने आपको लगाएं। **एक पिता के रुप में एक अद्भुत अवसर व सम्मान हमारे पास है। जीवन की इन छोटी-छोटी बातों में अपने आपको दें। उनके विषय में सीखें।** उनका अध्ययन करें। जैसे आप अपने आपको उनके लिए देंगे, वह उनको बढ़ाएगा। वे उसे समझेंगे व जानेंगे। वे आपके प्रेम में सुरक्षित होंगे।

7-एक पिता की महत्वपूर्ण भूमिका क्या है?

यहां बच्चों को दो चीजें चाहिए, विशेष रुप से पिता सेः ध्यान और अनुमति। आजकल बहुत सारे पिता बहुत व्यस्त व अलग हैं, वे अपने बच्चों के जीवन में रुचि दिखाने में असफल हैं जो उनके जीवित रहने के लिए आवश्यक है। परिणाम स्वरुप बच्चे तनावग्रस्त हो रहे हैं, हताश हो रहे हैं, और वे नाराज हो रहे हैं। इफिसियो 6:4 विशेष रुप से कहता है, पिताओं, अपने बच्चों को क्रोध न दिलाओं, वरन् प्रभु की शिक्षा और अनुशासन में उनका पालन-पोषण करो। पिता अवश्य सावधान रहें बच्चों को हतोत्साहित न करेंः हे पिताओं, अपने बच्चों को क्रोध न दिलाओं, ऐसा न हो कि वे निरुत्साहित हो जाएं। (कुलुस्सियों 3:21) कभी-कभी माता-पिता आपेक्षा करने वाले अथवा असहमति वाले हो सकते हैं। अथवा वे गलत प्रकार का ध्यान दे सकते हैं-अधिक नकारात्मक और अपर्याप्त सकारात्मक। बच्चे इस बात के कायल हो जाते हैं कि उनकी स्वीकार्यता उनके कार्य करने पर आधारित है। जो वे हैं वे उससे प्रेम नहीं करते। कैसे कठिन वे प्रयास करते हैं का असम्मान, क्या यह पर्याप्त नहीं है। अपने बच्चों को अनदेखा करके हम भी उन्हें क्रोध दिला सकते हैं। अपने शब्दों की शक्ति को समझें और अपने शब्दों को अपने बच्चों को बनाने में उपयोग करें। प्रेरित पौलुस ने थिस्सलुनीकियों की कलीसिया को लिखाः तुम जानते हो कि जैसे पिता अपने बच्चों के साथ करता है, वैसे ही हम भी तुममें से प्रत्येक को उपदेश देते, प्रोत्साहित करते और आग्रहपूर्वक समझाते रहे। (1 थिस्सलुनीकियों 2:11) एक भक्त पिता अपने बच्चों को निकटता से अपने पस बुलाता है और उनसे बात करता है।

Creation Autonomous Academy

8-क्या अच्छा है गुणात्मक समय या परिमाणात्मक समय?

माता-पिता सब सही चीजें करते हैं परन्तु एक महत्वपूर्ण चीज में असफल हो जाते हैंः अपने बच्चों को अविभाजित समय व ध्यान देने में। कुछ लोग कहते हैं कि वे बच्चों को परिमाणात्मक समय नहीं देते लेकिन गुणात्मक समय। लेकिन मेरा प्रश्न यह है कि,‘आप कैसे गुणात्मक देंगे बिना परिमाणात्मक के ? **यहां कोई छोटा मार्ग नहीं है-अच्छे पालन-पोषण के लिए समय व शक्ति को लगाने की आवश्यकता है।** हमारी आवश्यकता है कि हम समय निकालें प्रत्येक बच्चे को व्यक्तिगत रुप से जानने के लिए और उनकी आवश्यकताओं को कैसे निर्देशित कर सकते व कैसे उनका प्रतिउत्तर दे सकते हैं।

9-कैसे मैं बच्चों को एक भक्तिपूर्ण तरीके से अनुशासित करुं?

बच्चों के पास अवश्य स्पष्ट परिभाषित सीमाएं हों। **घर के लिए नियम बनाएं-आपके बच्चे जानें कि ये सीमाएं प्रेम में बनायी गयी हैं, उनके सुरक्षा और देखभाल के लिए।** कुछ माता-पिता इसे क्या करें या क्या न करें के रुप में देखते हैं, परमेश्वर के अनुग्रह की अपेक्षा वैधानिकता पर आधारित। भक्त माता-पिता प्रभु के शिक्षा व मार्गदर्शन को खोजते हैं और सब कुछ नमंता, अनुग्रह और प्रेम में करते हैं। तब आपके बच्चे आपके उदाहरण को देखेंगे और वे इस बात को जानने की ओर बढ़ेंगे कि मसीहियत अनुग्रह का सुसमाचार है। बहुत से बच्चे विरोधी हो गए क्योंकि उनके घर नियमों, नियमावलियों और वैधानिकता पर आधारित थे, न कि परमेश्वर के बुद्धि, शिक्षा, अनुग्रह और प्रेम पर।

याद रखें कि आपका पिता स्वर्ग में है। उचित अनुशासन की रचना करें। हम सभी बच्चों के लिए एक ही प्रकार की विधि बनाते हैं परन्तु बच्चे एक दूसरे से भिन्न होते हैं इसलिए याद रखें कि अनुशासन का लक्ष्य लचीला हो। अनुशासन भविष्य को ध्यान में रखकर बनाएं। यह प्रेम व सम्बन्ध से आए, क्रोध व पदवी से नहीं, अपने बच्चों के साथ एक चरवाहे का सम्बन्ध बनाएं।

10-कैसे प्रार्थना एक पालन-पोषण का भाग बने?

अपने बच्चों के लिए एक महत्वपूर्ण चीज हम कर सकते हैं कि उनके लिए प्रार्थना करें। परमेश्वर प्रार्थना का उत्तर देता है। यह आवश्यक नहीं कि जैसा हम चाहते हैं वह वैसा करे। लेकिन वह हमेशा प्रतिउत्तर देता है। और शैतान जानता है इसलिए प्रार्थना करना कठिन है। शैतान डराता है कि आप अपने परिवार के जीवन के पदचिन्हों को खो देंगे। प्रार्थना में गढ़ पर विजय प्राप्त होती है। **जब माता-पिता अपने बच्चों के लिए एक साथ नियमित प्रार्थना करते हैं तब वे न केवल देखते हैं कि उनके प्रार्थनाओं का उत्तर मिला, लेकिन वे अपने बच्चों में परमेश्वर की इच्छा को पाते हैं।** बच्चों को भी प्रार्थना करने का अवसर दें।

पालन-पोषण की आवश्यकताएं-

व्यवस्था० 11:19

1-सही सिद्धान्तों में अपने आपको बढ़ाएं।

2-आपके बच्चे मसीह को देखने पाएं।

3-प्रतिदिन भिन्न तरीके से सुसमाचार प्रस्तुत करें।

4-संवेदनशील बनें वह परमेश्वर जो उन्हें बना रहा है।

5-निकट बनें।

6-संवेदनशील बनें।

Creation Autonomous Academy

7-सही करने के लिए उपलब्ध हों।

8-परमेश्वर को नियंत्रण देने के लिए आज्ञाकारी बनें।

पालन-पोषण पर बाइबल आधारित आवश्यक सिद्धान्त

1-बिना शर्त प्रेम।

2-बच्चे की सहायता। 1 तीमु० 5:8, 2 कुरि० 12:14

3-बच्चों को अच्छी तरह सिखाएं। उत्पत्ति 18:19, निर्ग० 10:2, 12:26, 13:8,14 व्यवस्था० 4:9, 6:6-9]
11:18-20 न्यायियों 2:10, नीति० 1:8, 2 तीमु० 1:5, 3:15

4-बच्चों की चेतावनी का तरीका

5-बच्चों को सिखाने का तरीकाः कायलता व्यवस्था० 4:9, 6:6-9, 11:18-20
6-बच्चों को सिखाने का तरीकाः आधारभूत अध्ययन इब्रानियों 10:25, इफि० 4:11-12
7-पालन-पोषण का अनुशासन प्रका० 3:19

बच्चों में अच्छे गुण पैदा करें।

1-स्वयं को बदलें।-

- अपनी बुरी आदतों को बदलें।
- जो आप बच्चों से चाहते हैं पहले स्वयं उसे करके दिखाएं।
- अच्छी आदतों को खुद में विकसित करें।

2-सच्चा प्यार दें।-

- बच्चों को सच्चा प्यार दें।
- बच्चों को वही दें जो उनके लिए सही व जरुरी है।

3-जिद करने पर प्यार से समझाएं।-

- बच्चों को ऐसे में डांटें नहीं।
- बच्चों को शांत तरीके से समझाएं कि वे जो कर रहे हैं गलत है।

4-परवरिश में अनुशासन जरुरी है।-

- बिना अनुशासन के परवरिश अधूरी होती है।
- बच्चों को डराएं नहीं।
- बच्चों को मारें-पीटें नहीं
- अनुशासन स्थापित करें।

5-बातचीत बहुत जरुरी है।-

- बच्चों के साथ किसी भी विषय पर खुलकर बात करें।
- बच्चों के साथ हर खुशी व दुख को बांटें।
- ऐसा करने से बच्चे आपको और घर की परिस्थितियों को समझने लगेंगे और साथ ही आपके करीब रहेंगे।

Creation Autonomous Academy

6-बच्चों को समय दें।-

- आजकल वकिंग पैरेन्ट बच्चों को पर्याप्त समय नहीं दे पाते।
- अपने बच्चों को ज्यादा से ज्यादा समय देने की कोशिश करें।

7-बच्चों से दोस्ती करें।-

- अपने बच्चों पर खुद को थोपना छोड़ें।
- बच्चों पर हुक्म न चलाएं।
- बच्चों के अच्छे दोस्त बनें।
- ऐसा करने से बच्चे आपसे आसानी से और बेझिझक अपनी सारी बात कर सकेंगे।

8-इच्छाओं को थोपें नहीं।-

- अपनी इच्छाओं को बच्चों पर थोपें नहीं बल्कि वह जो बनना चाहते हैं उनको बनने दें।
- जरुरी नहीं कि आपने अपनी जिन्दगी में जो किया आपका बच्चा भी वही करे।
- अपने बच्चे को वह करने के लिए प्रोत्साहित करें जो वह करना चाहता है।
- आप बच्चे का मार्गदर्शक बनें।

9-खुद फैसला लेने दें।-

- माता-पिता को लगता है कि बच्चे को सही-गलत का फर्क नहीं पता, इसलिए वे बच्चे को अपनी मर्जी से फैसला नहीं लेने देते हैं।
- इससे आप अपने बच्चे के निर्णय लेने की क्षमता को कमजोर करते हैं।
- यदि आप चाहते हैं कि आपका बच्चा भविष्य में अपने फैसले स्वयं लेने में सक्षम बने तो अभी से कुछ छोटे-मोटे फैसले उसे लेने दें।

10-अन्य बच्चों से तुलना न करें।-

- हर बच्चे में अपने अलग और अनोखे गुण होते हैं।
- उसकी तुलना दूसरे बच्चों से करके आप उसके आत्मविश्वास को कमजोर न करें।
- हो सकता है आपके पड़ोसी का बच्चा पढ़ाई-लिखाई में अव्वल हो और आपका बच्चा खेलकूद में।

Creation Autonomous Academy

11-बच्चों के साथ सख्ती न बरतें।-

- अपने बच्चे के साथ सख्ती न बरतें।
- प्यार से समझाएं।

12-बच्चों के बीच प्रतियोगिता न करें।-

- एक बच्चे से दूसरे बच्चे के बीच प्रतियोगिता न करें।
- प्रत्येक बच्चा भिन्न है।
- बच्चे के मनोबल को बढ़ाएं।

13-गुणवत्ता परक समय दें।-

- बच्चे को गुणवत्तापरक समय दें।
- उसे महत्वपूर्ण समय चाहिए।

14-बच्चों के साथ मनोरंजन करें।-

- अपने बच्चे के साथ स्वस्थ मनोरंजन करें।
- उसके साथ खेलें।
- उसके साथ टीवी देखें।

15-कम्युनिकेशन बढ़ाएं।-

- अपने बच्चे से बातचीत करें।
- उससे बातचीत करने के लिए समय निकालें।

16-अपने बच्चे को समझें।-

- अपने बच्चे के गुणों को समझें।
- अपने बच्चे के स्वभाव को समझें।
- अपने बच्चे की आवश्यकताओं को समझें।
- अपने बच्चे की ताकत और कमजोरियों दोनों को समझें।

अपने बच्चों का अच्छा पालन पोषण करें।-

1-अपने बच्चों के साथ खेलें-

बच्चों के साथ खेलना और उनका दोस्त बनकर रहना ही अच्छे माता-पिता का पहला कर्तव्य होता है। अपने बच्चों को उनका पसंदीदा खेल चुनने दें और उनके साथ उस खेल को खेलें। इससे आपको अपने बच्चों को समझने में आसानी होती है और बच्चों को भी एहसास होता है कि आप उनकी सही में चिंता करते हैं।

Creation Autonomous Academy

2-अपने बच्चों को ढेर सारा प्यार दें।-

बच्चों को ढेर सारा प्यार देने और उनसे लगाव रखने से ही वो खुश रहते हैं और उनका विकास अच्छे से होता है। अपने बच्चों को गले लगाने और प्यार से बातें करने से उनका मन भी शांत होता है और वे माता-पिता की बातों को अच्छे से ध्यान देते हैं।

3-माता-पिता होते हैं बच्चों के प्रेरणास्रोत-

बच्चे जो भी बोलते और करते हैं अपने माता-पिता से सीखते हैं। माता-पिता को बच्चों के सामने जो भी बोलना चाहिए सोच-समझ कर बोलना चाहिए क्योंकि इससे बच्चों के दिमाग पर बहुत असर पडता है। माता-पिता बच्चों के प्रेरणास्रोत होते हैं और बच्चे उन्ही से सब कुछ सीखते हैं। इसीलिए बच्चों के समक्ष सही, सम्मानजनक तथा अच्छा व्यवहार करना चाहिए।

4-अपने बच्चों को हमेशा सच बताना चाहिए।-

जब कभी भी बच्चे आपसे कोई भी प्रश्न पूछें उसका जितना हो सके सही उत्तर दें और सच बताएं। बच्चों का मन बहुत ही अलग प्रकार का होता है उन्हें आप जितना सही और सच बताएंगे वे भी उतना ही सच आपको और लोगों को बताएंगे पर अगर उन्हें गलत और झूठ बताया जाए तो वे भी झूठे बन जाते हैं।

5-बच्चों को अनुशासन में कैसे रखें?-

यह एक मुख्य बात है जो हर माता-पिता को ध्यान देने की आवश्यकता है। आपको एक बात हमेशा समझना होगा अनुशासन का मतलब हमेशा दण्ड या सजा नहीं होता है। बच्चों को कुछ भी गलती करने पर उन्हें सबसे पहले पास बैठाकर समझाएं और क्या गलत है क्या सही समझाएं। बच्चों को बार-बार डांटने या सजा देने से उनके मन में डर सा बैठ जाता है जो उनके मानसिक विकास में बाधा डाल सकता है।

6-अपने बच्चों को दूसरों के बच्चों से तुलना न करें।-

हर बच्चे की अपनी खूबी होती है। कभी भी किसी भी बच्चे को दूसरे बच्चों के साथ तुलना न करें क्योंकि इससे बच्चे अपनी पहचान और योग्यता से दूर होने लगते हैं। बच्चों को हमेशा प्रेरित करें और कुछ गलती हो जाने पर समझाएं कि क्या सही है और सफलता के लिए रास्ता क्या है? हर किसी बच्चे की अपनी दिलचस्पी होती है।

7-बच्चों को बच्चों की तरह मानें।-

कभी-कभी माता-पिता सोचने लगते हैं कि बच्चे बड़े हो चुके हैं और उन्हें अब ज्यादा कुछ सिखाने बताने की आवश्यकता नहीं है। या कभी-कभी सोचते हैं बच्चे बड़े होने पर भी अच्छे से सीख नहीं रहे हैं और माता-पिता उन्हें बड़े करने की जल्दबाजी में रहते हैं। याद रखें बच्चों को बच्चों की तरह ही मानें उन्हें धीरे-धीरे मजे के साथ खेलते कूदते बड़े होने दें।

8-बच्चों को हमेशा प्रोत्साहन दें।-

अगर आप बच्चों को हमेशा डर और डांटने के साथ बढ़ाएंगे तो, आप कैसे सोच सकते हैं कि वे खुशी और खुले मन के साथ बड़े होंगे। बच्चों को हमेशा प्रोत्साहन देने चाहिए ताकि वे आगे बढ़ें और निडरता के साथ हर चीज का सामना कर सकें। खुशी और प्रेमपूर्ण वातावरण रखने से बच्चे का विकास अच्छे से होता है।

Creation Autonomous Academy

9-अपने बच्चों के लिए समय निकालें।-

अपने बच्चों को अच्छे से समझने और उनके बेहतर भविष्य के लिए सबसे बड़ा काम है अपने बच्चों के लिए समय निकालना और उनके साथ प्रतिदिन कुछ वक्त बिताना। इससे आप अपने बच्चे को अच्छे से समझ सकते हैं और बच्चों को भी एहसास होता है कि उनके माता-पिता उनका ख्याल रखते हैं और उनसे प्यार करते हैं।

10-अपने गुस्से को काबू में रखें।-

बच्चों पर कभी भी गुस्सा नहीं करना चाहिए क्योंकि इससे उन पर बुरा असर पड़ता है। जब कभी भी बच्चे कोई गलती करते हैं तो उन्हें डांटने के बजाए शांति से समझाएं क्योंकि डांटने से कुछ बच्चे चिड़चिड़े, गुस्से वाले हो जाते हैं तो कुछ डर के तले दब जाते हैं।

11-बच्चों के खाना-पीना का ध्यान रखें।-

यह बहुत आवश्यक है कि बच्चे स्वच्छ और पोषक आहार खाएं। साथ ही उन्हें व्यायाम और खेलकूद में भी भाग लेना चाहिए क्योंकि इससे शरीर स्वस्थ रहता है। ध्यान दें उन्हें रात्रि के समय 6-8 घंटे अच्छे से सोने का समय मिले। उन्हें बाहर का खाना ज्यादा खाने को न दें क्योंकि इससे कई प्रकार की बीमारियाँ होने का खतरा बना रहता है।

12-बच्चों का टीकाकरण सही समय पर करवाएं।-

बच्चों को स्वस्थ और सभी बीमारियों से दूर रखने के लिए बच्चों का टीकाकरण सही समय पर करवाएं। अगर आपको टीकाकरण की जानकारी नहीं है तो अपने नजदीकी स्वास्थ्य केन्द्र जाएं और बच्चों के टीकाकरण के बारे में जानकारी प्राप्त करें।

13-बच्चों की शिक्षा पर पूरा ध्यान दें।-

बच्चे कल के भविष्य हैं इसलिए माता-पिता को उनकी शिक्षा पर सौ प्रतिशत ध्यान देना चाहिए। सभी बच्चे चाहे वह लड़की हो या लड़का उन्हें पूर्ण शिक्षा मिलनी चाहिए। शिक्षा ही वह माध्यम है जिसकी मदद से बच्चे आने वाले कल को आगे ले जाएंगे और देश को उन्नति दिलाएंगे। जो माता-पिता अपने बच्चों की शिक्षा पर पूर्ण ध्यान देते हैं वही अच्छे माता-पिता होते हैं।

Creation Autonomous Academy

अध्याय-5

एक सामन्जस्यपूर्ण जीवन जीना

एक प्रसन्नतापूर्ण और सामन्जस्यपूर्ण जीवन जीने के लिए आप निम्नलिखित चीजें अवश्य करें।

1-एक शिकायत-

संसार में सब जगह याजक और मनोचिकित्सक माता-पिता को शत्रुओं को प्रेम करने के लिए सलाह देते हैं। लेकिन जैसा हम जानते हैं कि कुछ लोग इसके योग्य नहीं हैं।

यह जो भी है, यह उनके लिए नहीं है, यह आपके लिए है। स्वयं के जीवन को प्रसन्न बनाने के लिए चीजों, अनुभवों,भावनाओं, शिकायतों को अपने जीवन में छोड़ने की आवश्कता है।

2-आपका घमंड-

कुछ लोग बहु ही अधिक घमंड करते हैं जो कि अच्छा नहीं हैं। कुछ स्तर के लिए ही यह अच्छा है। सीमा से बाहर यह मानसिक व शारीरिक रुप से नुकसानदेय हो सकता है।

यदि आप अपनी गलती नहीं मानते और आपका घमंड आपके तरीके से आता है तब आप नई चीजें नहीं सीख सकतेऔर अपने जीवन में बदलाव नहीं ला सकते हैं।

आप दूसरी तरफ नहीं देख सकते और स्वयं के लिए बदलाव लाने के लिए सक्षम नहीं हो सकते। इसलिए सरलता से इसे लें और अपने घमंड को अपने तरीके से न आने दें।

3-विश्वास करें कि एक दिन आप पहुंच सकते हैं।-

हम सब के पास पाने के लिए अथवा एक संस्था का अगुवा बनने के लिए एक स्वप्न है। लेकिन जैसे हम बूढ़े होते हैं सत्य कड़वा होता है। क्योंकि हम महसूस करते हैं कि हम अपने स्वप्नों को पूरा करने के लिए कभी भी सक्षम नहीं हो सकते हैं।

इसका कोई मतलब नहीं है कि आप कितना अच्छे हैं। कई एक समय में यहां तक कि बुद्धिमान लोग अपने स्वप्नों को पूरा करने के लिए सक्षम नहीं होते हैं।

आपके पास संसार को देने के लिए बहुत कुछ है। लेकिन इसका यह मतलब नहीं है कि लोग इस सब का मूल्य समझेंगे। आप वर्तमान को अनदेखा इसलिए कर रहे हैं क्योंकि आप आशा करते हैं कि भविष्य में एक दिन धनी बन जाएंगे।

Creation Autonomous Academy

आप धनी बनने के लिए प्रतिदिन अपने जीवन में तनाव की तरफ बढ़ रहे हैं। लेकिन आप एक चीज याद रखें कि आपको प्रसन्न होने अथवा प्रसन्नता के जीवन के लिए एक धनी बनने की आवश्कता नहीं है।

4-असुरक्षा-

भविष्य के बारे में असुरक्षा आपको वर्तमान जीवन से दूर करेगी। यह आपके अप्रसन्नता का एक कारण है कि आपकी प्रत्याशाएं आपको तनावपूर्ण व दुखी बनाएंगे।

असुरक्षा औरों के व स्वयं के न्याय से आ सकती है। जितने भी दिनों से आप सही चीजें कर रहे हैं और आप जैसे चाहते हैं वैसा जीवन जी रहे हैं किसी के पास भी अधिकार नहीं हैं कि आप पर कोई न्याय करे।

इसलिए स्वयं के बनें और दूसरों के विषय में चिंता किए बिना एक प्रसन्न जीवन जिएं। जो लोग प्रेम करते हैं वे आपको प्रेम करेंगे जो वास्तव में आप हैं।

5-अधिकार की भावना-

असुरक्षा से जलन आती है। यदि आप असुरक्षा की तरफ जाते हैं तब आप जलन की तरफ भी जाएंगे। भविष्य में आप क्या खोने जा रहे हैं इसके बारे में चिंता करना बन्द करें।

अधिकार की भावना जलन के लिए निकटता से सम्बन्धित है। स्वयं को याद दिलाएं जो आपको दुखी बनाती हैं उन चीजों को छोड़ना है। जो चीजें आपको दुखी बनाती है जब आप उन्हें छोड़ेंगे आप अधिक प्रसन्नता का अनुभव करेंगे।

6-गलतियां-

ग्लानि और पछतावे की अति किसी के जीवन में सबसे खराब चीज है। कुछ लोग कहते हैं जीवन में मैंने कभी पछतावे वाला करर्य नहीं किया है क्यों दूसरे इससे बाधित हैं।

ये दोनों अति हैं और एक मध्य रास्ते में दिखायी देगी। यह अच्छा है कि पीछे जाकर याद करें जो चीजें आपने गलत किया है और क्षमा का अनुभव करें अपेक्षा इसके कि आप उसी में पड़े रहें।

पछतावा अच्छा है वे लोगों को ग्लानि से बाहर आने व एक बेहतर व्यक्ति बननें में सहायता करते हैं। यदि बीती चीजें आपको पीछे धकेलती हैं तो यह अच्छा नहीं है। पछतावा आपके जीवन को सकारात्मक बनाता है।

7-विषैले लोग-

यदि आपके चारों तरफ विषैले लोग हैं और आप उनके साथ प्रसन्न नहीं हैं, तब आप उन्हें छोड़ें अपने आपको तनाव मुक्त व प्रसन्न रखें।

यह सरल है कि आप लोगों से जुड़ें जिनसे आप अधिक घृणा करते हैं। घृणा प्रत्येक कदम पर मजबूत होती है जैसे कि प्रेम। आप अपना समय व शक्ति विषैले लोगों पर खराब कर रहे हैं, वे कभी भी आपको प्रसन्न नहीं बनाएंगे।

अच्छा है कि आप अपने आपको उनसे दूर रखें आप देखेंगे कि आपका जीवन उनके बिना अधिक बेहतर है। विषैले से उतरें और आप देखेंगे कि आपका जीवन कितना अधिक प्रसन्नता का हो जाता है।

8-कार्य जिनसे आप घृणा करते हैं।-

कभी कभी जब आप अपने जीवन के साथ बंधे हैं इससे आपके कार्य को बदलना कठिन है। यदि आप के पास बड़े कौशल हैं और आप अभी भी जिस कार्य से घृण करते हैं वही कार्य कर रहे हैं आप जितना जल्द सम्भव हो अपने कार्य को बदलें।

Creation Autonomous Academy

जिस कार्य से आप प्रसन्न नहीं हैं उससे आप बंधे रहें इसका कोई मतलब नहीं है। यह आपके जीवन का भाग है इसके लिए आपको भुगतान किया जाता है लेकिन यदि आप इससे प्रसन्न नहीं हैं तब इस कार्य से बंधे रहने का कोई मतलब नहीं है।

अपने कार्य को बदलें और अपने धैर्य का अनुशरण करें। आपका कौशल सही कार्य पाने में आपकी सहायता करेगा जो आपको प्रसन्न बनाएगा।

9-लत-

प्रत्येक दस में से एक व्यक्ति शराब या नशीली दवाइयों का आदी है। अन्य प्रकार की भी लत हैं। आप विषैले सम्बन्ध, कार्य और पर्चा लिखित नशीली दवाइयों आदि के आदी को सकते हैं।

जिन चीजों के आप लत में पड़े हैं उनसे कभी भी भर नहीं सकते, उनसे कही अधिक बड़ा भाग यह लत भर सकता है। यह और अधिक पाने की आवश्यकता होती है, लेकिन वह कभी भी आवश्यकता को पूरा नहीं कर सकती। यह आपके सम्बन्ध, आपके धन और आपके समय व नाम को नष्ट कर देगी।

लत से ठीक होना एक कठिन कार्य है। यदि आप आपने को नियंत्रित करते अथवा लत से अपने आपको रेकते हैं तो आप देखेंगे कि आपका जीवन कितना प्रसन्नतापूर्ण हो जाएगा।

कई तरीके व चीजें हैं जो आपको प्रसन्न बना सकती हैं। हमने उनको आपको बताया है जो सामान्य हैं व जिनका प्रतिदिन हमस ब सामना करते हैं।

सामन्जस्यता के जीवन के सिद्धान्त

1-असामंजस्यता में सामंजस्यता पाना-

सभी जगह सामंजस्यता चाहिए इसलिए संतुलन बनाएं। संतुलन बनाना कठिन परिश्रम की मांग करता है। यदि सभी कुछ संतुलित नहीं है तो तनाव आएगा। हमें बिनाअरामदायक के आरामदायक बनने से आरम्भ करने की आवश्यकता है।

2-कार्य जीवन है और जीवन कार्य है।-

यदि आपका कार्य जीवन नहीं हैं तो इसे बदलें और कुछ नया करें।

3-किसी दूसरे का जीवन न जिएं।-

जीवन छोटा है। आप अपना समय इस ग्रह पर बुद्धिमानी से उपयोग करें, प्रत्येक मिनट गिना हुआ है। अपना जीवन अपने मन और आत्मा से जिएं, जो आपकी आवश्यकता है वह करें हमेशा अपने साथ सही रहें इसे और किसी के लिए बलिदान न करें। सीखने की अपेक्षा उन्हें स्वयं का रंग दें और उन्हें स्वयं का बनाएं।

4- सब कुछ जानने वाला न बनें, सब कुछ सीखने वाला बनें।-

एक सचेत सीखने वाला बनें, कभी सीखना बन्द न करें। अपने मस्तिष्क को खोलें और नई चीजों को पाने वाला बनें। यह जीवन भर का है। इसका अन्त नहीं है।

5-जुनून के साथ यह करें।-

जुनून वह चीज है जो आपके गुण की उच्च अभिव्यक्ति की रचना मे आपकी सहायता कर सकता है। सब कुछ जुनून के साथ करेंअपने हृदय का जितना सम्भव हो अनुशरण करें। जैसे बागवानीः जो कुछ आपने निवेश किया है प्रकृति आपको उसे वापस देती है।

जब कोई भी कार्य जुनून के साथ, भावनाओं के साथ, शक्ति के साथ आप करते हैं तो लोग इसे अनुभव करते हैं। जब आप यह नहीं करते तब भी लोग महसूस करते हैं। इसलिए मन से खेलें, जो भी आप करते हैं उसे भावनाओं के साथ करें।

जुनून सीखने के समान, सीखना ज्ञान के समान, और ज्ञान आदर के समान है। यह आदर परिपक्व सफलता के लिए आवश्यक है।

Creation Autonomous Academy

6-अपनी चमक पाएं।-

मेरा नम्बर एक का क्षेत्र है जब हम किसी को नियुक्त करते हैं उसके व्यवसायिक अथवा शैक्षिक पृष्ठभूमि को न देखें, बल्कि उसकी आंखों की चमक को देखें। यही लागू करें जब किसी नए व्यक्ति से मिलते हैं। बढ़ें और प्रसन्न बनें, हमारी आवश्यकता है कि हम घर व कार्य पर चमक खोजें। अपने उद्देश्य को खोजें और आप अपनी चमक को पाएंगे।

7-जीवन एक अभ्यास नहीं है।-

कोई खराब मौसम नहीं है, मात्र उचित कपड़े।

अपने जीवन के अन्त में किसी बड़े खेल की आशा न करें जीवन एक अभ्यास नहीं है। कई लोगों के पास स्वप्न है परन्तु वे जब कार्य करना बन्द कर देते हैं वे जो चाहते हैं वे चीजें करते हैं। जब वे साठ की उम्र में पहुंचेंगे उनके पास उनकी बाल्टी भर सूची तैयार है। अभी जिएं, और कल के लिए। यात्रा सत्य पुरस्कार है। आज दिमागदार बनें। जब लोग साठ के होते हैं उनकी शारीरिक सीमाएं होंगी, इसलिए प्रतीक्षा न करें। अभी जिएं।

8-अपने प्रतिदिन के जीवन के भाग में अच्छा सोएं, पोषक आहार लें और व्यायाम करें।-

एक स्वस्थ शरीर में एक स्वस्थ मन है। एक स्वस्थ व्यक्ति का त्रिभुजः सोना, पोषण और व्यायाम।

1- पर्याप्त सोना

2-शारीरिक स्वास्थ्य मानसिक स्वास्थ्य है।

3-सही पोषण खोजें

9-अच्छा सम्बन्ध प्रसन्न जीवन बनाता है।-

अच्छा सम्बन्ध स्वस्थ और प्रसन्न बनाता है। पैसा, उच्च लक्ष्य प्राप्त करना अथवा प्रसिद्ध होना आपको स्वस्थ व प्रसन्न नहीं बना सकता है। एक अच्छा पाठ है परिवार, मित्रों, समुदाय और व्यवसाय के साथ सम्बन्ध।ः

1- जीवन कार्य है।

2- यह हमारे निकट सम्बन्ध की गुणवत्ता के विषय में है।

3- अच्छा सम्बन्ध केवल हमारे शरीर की ही सुरक्षा नहीं करता, वह हमारे मस्तिष्क की भी सुरक्षा करता है।

एक प्रसन्न, स्वस्थ, और सामंजस्यपूर्ण जीवन के तरीके

एक स्वस्थ, प्रसन्न और सामंजस्यपूर्ण जीवन जीने के तरीके निम्नलिखित हैं।-

1-आपके पास जो कुछ है उसके लिए आभारी हों।

Creation Autonomous Academy

2-वास्तव में लोगों को सुनें।

3-कार्य के लिए अपने आपको समर्पित करें।

4-अपने जुनून को करें और उसका अनुशरण करें।

5-खूला मन रखें।

6-विभिन्न प्रकार के भोजन खाएं।

7-व्यायाम करें।

8-कुछ नया सीखें।

9-यात्रा करें और जिसे आप प्रेम करते हैं उसके लिए समय दें।

अध्याय-6

परिवार के लिए परमेश्वर की योजना

उत्पत्ति के आरम्भ में परिवार परमेश्वर का विचार है।-

परिवार परमेश्वर के हृदय के निकट हैं।प्रथम स्थान में यह उसका विचार है। आरम्भ में जब परमेश्वर ने पुरुष की रचना किया, उसने कहा,'पुरुष का अकेला रहना अच्छा नहीं है,' इसलिए उसने 'एक उपयुक्त सहायक के रुप में स्त्री की रचना किया।' (उत्पत्ति 2:18)

तब उसने उन्हें आशीष दिया और उनसे कहा,'फूलो-फलो और पृथ्वी में भर जाओ।' (उत्पत्ति 1:28) यहां तक कि उनके पाप में गिरने के बाद भी, परमेश्वर परिवार के लिए अपनी योजना को आगे ले गया और यहां तक कि भविष्यद्वाणी के रुप में बोला स्त्री के वंश से उद्धार आएगा। (उत्पत्ति 3:15)

जलप्रलय के बाद, उसने अपनी योजना को नूह और उसके पुत्रों के लिए दोहराया,'फूलो-फलो और बढ़ो और पृथ्वी में भर जाओ।' (उत्पत्ति 9:1) परमेश्वर अपनी योजना को आगे ले गया जब उसने अब्राहम को चुना और अद्‌भुत रुप से उसके बुढ़ापे में उसे एक बेटा दिया। (उत्पत्ति २१) समय पूरा होने पर यह पूर्ण हुआ जब उसने अपने पुत्र को भेजा (गला० 4:4) मनुष्य के रुप में जन्म लेने के लिए, जिनको उसने अपने लिए रचा था उनके लिए जीने और मरने के लिए।

समय के साथ परमेश्वर की योजना सब जगह माता-पिता के लिए अपने बच्चों को खड़ा करने के लिए है कि वे उसको जानें, उसको प्रेम करें और उसके रास्ते पर चलें। व्यवस्था० 6:6 में परमेश्वर ने इस्राएलियों को कहा,' उसकी आज्ञाओं को अपने हृदय में रखें और अपने बच्चों को बुद्धिमानी से सिखाएं, जीवन के सभी समयों में प्रतिदिन उनसे आज्ञाओं के विषय में बातचीत करें।

कई परिवार आजकल गहरे संकट में हैं क्योंकि वे अपने बच्चों को बुद्धिमानी से सिखा नहीं रहे हैं। इसके बजाए वे उन्हें स्कूल, मीडिया, संग्रहालय, राष्ट्रीय पार्कों, और अन्य के भरोसे छोंड़ दे रहे हैं कि वे यह कार्य करें। हमने सुना है,''मैं अपने बच्चों को बाइबल में धक्का नहीं देने जा रहा हूं। जब वे बड़े हो जाएंगे खुद निर्णय लेंगे।'' समस्या यह है कि ये माता-पिता यह भूल गए हैं कि वे अपने बच्चों को बाइबल नहीं सिखा रहे हैं संसार उन्हें मनुष्यता अथवा नए धर्मों की ओर धक्का दे रहा है।

बहुत से परिवार इसलिए गहरे संकट में हैं क्योंकि वे अपने बच्चों को बुद्धिमानी से नहीं सिखा रहे हैं।

Creation Autonomous Academy

परिवारों के लिए परमेश्वर की योजना

''विवाह परमेश्वर द्वारा अभिषिक्त है,'' ये सिद्धान्त यह समझने में सहायता कर सकते हैं कि क्यों ''पुरुष और स्त्री के बीच विवाह परमेश्वर का अभिषेक है।'' और क्यों ''सृष्टिकर्ता की योजना के लिए उसके बच्चों के अनंत गन्तव्य के लिए परिवार केन्द्र है।''

मौलिक जीवन में परिवार-

हमारे मौलिक जीवन में हममें से प्रत्येक स्वर्गीय पिता के प्रिय पुत्र अथवा पुत्री के रुप में पैदा हुआ है। हम सभी भाइयों और बहनों के समान परमेश्वर के परिवार के सदस्य के रुप में जीवन जी रहे हैं, हम सब परमेश्वर के अनन्त परिवार के भाग हैं, मात्र जहां हम अनन्त विवाह की आशीषों का आनन्द ले सकते हैं हमारा स्वर्गीय पिता है। जिनके पास बच्चे हैं उन्हें माता-पिता कह सकते हैं। हम परमेश्वर को पिता कहकर पुकार सकते हैं। हमारे स्वर्गीय पिता ने एक

योजना तैयार की है जहां हम उन्नत हो सकते हैं और उसके समान बन सकते हैं। उसके केन्द्रीय योजना में सम्मिलित है अनन्त विवाह और अनन्त आनन्द।

सृष्टि, पतन, और प्रायश्चित द्वारा परिवार-

परमेश्वर की योजना में तीन मौलिक आयोजन एक साथ विवाह और पारिवारिक सम्बन्ध को समय और अनन्त के लिए सम्भव बनाते हैं। ये आयोजन हैं सृष्टि, पतन और प्रायश्चित। सृष्टि का वचन खाता बताता है न केवल मनुष्य की सृष्टि के साथ लेकिन विवाह का विकास। अदन में आदम और हव्वा के अनन्त विवाह की एक सम्पूर्ण भूमिका उत्पत्ति 1:28 में पायी जाती है, इस जिम्मेदारी को सम्मिलित करते हुए ''फूलो फलो और पृथ्वी में भर जाओ।''

समय और अनन्त में परिवार-

इस विवाह और पारिवारिक सम्बन्ध के लिए सर्वदा के लिए, वे अवश्य मुहरबन्द किए जाएं पवित्र समूह और वाचा द्वारा जो मात्र मन्दिर में उपलब्ध है, सभी प्रतिज्ञात आशीषों के साथ सहभागियों की विश्वासयोग्ता पर निर्भर हों। इस समूह के लिए महत्वपूर्ण है कि हमारा उद्धार प्रभु द्वारा समझाया गया। विवाह परिवार के अनन्त में जाने का एक रास्ता है जब पुरुष और स्त्री वाचा के प्रति विश्वासयोग्य रहते हैं जो उन्होंने बांधा है।

परिवार और वैकल्पिक जीवनशैली-

यह सत्य है कि अपने जीवन में प्रत्येक को विवाह का अवसर नहीं मिलेगा, न ही प्रत्येक जोड़ा बच्चों की आशीष से आशीषित होगा।

शैतान हमेशा परमेश्वर की प्रसन्नता की योजना के विरुद्ध विकल्प प्रस्तुत करता है यह परिवार के साथ अधिक लागू होता है। स्वर्गीय पिता की विवाह और परिवार में धार्मिकता द्वारा प्रसन्नता की योजना के विरुद्ध शैतान की वैकल्पिक जीवन शैली जो वह प्रस्तुत करता है पापपूर्णता व स्वार्थीपन में जड़ जमाए हुए है। वह विवाह न करने के लिए अथवा एक परिवार न रखने के लिए शापित है और वह चाहता है कि हम उसके समान रहें, इसके बजाए कि हमारे स्वर्गीय पिता के समान हम रहें। वह हम से झूठ बोलता है कि विवाह और परिवार असुविधाजनक और एक बाधा है। वह प्रतिज्ञा करता है कि हम इससे बड़ा आनन्द व पूर्णता कुछ अन्य तरीके से अथवा कुछ अन्य व्यवस्था द्वारा पा सकते हैं। वह प्रलोभन लाता है कि हम विवाह न करें और यदि विवाह कर लेते हैं तो बच्चे न पैदा करें। विवाह के पहले यौन सम्बन्ध, अश्लीलता, पत्नी व बच्चों का शोषण, व्यक्तिगत व सामाजिक सुविधा के लिए चुना गर्भपात, वैवाहिक समस्या, अप्रमाणिक तलाक, समलैंगिकता आदि सहित अलगाव व गिरावट को प्रस्तुत करता है। यदि वह हमें इन चीजों को करने के लिए कायल नहीं कर पाता तो वह लालच देता है कि इन्हें करने के लिए दूसरों का समर्थन करें। लेकिन ये वैकल्पिक जीवनशैली इस जीवन में जिस प्रसन्नता को हम खोज रहे हैं उस सत्य प्रसन्नता को नहीं ला सकती, न ही उद्धार की सम्पूण आशीषों को ला सकती है। हमारे स्वर्गीय पिता की योजना व मनुष्यों से प्रेम की स्वामिभक्ति के बिना, अवश्य हम निरुत्साहित होंगे।

निष्कर्ष-

उद्धार की योजना का सिद्धान्त विवाह और परिवार का महत्व समझने की बुनियाद डालता है।वे सिखाते हैं कि विवाह और परिवार बाहरी संस्थान नहीं है बल्कि यह तत्व हमें स्वर्गीय माता-पिता के समान बनाते हैं।

सम्बन्ध हमारे लिए बड़ा आनन्द का समय और अनन्तता ला सकते हैं। ये सभी सम्बन्ध परमेश्वर की प्रसन्नता की योजना के भाग हैं। यह एक परिवार की योजना है। यह परिवारों के उद्धार की योजना है। हम सब सर्मथन व अनुशरण करने के लिए इस योजना को चुनें, इसके विकल्प का चुनाव न करें।

अध्याय-7

वेदी के रुप में परिवार

परमेश्वर की वेदी क्या है?

परमेश्वर की वेदी एक आराधना घर में खड़ा किया गया वह क्षेत्र है जहां लोग भेंटों के साथ परमेश्वर का सम्मान कर सकते हैं। यह बाइबल में परमेश्वर की मेज के रुप में बलिदान और भेंट परमेश्वर को चढ़ाने के लिए अलग किया गया स्थान है।

परमेश्वर की वेदी का उद्देश्य क्या है?

परमेश्वर की वेदी एक वह ढांचा है जिस पर भेंट के रुप में धार्मिक उद्देश्य के लिए बलिदान चढाया जाता है। यह आराधना के स्थानों में पाया जाता है।

कैसे आप एक आत्मिक वेदी बना सकते हैं?

यहां कुछ आधारभूत दिशानिर्देश हैं जिन्हें आप अपने व्यक्तिगत वेदी बनाने के लिए उपयोग कर सकते हैं। यहां तक कि यदि आप एक छोटा स्थान रखते हैं तब भी आप इसे बना सकते हैं।

1-अपने वेदी के लिए एक स्थानप्राप्त करें।

2-अपने वेदी के लिए एक स्थान को लें।

3-अपने वेदी को बनाएं।

4-अपने वेदी को आशीषित करें।

5-प्रतिदिन के आधार पर अपने वेदी का उपयोग करें।

वेदी की प्रार्थना क्या है?

प्रार्थना पवित्र आत्मा को वैधानिक अधिकार देती है कि वह हमें मार्ग दिखाए, प्रार्थना परमेश्वर को यह अधिकार देती है कि वह हमारे राष्ट्र को चारों ओर से फेर लाए। बाइबल कहती है,‘क्या ही धन्य है वह प्रजा जिसका परमेश्वर यहोवा है, वह जाति जिसे उसने अपना निज भाग होने के लिए चुना है। (भजन 33:12) दानिय्येल के पास प्रार्थना की वेदी थी, वह दिन में तीन बार प्रार्थना करता था।

क्या आप वेदी पर विवाह करते हैं?

Creation Autonomous Academy

वेदी गहराई से व्यक्तिगत और महत्वपूर्ण भाग है विवाह के लिए। यह वह सही स्थान है जहां जोडा विवाहित होगा। यह वह स्थान है जहां दूल्हा प्रथम बार अपनी दूल्हन को देखेगा और वे वहां अकेले अपने मेहमानों के सामने खड़े होंगे यह कहने के लिए ‘मैं करुंगा----’सामान्यतः वेदी कई तरह से स्वाभाविक है।

कैसे एक प्रेम की वेदी की रचना कर सकते हैं?

1-एक मेज या स्थान को चुनें जो वेदी का स्थान लेगा।

2-प्रेम के विषय में मनन व केन्द्र करने के लिए कुछ क्षण लें।

3-मेजपोश फैलाएं यह सुनिश्चित करें कि यह स्थान स्वतंत्र हो।

4-वेदी के पीछे चित्र लगाएं।

5-कलम व कागज का उपयोग करें प्रेम के लक्ष्यों को लिखें।

वेदी किस लिए है?

एक वेदी वेदी है, 'एक खड़ किया गया स्थान जो आराधना या प्रार्थना के लिए उपयोग किया जाएगा।

परिवार को वेदी के रुप में स्थापित करें।-

वेदी का उद्देश्य स्पष्ट हो जाने के बाद अब हमें अपने परिवार को वेदी के रुप में स्थापित करना है।

पारिवारिक आराधना

पारिवारिक आराधना में परिवार के सभी सदस्य एक साथ मिलकर आराधना करते हैं।

क्या करें?:-

1 -एक साथ मिलकर एक छोटा गीत या कोरस गाएं।

2 -परमेश्वर के वचन से पढ़ें।

3 -सदस्यों के पास यदि कोई साक्षी है अथवा प्रार्थना निवेदन है या धन्यवाद का विषय है तो उसे प्रस्तुत करें।

4 -प्रार्थना में सभी सदस्य भाग लें और छोटी-छोटी प्रार्थनाएं करें।

क्या न करें?:-

1 -अपरिचित भाषा का प्रयोग न करें।

2 -गलत समय पर आराधना न करें।

3 -किसी अन्य व्यक्ति को जो परिवार का नहीं है उसे पारिवारिक आराधना में अगुवाई, प्रार्थना या वचन सुनाने का मौका न दें।

क्या लाभ हैं?:-

1 -पारिवारिक सम्बन्ध मजबूत होता है।

2 -पारस्परिक प्रेम मजबूत होता है।

3 -परिवार में एकता आती है।

4 -परिवार में अनुशासन आता है।

5 -परमेश्वर की आशीषें आती हैं।

6-छोटे बच्चों को आराधना एवं उसके महत्व का पता चल जाता है।

7 -समाज में एक अच्छी गवाही होती है।

पारिवारिक प्रार्थना :-

पारिवारिक प्रार्थना वह प्रार्थना है जिसमें परिवार के सभी सदस्य एक साथ मिलकर प्रार्थना करते हैं। ऐसी प्रार्थना सभी विश्वासियों के लिए अत्यन्त आवश्यक है।

पारिवारिक प्रार्थना के लाभ :-

पारिवारिक प्रार्थना के निम्नलिखित लाभ हैं।

1. इससे परिवार में परमेश्वर को प्रथम स्थान मिलता है।

2. इससे परिवार में परमेश्वर की आशीषें आती हैं।
3. परिवार में एकता और आपसी प्रेम को बढ़ावा मिलता है।
4. इससे परिवार में अनुशासन होता है।
5. छोटे बच्चे अपने माता-पिता से प्रार्थना करना सीखते हैं।
6. इससे परिवार का आत्मिक विकास होता है।
7. यह समाज में एक गवाही का जरिया है।

पारिवारिक प्रार्थना के सम्बन्ध में सावधानियांः-

पारिवारिक प्रार्थना के सम्बन्ध में निम्नलिखित सावधानियां आवश्यक हैं।-

1. सरल शब्दों का प्रयोग करे जिसे छोटे बच्चे भी समझ सकें।
2. रटी हुई प्रार्थना न करें,बच्चों पर बुरा असर पड़ेगा।
3. छोटे बच्चों का ध्यान रखते हुए समय का उचित ध्यान रखें।
4. परिवार के सभी सदस्यों को प्रार्थना करने के लिए प्रोत्साहन दें।
5. पारिवारिक प्रार्थना की सही विधि का प्रयोग करें, अर्थात एक गीत गाते हुए, वचन भी पढ़ें और प्रार्थना करें।

जिन परिवारों में प्रार्थना की कमी पायी जाती है, वे परिवार आत्मिक रूप से कमजोर हो जाते हैं। उस परिवार का आत्मिक विकास रूक जाता है। यहां तक कि वे परमेश्वर की अनेक आशीषों से वंचित रह जाते हैं। यदि एक मसीही परिवार आत्मिक रूप से मजबूत है तो उसका अच्छा प्रभाव कलीसिया पर भी पड़ेगा और कलीसिया भी मजबूत होगी।

उत्पत्ति 22:5 में सबसे पहले आराधना शब्द का प्रयोग किया गया है। इब्राहीम उन सेवकों से कह रहा था जो मोरिय्याह पर्वत पर जाते समय उसके व इसहाक के साथ थे।, 'यह लड़का और मैं वहां तक जाकर आराधना करेंगे और फिर तुम्हारे पास लौट आएंगे।'

आइए देखें कि इब्राहीम ने आराधना करते समय क्या कुछ किया। आराधना का प्रथम उल्लेख हमें कितने पाठों की शिक्षा देता है।

1-परमेश्वर की आज्ञाः-

परमेश्वर ने इब्राहीम को जाकर आराधना करने की आज्ञा दी थी। प्रशंसा करना व आराधना करना विकल्प नहीं जिसे हम अपनी इच्छा के अनुसार करें। यह परमेश्वर की आज्ञा है।

Creation Autonomous Academy

जब बाइबल कहती है,'प्रभु की स्तुति हो।' यह कोई सुझाव या फिर विनती नहीं है। यह आज्ञा है। इसमें कोई भी अपनी मर्जी नहीं है। परमेश्वर के प्रत्येक बच्चे को वास्तविक रीति से परमेश्वर का प्रशंसक व उपासक होना अनिवार्य है।

2-इब्राहीम की प्रतिक्रियाः-

इब्राहीम की प्रतिक्रिया आज्ञाकारिता का परिणाम है। वाचा रुपी सम्बन्ध जो परमेश्वर के साथ है उसके लिए आज्ञाकारिता अनिवार्य है। इब्राहीम और परमेश्वर वाचा के सम्बन्ध में प्रवेश करते हैं, जो इब्राहीम की सम्पूर्ण आज्ञाकारिता व सम्पूर्ण समर्पण की अपेक्षा करता है। इब्राहीम परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारी व समर्पित था।

परमेश्वर इब्राहीम के समर्पण की सच्चाई व अखण्डता को परखना चाहता था। परमेश्वर ने इब्राहीम से मांग की कि वह अपनी सबसे कीमती वस्तु अर्थात इसहाक को बलिदान कर चढ़ाए। इसहाक जो प्रतिज्ञा का पुत्र था।

3-कीमत चुकानाः-

आराधना करना सरल नहीं, कीमत चुकानी पड़ती है। आराधना करने के लिए इब्राहीम को सबसे अच्छा व उत्तम बलिदान चढ़ाना था।

यह वास्तविक रीति से 'स्तुति रुपी बलिदान' था। (इब्रा० 13:15) आराधना का जीवन हमसे सब कुछ की मांग करता है। (रोमि० 12:1-2) वास्तविक उपासक बनने के लिए हमें अपना सम्पूर्ण जीवन व सब वस्तुएं परमेश्वर को समर्पित करना है। दाऊद भी इस सिद्धांत को भली-भांति समझ गया था। उसने कहा, 'मैं अपने परमेश्वर यहोवा को सेंतमेंत के होमबलि नहीं चढ़ाने का।' (2 शमू० 24:24)

4-विश्वास से आराधना करनाः-

इब्राहीम ने जितने भी कदम उस दिन लिए उसने विश्वास से लिए। जब वह मोरिय्याह पर्वत की ओर जा रहा था, तो इब्राहीम यह जानता था कि परमेश्वर उसके एकलौते पुत्र का बलिदान चाहता है। परन्तु वह यह भी विश्वास के कारण जानता था, किसी न किसी तरह वह और उसका पुत्र इसहाक इकट्ठे वापिस लौटेंगे। (उत्पत्ति 22:5)

5-अपने आपको अर्पित करनाः-

इब्राहीम केवल अपने पुत्र इसहाक को ही अर्पित करने के लिए तैयार न था, वह अपनी योजनाएं, इच्छाएं, उद्देश्य तथा भविष्य की आकांक्षाएं भी परमेश्वर को अर्पित करता है। उसका सम्पूर्ण भविष्य इस लड़के के साथ बंधा हुआ था।

यह वही पुत्र था जिसके लिए परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की थी-उसी के द्वारा वाचा की सब प्रतिज्ञाएं पूर्ण होंगी। आज्ञा मानकर सब समर्पित करने से उन सारी आकांक्षाओं को भी अर्पित करना पड़ा, जिसे वह पूरा होता देखना चाहता था। उसने अपने आपको पूरी रीति से समर्पित कर दिया।

जब तक हम परमेश्वर के सामने अपना सब कुछ अर्पित नहीं करते तब तक आप उसकी सच्ची आराधना में प्रवेश नहीं कर सकते। हमारा अहम सदैव हमारी आराधना में बाधा उत्पन्न करेगा। इसलिए हमें अपने परमेश्वर को सब कुछ अर्पित कर देना चाहिए।

Creation Autonomous Academy

6-आराधना के द्वारा परमेश्वर की महिमा होती है।ः-

इब्राहीम के कीमती निर्णय के साथ आराधना करना परमेश्वर को महिमा देना था। वह कितना महान व महिमामय होगा, जिसके लिए इब्राहीम अपना सब कुछ न्योछावर करने के लिए तैयार था। यहां तक कि अपना प्रिय पुत्र भी न रख छोड़ा, कि वह आज्ञाकारिता व विश्वास से आराधना कर सके।

परमेश्वर कहता है, 'धन्यवाद के बलिदान का चढ़ाने वाला मेरी महिमा करता है---।' (भजन 50:23)

7 -उपासक धन्य होते हैंः-

इब्राहीम के आराधना के कार्य का प्रतिउत्तर परमेश्वर इस प्रकार देता है कि वह प्रत्येक उपासक को आशीष देने की इच्छा करता है।

‘कि तूने जो यह काम किया है कि अपने पुत्र, वरन् अपने एकलौते पुत्र को भी, नहीं रख छोड़ा, इस कारण मैं निश्चय तुझे आशीष दूंगा, और निश्चय तेरे वंश को आकाश के तारागण और समुद्र के तीर की बालू के किनकों के समान अनगिनत करुंगा, और तेरा वंश अपने शत्रुओं के नगरों का अधिकारी होगा---क्योंकि तूने मेरी बात मानी है।’ (उत्पत्ति 22:16-18)

स्तुति रुपी बलिदान चढ़ाना

‘इसलिए हम उसके द्वारा स्तुति रुपी बलिदान, अर्थात उन होठों का फल जो उसके नाम का अंगीकार करते हैं, परमेश्वर के लिए सर्वदा चढ़ाया करें।’ (इब्रा० 13:15)

अ-स्तुति रुपी बलिदान क्या है?ः-

परमेश्वर की स्तुति करने व ‘स्तुति रुपी बलिदान चढ़ाने’ में स्पष्ट भिन्नता पायी जाती है।

पिता के साथ परमेश्वर की संतान का सही विशेष सम्बन्ध है जो प्रशंसा करना सहज बना देता है। प्रशंसा स्वतन्त्रता से बहने लगती है। परमेश्वर की प्रशंसा करने के लिए हमारे पास बहुत कुछ है, जब कभी भी हम उसके सम्बन्ध में सोचें तो हमारे जीवनों से प्रशंसा उमड़ आती है।

हमारी प्रशंसा में सदैव धन्यवाद आवृत्त रहता है। हम परमेश्वर की प्रशंसा स्वाभाविक रीति से करने लगते हैं, जब हम उसके बारे में सोचते हैं, उसने जो आशीषें व लाभ हमें प्रदान किए हैं, उसके कारण भी हम उसकी स्तुति करने लगते हैं।

‘स्तुति रुपी बलिदान’ इससे भिन्न होता है। यह सरलता व स्वाभाविकता से नहीं उमड़ता। जब सब कुछ अच्छा व सही चल रहा है। हम आनन्दित व खुश हैं, केवल उसी समय ही स्तुति नहीं की जाती। ‘स्तुति रुपी बलिदान’ हम उस समय चढ़ाते हैं जब हम प्रशंसा करने में असमर्थ हैं। मानों सब कुछ हमारे विरोध में है, हमारा पूरा संसार टूटता हुआ प्रतीत होता है। ऐसी परिस्थिति में हम परमेश्वर की स्तुति करते हैं। परिस्थितियां स्तुति पर अपना प्रभाव नहीं छोड़तीं।

Creation Autonomous Academy

जब हम महानता का अनुभव करते हैं, अच्छा महसूस करते हों, तभी स्तुति स्वर्ग तक नहीं उठती। ऐसी परिस्थिति में हम विश्वास के द्वारा स्तुति करते हैं। हम उसकी प्रशंसा स्तुति आज्ञाकारिता के कारण करते हैं। हम इसलिए स्तुति करते हैं- वह कौन है न कि उसने हमारे लिए क्या कुछ किया है।

ऐसी प्रशंसा आसानी से नहीं आती। यह कोई हल्की-फुल्की बात नहीं । इसका मूल्य चुकाया जाता है, परन्तु इसके द्वारा पिता के हृदय में विशेष आनन्द मिलता है और उसे स्तुति रुपी बलिदान विशेष सन्तुष्टि देते हैं।

1-लगातार चलने वाली स्तुतिः-

दाऊद ने इस भेद को भली-भांति समझ लिया था उसने कहा, 'मैं हर समय यहोवा को धन्य कहा करुंगा, उसकी स्तुति निरन्तर मेरे मुख से होती रहेगी।' (भजन 34:1)

ऐसी स्तुति आकर्षी व अनियमित नहीं है। यह प्रशंसा केवल अच्छे व अनुकूल परिस्थितियों में नहीं की जाती। यह सुलभ, सहज स्तुति नहीं है लेकिन ऐसा स्तुति करना केवल दाम चुकाने के बाद ही चढ़ाई जाती है।

यह भावुकता के कारण स्तुति नहीं है। यह केवल बनावटी व उछली स्तुति नहीं है। यह स्थिर रहने वाली स्तुति है। यह लगातार परमेश्वर को चढ़ाए गए स्तुति रुपी बलिदान हैं। चाहे अच्छे दिन हों या बुरे, हर परिस्थिति में स्तुति चढ़ाना है।

हम दोनों समयों में प्रशंसा करते हैं चाहे परमेश्वर जब हमें दे या फिर जब वह सब कुछ ले ले। ऐसे समयों में हम यह कहने के योग्य ठहरें---'परमेश्वर का नाम धन्य है---।' (अय्यूब 1:21)

जब बालक स्वर्ग सिधार जाए, जब हम अस्वस्थ हों और डॉक्टर कहे कि बचने की कोई आशा नहीं, जब आप अपना व्यवसाय खो दें, जब स्वर्ग ताम्बे के समान प्रतीत हो, परमेश्वर मानों लाखों मील दूर प्रतीत हो, ऐसा लगता हो कि आपकी प्रार्थनाओं का कोई उत्तर नहीं मिल रहा हो, उस समय स्तुति करना।

जब आपके सामने कुछ भी ऐसा न हो उस समय स्तुति करना स्तुति रुपी बलिदान चढ़ाना है।
जब आपको स्तुति करने में दाम चुकाना पड़े, उस समय स्तुति रुपी बलिदान चढ़ाना। आपके स्वाभाविक विचार इसके विरोध में हों। आपके मित्र उत्साहित नहीं करते हों, आपका मन भारी हो, और चारों ओर कोई भी झरना न दिखाई दे उस समय स्तुति करना स्तुति रुपी बलिदान चढ़ाना है।

शैतान कहेगा, 'तुम किस वस्तु के लिए परमेश्वर की स्तुति कर रहे हो?' वह यह भी कहेगा, 'ऐसी परिस्थिति में प्रशंसा करना असम्भव है, कोई आपसे अपेक्षा भी नहीं करता, यहां तक स्वयं भी आप से स्तुति की आशा नहीं लगाए हुए है। ऐसा करना बावलापन है।' फिर भी आप अपने हृदय की गहराइयों से जानते हैं कि परमेश्वर स्तुति के योग्य परमेश्वर है। आप जानते हैं कि वह अभी भी सिंहासन पर विराजमान है। वह अभी भी सर्वशक्तिमान है, समस्त संसार या विश्व का परमेश्वर है। वह किसी भी रीति से बदलता नहीं। वह वैसा ही है, वह आज और कल और सर्वदा के लिए एक सा है। उसके अद्भुत नाम की प्रशंसा हो।

Creation Autonomous Academy

2-सुनी जाने वाली स्तुतिः-

यह हमारे होठों का फल है, हमारे होंठ शब्दों की उत्पत्ति करते हैं। वह हमारे विचारों को शब्दों में बदल देते हैं।

स्तुति रुपी बलिदान के बारे में यूं कहा जा सकता है-कुछ है जो हम कहते हैं शैतान, लोग, हम स्वयं उसे सुन सकते हैं। सबसे अधिक महत्वपूर्ण यह है कि परमेश्वर भी सुन सकता है। पौलुस व सिलास आधी रात के लगभग परमेश्वर को स्तुति रुपी बलिदान चढ़ा रहे थे, जब उन्हें भीतर की कोठरी में बन्दी बनाकर रखा हुआ था। (प्रेरि० 16:25)

प्रभु यीशु के बारे में बोलने के कारण उन्हें बन्दीगृह में डाल दिया गया था। वे अपराधी न थे। उन्होंने कोई विशेष अपराध नहीं किया था वे स्वर्ग के राज्य का सुसमाचार फैला रहे थे, उस परिश्रम के कारण उन्हें बन्दीगृह में डाल दिया गया।

उनको कोड़ों से मारा गया। उनकी पीठ से लहू बह रहा था, कपड़े उतरे हुए थे। वे पीड़ा में थे। उनके घाव कच्चे थे। उनके शरीरों की प्रत्येक नाड़ी बाहर निकली हुई प्रतीत हो रही थी। उनके पूरी पीठ में दर्द हो रहा था, उनके हाथ और पैर दीवार के साथ बांध दिए गए थे। वे किसी भी प्रकार अपने को आरामदायक न बना सके। उन्होंने इसके लिए भरसक प्रयत्न किया।

जब आधी रात हो चुकी थी-वह समय जब मनुष्य की आत्मा का स्तर सबसे कम होता है, जब उनकी आत्माएं निराशा व दुख से भरी हुई थी। उस समय शायद वे प्रशंसा करना भी न चाहते हों।

परन्तु आधी रात के समय वे परमेश्वर की स्तुति करने लगे। उन्होंने अपने मुंह को खोला और परमेश्वर के प्रति स्तुति रुपी गीत गाने लगे। इसके द्वारा परमेश्वर का हृदय कितना अधिक आनंदित होगा। यहां परमेश्वर के दो सेवक हैं, जो उसके नाम के कारण दुख, निराशा व शर्म का अनुभव कर रहे हैं। वे बन्दीगृह में दुख के दिन काट रहे हैं क्योंकि उन्होंने वही किया जो परमेश्वर ने उन्हें करने के लिए कहा था।

वे परमेश्वर की प्रशंसा व स्तुति करने लगे वह भी आधी रात के समय, अन्धकारमय समय में, जब सब कुछ अन्धकार व निराश प्रतीत हो रहा था, उस समय वे स्तुति में लीन हो गये।

अचानक बन्दीगृह की दीवार हिलने लगी। उनकी जंजीरें ढीली पड़ गयीं।

वे लोग स्तुति रुपी बलिदान चढ़ा रहे थे। हर अनुकूल परिस्थिति में वे परमेश्वर की प्रशंसा करने लगे। उन्होंने इन परिस्थितियों पर विजय पाई और ऊंचे स्वर में परमेश्वर की महिमा करने लगे।

3-ऐसा केवल यीशु द्वारा हो सकता हैः-

'उसी के द्वारा, इसलिए आइए हम चढ़ाएं -----।' केवल यीशु ही ऐसे बलिदान सम्भव कर सकता है।

Creation Autonomous Academy

पिता भली- भांति जानता है कि मनुष्य ऐसी परिस्थिति में कभी भी स्तुति नहीं कर सकता यदि स्वयं प्रभु यीशु ऐसा करने में सहायक न हो। इस कारण पिता अपने पुत्र के अद्‌भुत कार्य को निहारता है जो इस बलिदान में सम्मिलित है। इस आश्चर्यकर्म में परमेश्वर के पुत्र का अनुग्रह शामिल है।

हर समय जब स्तुति रुपी बलिदान चढ़ाया जाता है, यीशु मसीह महिमा पाता है।

4-यह उसके नाम को धन्य कहना हैः-

परमेश्वर हमें उस स्थान पर लाना चाहता है जहां विश्वासयोग्यता से 'हम सदा सब बातों के लिए अपने प्रभु यीशु मसीह के नाम से परमेश्वर पिता का धन्यवाद करते रहें।' (इफि० 5:20)

ध्यान रहे हम सब बातों में पिता का धन्यवाद करते हैं। यह कठिन भी है। हम ऐसा तभी कर सकते हैं जब हम परमेश्वर की प्रभुता पर वास्तविक रीति से विश्वास करते हैं। जब हम सच्चाई से जानते हैं '----कि जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, उनके लिए सब बातें मिलकर भलाई ही को उत्पन्न करती हैं, अर्थात उन्हीं के लिए जो उसकी इच्छा के अनुसार बुलाए हुए हैं।' (रोमि० 8:28)

ब-स्तुति रुपी बलिदान कैसे चढ़ाएं?ः-

1-पहले से निर्धारित कर लें कि परमेश्वर की स्तुति करना ही हैः-

ऐसा आप हर समय और हर परिस्थिति में करें।

2-अभी से ऐसा करना आरम्भ कर देंः-

प्रतिदिन और हर समय परमेश्वर की स्तुति करते रहो। चाहे उस दिन कुछ भी आपके साथ घटे, उसमें और उसके द्वारा परमेश्वर की स्तुति करते रहें। लगातार परमेश्वर की स्तुति करने की अच्छी आदत डाल लें।

3-कठिनाई में भी परमेश्वर की स्तुति करेंः-

भजन 50:23 के अनुसार कठिन परिस्थिति में भी परमेश्वर की स्तुति करें तो परमेश्वर आपके लिए छुटकारे का मार्ग खोलेगा।

4-विश्वास द्वारा ऐसा करना आरम्भ करेंः-

स्तुति के शब्दों का उच्चारण करें। विश्वास द्वारा परमेश्वर का धन्यवाद शब्दों में कीजिए। चाहे अभी आप उस मार्ग को जानते भी न हों। आप यह भी नहीं जानते कि परमेश्वर कैसे आपको छुटकारा दिलाएगा। परन्तु फिर भी आप उसके लिए परमेश्वर को धन्यवाद व स्तुति चढ़ा रहे हैं। आप अभी ही विजय में हैं।

5-लगातार परमेश्वर की प्रशंसा करते रहोः-

आपकी स्तुति दिन प्रतिदिन ऊंचाई की ओर अग्रसर हो। काश! प्रशंसा व स्तुति की आत्मा आपको पूरी तरह से जकड़ ले। परमेश्वर की स्तुति ऊंचे स्वर में करें।

स्तुति प्रशंसा मेंः आशीषें व रुकावटेंः-

आशीषेंः-

Creation Autonomous Academy

प्रकृति के चक्र द्वारा हम पृथ्वी की आशीषों को प्राप्त कर सकते हैं। इसे आर्दता विज्ञान का चक्र कहा जाता है। वाष्पीकरण व वर्षा।

हमारी प्रशंसाएं स्वर्ग तक पहुंचती हैं वे 'आशीषों की वर्षा' में परिवर्तित हो जाती हैं। (यहेजकेल 34:36) यही वर्षा परमेश्वर की आशीषों के स्वरुप हम पर बरसती है। (आमोस 5:8, 9:6)

रुकावटेंः-

1-पाप -

पाप स्तुति प्रशंसा करने में बाधा है। पाप हमें परमेश्वर से दूर हटाता है। हमारी आवाज को परमेश्वर तक पहुंचने नहीं देता है।

2-दोष व अपराध-

दोष व अपराध भी भक्ति व स्तुति प्रशंसा के मार्ग में बाधा हैं।

3-सांसारिकता-

स्तुति प्रशंसा के मार्ग में सांसारिकता हमेंशा बाधा बनकर खडी होती है। संसार हमें भक्ति नहीं करने देता बल्कि सदा अपनी तरफ खींचता रहता है। यह हमें भक्ति के मार्ग से हटाकर सांसारिक बातों में लगा देना चाहता है। बहुत से भक्त आराधक संसार के माया मोह में पड़कर मार्ग से भटक गए।

4-परमेश्वर के प्रति गलत धारणा-

परमेश्वर के प्रति गलत धारणाएं भी स्तुति प्रशंसा में बाधा हैं।

5-धार्मिक परम्पराएं-

धार्मिक परम्पराएं भी स्तुति प्रशंसा के मार्ग में बाधा डालती हैं। यहूदियों की अनेक परम्पराएं भक्त जनों को स्तुति प्रशंसा करने में बाधा उत्पन्न कर रही थीं। आज के समय में लिखित एवं रटी रटाई आराधना पद्धति इसी प्रकार की बाधा है। जो हृदय से परमेश्वर की स्तुति प्रशंसा करने में बाधा है।

6-घमण्ड-

परमेश्वर की स्तुति प्रशंसा करने में घमण्ड बाधा है। घमण्ड के कारण हम झुकना नहीं चाहते हैं, अधीन नहीं होना चाहते हैं। हम समर्पित नहीं होना चाहते हैं। हमारा घमण्ड हमें सर्वनाश की ओर ले जाता है। आज लोग धन के घमण्ड के कारण परमेश्वर के वचनों को नहीं सुनना चाहते हैं। लोगों के पास इसी के कारण से भक्ति के लिए समय नहीं है।

7-मनुष्य से भय-

मनुष्य से भय भी स्तुति प्रशंसा के मार्ग में बाधा है। लोग परमेश्वर के भय में जीवन व्यतीत करने के बजाए मनुष्य के भय में जी रहें हैं। लोग क्या कहेंगे, क्या सोचेंगे, लोग हम पर हंसेंगे। लोग जान जाएंगे तो सताएंगे। लोग समाज से निकाल देंगे, हम अलग-थलग पड़ जाएंगे।

Creation Autonomous Academy

8-शैतानी प्रतिबन्ध-

शैतान स्तुति प्रशंसा के मार्ग में बाधा डालता है। वह नहीं चाहता कि लोग परमेश्वर की स्तुति प्रशंसा करें। शैतान तो चाहता है कि लोग उसकी इच्छा के अनुसार चलें। इसीलिए वह हमेंशा बाधा डालता है। वह ऐसी परिस्थितियां उत्पन्न करता है कि लोग स्तुति प्रशंसा करना छोड़ दें।

अध्याय-8

सेवा की बुलाहट और चुनौतियां

सेवा के लिए एक बुलाहट-

एक आधारभूत प्रश्न पूछने की आवश्यकता है- सेवा के लिए एक बुलाइट क्या है?

1-सेवा के लिए सही बुलाहट परमेश्वर की ओर से है।-

एक राजा अथवा एक साधारण मनुष्य के पास अपने स्वयं के दासों को चुनने का अधिकार है। एक 'सेवक' सेवक के बारे में अधिकता से सीखा है। एक राजदूत के पास कोई अधिकार नहीं है, वह जिस राज्य से आया है उसे उस राज्य की आज्ञा व अधिकार को स्वीकार करना है।जो भेजे नहीं गए और जो प्रभु के नाम से झूठी भविष्यद्वाणी करते हैं उन पर रो लगायी गयी है। सही पास्टर, सुसमाचार प्रचारक और शिक्षक उसके लोगों को उद्धारकर्ता के वरदान को दिखाते हैं।

यह महत्वपूर्ण है कि उम्मीदवार पवित्र आत्मा द्वारा घोषित किया जाए। लेकिन इस बुलाहट को कैसे जाना जाए? कैसे कोई सीखे कि वह बुलाया गया है?

2- जो प्रार्थना पूर्वक पूछते हैं परमेश्वर उनकी जिम्मेदारी को बताता है।-

प्रार्थनापूर्ण जीवन व्यतीत करने वाले लोगों को पवित्र आत्मा बुलाहट को बताता है। वह अपने सेवकों को जिन्हें चुना है प्रेरित करता है।

3-अभिषेक का सिद्धान्त सभी मसीहियों को चुनने में, अभियोग में व उनके कार्यों में प्रभु नियंत्रित करता है।-

प्रत्येक मसीही एक कीमत के साथ खरीदा गया है, और परमेश्वर की महिमा करने के लिए बाध्य है, दोनों शरीर और आत्मा उसके हैं। सभी समान रुप से छुड़ाए गए हैं। सभी अनारक्षित आज्ञाकारिता का पालन करते हैं। सभी सम्पूर्ण अभिषेक के उद्देश्य के लिए हैं। किसी भी कारण से कार्य दिए जा सकते हैं, क्यों मसीही फिजिसियन, व्यापारी, वकील या किसान उसके कार्य के लिए नहीं चुने जा सकते, और सेवक के रुप में प्रभु को आदर देने के लिए चुने हुए लोग ही होते है। चुनाव महत्वपूर्ण है। हमारा स्वामी क्या चाहता है।

4-सुसमाचार के सेवक के लिए किन गुणों की आवश्यकता है?-

धार्मिकता आवश्यक है। परमेश्वर की बुद्धि, ज्ञान, बोलने की क्षमता। सामान्य बुद्धि बहुत आवश्यक गुण है। चरित्र की शक्ति आवश्यक है। स्वयं का परित्याग। आत्मा के लिए परिश्रम करने वाला।

Creation Autonomous Academy

5-परमेश्वर का भविष्य सीधे बुलाहट को निश्चित करता है।

परमेश्वर है जो बुलाहट को निश्चित करता है। मृत्यु से आत्मा को बचाएं। यदि परमेश्वर ने किसी को प्रचार की बुलाहट दी है तो किसी को सुनने के लिए बुलाया है। सिखाने योग्य हो, धैर्यशील हो, अच्छी गवाही वाला हो।

6-भविष्य की सेवा के लिए कलीसियाओं की जिम्मेदारी महत्वपूर्ण है।-

जो फल न लाने वाले हों उन्हें सेवा में न लें। वचन में लिखित चरित्र उनमें हों। फसल तो पकी है पर मजदूर थोड़े हैं।

7-हमारे कलीसियाओं के युवाओं की जिम्मेदारी को प्रार्थनापूर्वक जांचने की मांग है।-

क्लीसिया में युवाओं को जिम्मेदारी देने के पहले प्रार्थनापूर्वक जांच करने की आवश्यकता है कि परमेश्वर ने उन्हें बुलाया है उस सेवा के लिए या नहीं।

इक्कीसवीं सदी के प्रचार के लिए चुनौतियां-

बहुसंस्कृतिवाद-

21 वीं सदी के प्रचारक के लिए बहुसंस्कृतिवाद की चुनौती है। जब काफी तेजी से बदलाव हो रहे हैं और विभिन्न संस्कृति के लोग प्रभु को अपना जीवन दे रहे हैं। वे एक साथ मिलकर आराधना कर रहे हैं। हमें यह जानने की आवश्यकता है कि क्या चीज उन्हें विभाजित कर सकती है और क्या चीज उन्हें एकताबद्ध कर सकती है। हम संकीर्ण विचारधारा को नहीं अपना सकते। हमें आनन्द पूर्वक इन दिनों में भाग लेना होगा। एक दिन हम सब नए आकाश और नयी पृथ्वी में एक साथ सहभागी होंगे। जहां सभी भाषा, लोग व जातियों के स्त्री और पुरुष परमेश्वर के सिंहासन के सामने इकट्ठा होंगे। पौलुस यहूदियों के लिए यहूदी व गैरयहूदी के लिए गैरयहूदी बना। (1 कुरि०9:19-23) अन्ताकिया की कलीसिया में यहूदी और गैरयहूदी दोनों थे।

बाइबल की निरक्षरता का बढ़ना-

सभी लोग बाइबल को नहीं पढ़ रहे हैं इसलिए उनके सामने वचन की व्याख्या करने की आवश्यकता है। अनुग्रह, विश्वास, पाप, अभिषेक व पुनरुत्थान को समझाने की आवश्यकता है। अन्यथा लोगों के भ्रमित हो जाने का खतरा है। उनके मनों से बहुत सारी बातों को निकालने की आवश्यकता है जो नए नए विश्वास में आए हैं और वचन से उन्हें सिखाने की व भरने की आवश्यकता है।

ज्ञान मीमांसा बदल रही है।-

ज्ञान मीमांसा बदल रही है इसलिए प्रचारकों को सावधानी वरतना होगा। परैलुस ने जैसा प्रचार पिसिदिया के आराध्नालय में किया वैसा ही प्रचार एथेन्स के बुद्धिजीवियों के बीच नहीं किया।

एकीकरण-

मसीही प्रचारक के लिए आवश्यक है कि वे परमश्वर के वचन से सोचें। बदलाव का अध्ययन करें व एकीकरण के बारे में सोचें। हम उस स्थान के अनुसार सेवा करें जहां परमेश्वर ने हमें रखा है।

बदलाव की गति-

21 वीं सदी में बदलाव की गति बहुत तेज है। यह गति हमें अनन्त सुसमाचार से दूर कर सकती है। हमारा कार्य है परमेश्वर के वचन की सच्चाई को लोगों को बताएं जो हमेशा स्वर्गीय हैउन स्त्री व पुरुषों के लिए जो पृथ्वी पर बहुत अधिक जी रहे हैं-एक तेजी से बदलती पृथ्वी।

प्रचारक के लिए आवश्यक है कि वचन का अध्ययन व अनुशासन दे, उसके लिए यह भी आवश्यक है कि वह अपने समय को भी समझे। यह पढ़ने, सेमिनार में समूह के साथ विचार विमर्श के द्वारा यह किया जा सकता है।

मोडलिंग और मेन्टरिंग-

प्रचारक को आदर्श शिक्षक का नमूना प्रस्तुत करना है। प्रेरित पौलुस ने इस बात को समझा कि उसका जीवन तीमुथियुस में कितना आकार ले रहा है। (2 तीमु० 3:10-11)हमारे सामने चुनौती है अपने फलवन्तता को बढ़ाने की हम इन दिनों में सिखाने के महत्व पर ध्यान दें।

Creation Autonomous Academy

भारतीय कलीसियाओं द्वारा सामना की जा रही चुनौतियां

पिछले दशक से अल्पसंख्यक समुदायों के साथ मसीही गम्भीर चुनौतियों का सामना कर रहे हैं। भारत में फासीवादी ताकतों के बढ़ने से चुनौती सातने आयी है। ये प्रमुख चुनौतियां मीडिया में लड़ी जा रही हैं। मसीही कलीसियाएं स्वयं इन चुनौतियों को हल करने के लिए तैयार नहीं हैं। कई भारतीय कलीसियाएं और मसीही समुदाय इस फासिज्म के आतंक के अन्दर जब इन चुनौतियों से प्रभावित होते हैं तब सक्रिय होते हैं। भारतीय कलीसियाओं द्वारा सामना किए जा रहे चुनौतियों को समझने के लिए यह सूची बनाना होगा कि कौन कौन कलीसियाएं राष्ट्रीय भवनों में संलग्न हैं। लगातार राष्ट्रीय भवनों में संलग्नता से चुनौतियां जुड़ी हुई हैं।

बीते दिनों में राष्ट्र निर्माण की भारतीय कलीसिया की भूमिका-

भारतीय कलीसियाओं के राष्ट्रीय भवनों की भूमिका को लेने से पहले, बीते दिनों में राष्ट्रीय भवनों में भारतीय कलीसियाओं द्वारा दिए गए योगदान को नोट करना होगा।

भारत की धर्मनिरपेक्षता के विचार पर प्रभाव-

रविन्द्रनाथ टैगोर के प्रभाव में इस भारत के विचार की खोज महात्मा गांधी ने आरम्भ किया, जवाहर लाल नेहरु ने बढ़ाया और बी०आर० अम्बेडकर ने इसे पुनः परिभाषित किया। बुनियादी पिताओं के अनुसार भारत का विचार जो उपर्युक्त है धर्मनिरपेक्ष और लोकतांत्रिक राष्ट्र है।

भारतीय कलीसियाओं की भूमिका भारत को धर्मनिरपेक्ष राज्य और लोकतांत्रिक राष्ट्र बनाने की थी। सती प्रथा व स्त्री हत्या के विरुद्ध प्रचार की अगुवाई विलियम केरी और राजा राम मोहन राय जो मसीही मिशनरियों से प्रभावित थे के द्वारा की गयी भारतीय कलीसियाओं के चिन्ह के रुप में भारत को एक धर्मनिरपेक्ष राज्य व लोकतांत्रिक राष्ट्र बनाने की भूमिका थी।

कुछ लोगों ने भारतीय परिवर्तनकारियों को प्रभावित किया जिन्होंने एक बहुत बड़ी भूमिका निभायी भारत को धर्मनिरपेक्ष राज्य व लोकतांत्रिक राष्ट्र बनाने में, फेडरिक सचवर्डज जर्मन मिशनरी त्रावणकुरम में जिन्होंने तुलसी राजा और मुस्लिम शासक हैदर अली को प्रभावित किया।

सीएफ एण्डू एक अन्य मिशनरी जिन्होंने निकटता से प्रभाव डाला महात्मा गांधी और जवाहर लाल नेहरु पर। बिसप वास्कोन पीकेट्ट अमेरिकन मेथोडिस्ट बिसप जो जवाहर लाल नेहरु, डॉ० बी०आर० अम्बेडकर और इन्दिरा गांधी से जुड़े थे।

जब गांधी की हत्या कर दी गयी, ये बिसप पीकेट्ट थे जिन्होंने लखनऊ मेथोडिस्ट चर्च में पहली मेमोरियल सर्विस किया। सिख व हिन्दू समुदायों के बीच जब अर्न्तविरोध हुआ तब राष्ट्रीय समस्या का पता लगाने में भी भाग लिया। बिसप पीकेट्ट भारतीय संविधान के जनक और दलित मुक्ति के मसीहा डॉ० बी० आर० अम्बेडकर के नजदीकी मित्र थे। डॉ० राधाकृष्णन ने बिसप पिकेट्ट की 1969 में राष्ट्रीय प्रभाव व सहभागिता पर भारतीय मसीहियों के प्रभाव के लिए सराहना किया।

भारतीय शिक्षा का प्रभाव-

अग्रणी मिसनरियों द्वारा शिक्षा में असाधारण योगदान है। इसके पहले कि सरकार ने स्कूल विकसित किया, ये मसीही मिसन हैं जिन्होंने स्कूल आरम्भ किया। भारतीय कलीसियाओं का शिक्षा में योगदान प्रत्येक भारतीय के घर में देखा जा सकता है।

अमेरिकन मिसनरियों ने पंजाबी, हिन्दी, उर्दू, मराठी और मनीपुरी में आरम्भिक व्याकरणों व शब्दकोषों को एकत्र किया व प्रकाशित किया। मिसनरियों ने सामूहिक शिक्षा को गति प्रदान किया यह सम्पूर्ण राष्ट्र की विरासत है।

Creation Autonomous Academy

स्त्री शिक्षा का प्रभाव-

भारतीय समाज में सांस्कृतिक रुप से शिक्षा महिलाओं के लिए नहीं थी। कोई लड़की पढ़ने और लिखने की क्षमता रखती थी तो उसे व्यवहारिक रुप से भोली लड़की माना जाता था और उसे आदरणीय स्त्री नहीं माना जाता था।स्थानीय अविश्वास की अपेक्षा मिसनरी विश्वास करते थे कि लड़कियों को शिक्षित किया जा कसता है और उन्हें बदला जा सकता है।

सम्पूर्ण भारत में लड़कियों के लिए पहला स्कूल मिसनरियों द्वारा सन् 1707 में त्रावणकोर में विकसित किया गया था। लड़कियों के लिए मन्नाह मार्शमन मुक्त विद्यालय सन् 1800 में सिरामपुर में और मिस इसाबेल्ला थोबर्न ने सन् 1870 में लखनऊ में अपने बरामदे में वोमेन कालेज आरम्भ किया और यह सम्पूर्ण एशिया का पहला वोमेन कालेज बना।

इदा स्कूड्डर दक्षिण भारत की मिसनरी थीं जिन्होंने वेल्लोर मेडिकल कालेज की सन् 1900 में वोमेन डॉक्टर और नर्सों को प्रशिक्षित करने के लिए स्थापना किया। और पुरुष को केवल सन् 1947 में प्रवेश दिया गया।

वर्तमान चुनौतियां-

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत में अनेक चुनौतियां हैं। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भी भारतीय समाज की गरीबी अभी भी वैसे ही है। फासीवादी ताकतें अनियंत्रित छोड़ दी गयी हैं जो भारतीय लोकतंत्र पर हमला कर रही हैं।

भारतीय धर्मनिरपेक्षता पर आक्रमण-

भारत का विचार गांधी द्वारा खोजा गया, नेहरु द्वारा बढ़ाया गया और अम्बेडकर द्वारा पुनः परिभाषित किया गया जो धर्मनिरपेक्ष व लोकतांत्रिक रुप में संविधान में प्रतिबिम्बित है।

हम, भारत के लोग, भारतीय संविधान को संप्रभु सामाजिक धर्मनिरपेक्ष लोकतांत्रिक गणराज्य के रुप में और इसके सभी नागरिकों की सुरक्षा के लिए ग्रहण करते हैं।

सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक न्याय, विचार,अभिव्यक्ति, धारणा, विश्वास और आराधना की स्वतंत्रता, स्तर और अवसर और सभी के बीच में बड़ाने की समानता, व्यक्तिगत रुप से भ्रातृत्व और राष्ट्र की एकता व सत्यनिष्ठा को बढ़ावा देना।

भारतीय संविधान के न्याय, स्वतंत्रता, समानता और भ्रातृत्व के अवयव पर भारत की फासिस्ट ताकतों द्वारा हमले किए जा रहे हैं। हिन्दू फासीवादी ताकतें भारतीय संविधान को बहुसंख्यक विरोधी और हिन्दुत्व विरेधी के रुप में देखती हैं, जिसके कारण उन्होंने एक नए भारत के विचार को अपनाया है, जो पूर्ण रुप से ब्रहमणवादी विचारधारा पर आधारित है। उनका नए भारत का विचार भारत को वैदिक संस्कृति, विश्वास और विचारधारा पर आधारित हिन्दू राष्ट्र बनाने का है।

Creation Autonomous Academy

एक बार जब अपने वर्जन का भारत को लागू करने में हिन्दुत्व सफल हो जाता है, धर्मनिरपेक्षता और लोकतंत्र भारत के प्रत्येक नागरिक जो न्याय, स्वतंत्रता, समानता और भ्रातत्व का आननद ले रहे हैं ले लिया जाएगा।

भारतीय धर्मनिरपेक्षता पर हमले का लक्षण जाति आधारित भेदभाव, जातीय आधारित भेदभाव, और विश्वास आधारित भेदभाव के खड़े होने में दिख रहा है। मुस्लिमों, मसीहियों और अन्य अल्पसंख्यकों पर हमले भारतीय धर्मनिरपेक्षता व लोकतंत्र पर हमले के ताजे संकेतक हैं।

फासिज्म का उत्थान-

भारत के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरु ने एक बार कहा,‘जब फासिज्म भारत में आएगा, यह समुदायवाद के रुप में आएगा।’ हम इसे देश के विभिन्न भागों में विभिन्न रुप में देख रहे हैं। भारत में आतंकी फासीवाद,

सांस्कृतिक फासीवाद, धार्मिक फासीवाद और राजनीतिक फासीवाद आदि है। इन फासिस्ट ताकतों के खतरे में नागरिकों का जीवन और उनके मौलिक अधिकारों पर हमले हो रहे हैं और समय समय पर परेशान करते हैं।

आतंकी से सम्बन्धित आतंक के नियंत्रण को राज्य व केन्द्र स्तर पर पूर्वी राज्यों, जम्मू कश्मीर और अब माओवादी प्रभावित राज्य जो पूर्णरुप से नियंत्रण में नहीं हैं में मापा गया है।

प्रमुख रुप से देश के लिए क्या चिंता है केसर फासीवदी ताकतों का उभार, जो धार्मिक अल्पसंख्यकों, दलितों और हिन्दू धर्मनिरपेक्ष नागरिक समाजों पर हमले करता है।

गोधरा कांड के दौरान गुजरात में, अरुन्धती राय की रिपोर्ट,'मानवाधिकार संगठनों ने कहा यह 2000 के निकट है। कई एक लाख लोग, अपने घरों को छोड़ने के लिए बाध्य हैं, अब शरणार्थी शिविरों में रह रहे हैं। महिलाओं के साथ बलात्कार हुआ है और सामूहिक बलात्कार हुआ है और माता-पिता की उनके बच्चों के सामने हत्या कर दी गयी है।

उड़ीसा कंधमाल जिले में ताजा ताजा मसीही सतावः 23 अगस्त 2008, एआईसीसी ने रिकार्ड कियाः 315 गांव बरबाद हो गए, 4640 मसीही घर जला दिए गए, 54000 मसीही बेघर हो गए, 6 पास्टर और एक रोमन कैथोलिक प्रीस्ट को मार दिया गया, 10 पास्टर्स व नन्स गंभीर रुप से घायल हैं, लगभग 18000 मसीही घायल हैं, दो महिलाओं के साथ बलात्कार हुआ है, 149 चर्चेज नष्ट कर दिए गए हैं, 13 मसीही स्कूल व कालेज नष्ट कर दिए गए हैं।

जनवरी 2009 में मंगलोर में मुस्लिमों और मसीहियों पर हमले के बाद उन्होंने महिलाओं पर हमले किए।

संघ परिवार के झूठे और घृणित प्रचार के साथ धार्मिक अल्पसंख्यकों के विरुद्ध हिन्दुत्व विचारधारा का प्रचार अदृश्य गति से सम्पूर्ण देश में आगे ले जा रहा है। हिन्दू राष्ट्र हिन्दुत्व की ताकतों का एजेन्डा है। हिन्दुत्व का गुप्त एजेन्डा ब्रहमणवादी श्रेणीक्रम है, जो ब्रहमणवादी राज्य के नीचे जाति आधारित समाज को सुनिश्चित करता है।

धर्मनिरपेक्ष धारणा वाले नागरिक और बिना जाति आधारित धर्म की उपस्थिति व्यवहारिक रुप से इस्लाम और मसीहियत उनके हिन्दुत्व फ्रन्ट के गुप्त एजेन्डे के लिए धमकी हैं।

जाति रंगभेद-

इस्लाम ने भारत पर कई शताब्दियों तक राज्य किया है प्रथम 715 ईस्वी अरब की अगुवाई में 1619 ईस्वी तक, ब्रिटिश ने लगभग 200 वर्षों और मसीही सेवकों की गवाही 2000 वर्ष से बोई गयी है। ये संसार के शक्तिशाली शासक और मसीहियत भारत की जाति रंगभेद को जड़ से नहीं उखाड़ सके।

भारत की 85 प्रतिशत जनसंख्या जो जाति श्रेणीक्रम के सबसे नीचे है उनके सामाजिक-आर्थिक और शैक्षिक जीवन प्रभावित हैं। जो जाति से बाहर दलित के नाम से जाने जाते हैं वे सबसे अधिक प्रभावित हैं। 3000 से अधिक वर्षों से दलित-बहुजन समुदाय के साथ उनके जन्म व जाति राज्य के नीचे दासता को वापस लाने के लिए अमानवीय तरीके से व्यवहार किया गया है।

विलियम विलफोर्स के पहलकदमी से 200 वर्षों पहले ब्रिटेन में ब्रिटिस दास प्रथा को खत्म कर सके। वही ब्रिटिस भारत में 200 वर्षों तक शासन किए लेकिन जातिवाद को खत्म करने के लिए कुछ नहीं किए। देश और विदेश के मसीही मिशन्स भारतीय संदर्भ में प्रभु यीशु के सुसमाचार के संदेश को लाने में असफल हो गए। सामाजिक अव्यवस्था के जाति श्रेणीक्रम को भारतीय व विदेशी मिशनों द्वारा अनदेखा किया गया क्योंकि केन्द्रीय ध्यान में मात्र आत्मा जीतने के व्यवसाय था।

इस कहानी का दुखद भाग यह है कि भारतीय कलीसियाएं न मात्र जाति श्रेणीक्रम को हटाने में असफल हुईं बल्कि यह व्यवस्था कलीसिया ढांचे में लायी गयी।

Creation Autonomous Academy

विभिन्न राज्यों में मसीही व अल्पसंख्यक विरोधी पॉलिसी-

तत्काल में भारत के 8 विभिन्न राज्यों में धर्मपरिवर्तन विरोधी बिल पास हुआ हैः उडीसा, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, अरुणाचल प्रदेश, तमिलनाडू, गुजरात, राजस्थान और हिमांचल प्रदेश। उडीसा, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, और हिमांचल में यह बिल सक्रिय किया गया है और इन पर बल दिया गया है। मसीही अल्पसंख्यक और दलित इन कानेनों के अन्तर्गत सताए जा रहे हैं। आल इण्डिया क्रिश्चियन काउन्सिल ने तमिलनाडू, गुजरात, राजस्थान और हिमांचल प्रदेश में धर्मपरिवर्तन विरोधी बिल का विरोध किया। हमने हिमांचल प्रदेश में स्वीकृति की सफलता पायी है।

इन राज्यों ने जो धर्मपरिवर्तन विरोधी बिल अपनाया है के गुप्त एजेन्डे द्वारा भ्रमित न हों। ये नियम मसहियों को लक्ष्य करके नहीं बनाए गए हैं कई मामलों में मसीही भगोड़े दण्डित किए गए हैं और कई मामलों में दुरुपयोग किए गए हैं। धर्मपरिवर्तन विरोधी बिल का मुख्य गुप्त एजेन्डा है जाति दबाव पर सवार होकर भारतीय दलितों को हिन्दुत्व छोड़ने से रोकना, अन्य धर्मों में परिवर्तन जो जाति को व्यवहार में नहीं ला रहे हैं उस पर रोक लगाना।

यह आन्दोलन बी० आर० अम्बेडकर के यह कहने के बाद आया कि **'यदि धर्म आपको दबाकर रखता है तो उसे छोड़ दें और उनके पास चले जाएं जो ऐसा नहीं करते हैं।'**

हिन्दुत्व से दलितों का स्थानान्तरण 55 वर्ष पहले आरम्भ हुआ जब बी० आर० अम्बेडकर ने नागपुर में 1956 में आन्दोलन का नेतृत्व किया 50,000 भारतीय दलितों के साथ हिन्दुत्व छोड़कर बुद्धवादी बन गए।

मानव तस्करी की चुनौतियां-

मनव तस्करी विश्वस्तर पर बड़े पैमाने पर दर्ज की गयी है। राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग के वरिष्ठ खोज अधिकारी सविता भाखरी ने कहा,'मानव तस्करी महिलाओं और बच्चों में अधिक है,यह अपराधिक कार्य का एक बढ़ता हुआ रुप है, अगला मात्र नशीली दवाएं और हथियारों का व्यवसाय है जो सालाना अनगिनत लाभ उत्पन्न कर रहे हैं।

भारत भी इससे प्रभावित है, जो एक बड़े मानवाधिकार उल्लंघन की धमकी को नहीं पहचान रहा है। मानव तस्करी के संगठित अपराध की चुनौती से महिलाएं और बच्चे प्रभावित हैं, विशेष रुप से जिन क्षेत्रों में लोग सामाजिक-शैक्षिक और आर्थिक पिछड़ेपन में रह रहे हैं। यह मानव तस्करी दासता के एक रुप की ओर ले जाती है। एक प्रश्न खड़ा होता है कि मानवाधिकार उल्लंघन के अपराध के परिणाम स्वरुप संगठित मृत्यु के प्रति चर्च का क्या प्रतिउत्तर है।

Creation Autonomous Academy

अध्याय-9
परिवार और सेवा में संतुलन बनाना

जैसे भी आप सेवा कर रहे हैं, चाहे पूर्ण कालिक कर्मी के रुप में, एक व्यवसायिक पास्टर के रुप में, अथवा एक सेवकाई स्वंसेवक के रुप में जब आप संतुलन की खोज में हैं यह आपकी सहायता करेगा।

आज हम आपके साथ परिवार, कार्य और सेवा में संतुलन बनाने की 7 मुख्य कुंजियों को बताना चाहते हैं जो हमारे पारिवारिक जीवन और सेवा में संतुलन स्थापित करने में हमारी सहायता करेंगी।

1-अपने प्रातः काल को उत्तोलित करें।

सफलता पूर्वक अपने जीवन और कार्यसारिणी में संतुलन बनाने के लिए प्रतिदिन के आरम्भ में मुख्य रुप से आरम्भ करें। आप अपने दिन को कैसे आरम्भ करते हैं यह आपकी सफलता को बताएगा।

आपका कुछ महत्वपूर्ण उत्पादक और ध्यान केन्द्रित समय प्रातःकाल भोर के समय पाया जा सकता है जब आपका मन और ध्यान दोनों एक ताजा आरम्भ करते हैं।

2-कार्यालय समय से छोड़ें।

यह एक समयबद्धता पर आधारित आवश्यकता है, यह आपकी कार्यसूची पर आधारित नहीं है। आप और अधिक घंटे रुककर कार्य को पूरा कर सकते हैं। लेकिन आप अपने आपको याद दिलाएं अपनी प्राथमिकताओं के क्रम में पीछे जाएं-परमेश्वर, परिवार, तब कार्य अथवा सेवा।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है यहां तक कि यदि हम सब कुछ पूरा कर लें, कल के लिए अभी भी करने के लिए बहुत कुछ है। हमें इतनी जल्दी क्यों छोटा बदलाव करना है हमारे कार्य की अपेक्षा हमारा परिवार?

इन दो प्रश्नों का आप कैसे उत्तर देंगे? पिछले समय कब आपने अपने कार्य को परिवार के खर्चे पर प्राथमिकता दिया? पिछले समय कब आपने अपने परिवार को अपने कार्य के खर्चे पर प्राथमिकता दिया? हममें से प्रत्येक इनमें से एक प्रश्न का ही उत्तर देता है।

यह समझने योग्य है कि यहां एक आश्यकता होगी और यहां तक कि मौसम होगा अथवा देर तक रुकने अथवा ज्यादा समय कार्य करना होगा, लेकिन यदि यह समय अधिक होगा तो हमारा परिवार इसे अवश्य देखेगा, और इसे देखने का उसे पूरा अधिकार होगा। हमारी प्राथमिकताओं के विषय में जो हम कहते हैं और हमारा परिवार जो प्राथमिकताओं के विषय में होते देखता है के बीच और अन्तराल हम नहीं दे सकते, बहुत व्यापक बनें। यदि हमारा कार्य सही में अधिक है और हमारे ऊपर दबाव बना रहा है, यहां आपको करने के लिए मैं क्या सुझाव दूंगा - रात में अपने सोने के समय से एक घंटा चुराएं एक घंटे बाद में रुकने के द्वारा अथवा एक घंटा पहले उठने के द्वारा, यदि यह एक घंटा प्रतिदिन चुराना नियमित आदत हो जाता है तो यह आपको अपने परिवार से दूर ले जाएगा।

Creation Autonomous Academy

3-एक दिन की छुट्टी लें।-

यदि आप चर्च स्टाफ हैं और आप अनुभव करते हैं कि अब और अधिक कार्य करना सम्भव नहीं है एक दिन की छुट्टी लेने के लिए यहां कुछ सुझाव हैं आपको इन्हें लेने की आवश्यकता है।

- अपने पास्टर से मिलें और उससे सहायता मांगें यह समझने के लिए कि कैसे आप अपने कार्य भार को कम कर सकते हैं।

- सही तरीके खोजें जो आप अभी कार्य कर रहे हैं उसे और कोई कर सकता है तो उस कार्य को उसे दें।
- जो चीजें समय खराब कर रही हैं या अनावश्यक हैं उनको कम करने के लिए पहचानना सीखें।

यदि आपके पास चुनाव नहीं है साधारण रुप से एक दिन की छुट्‌टी लेने के लिए क्योंकि आप व्यवसायिक अथवा कुछ अन्य परिस्थितियों में सेवा कर रहे हैं, मैं आपको उत्साहित करना चाहूंगा कि आप एक योजना बनाएं इस कार्य के लिए जो लंबी योजना न हो।

परिवार के साथ समय व्यतीत करें। एक दूसरे के साथ समय बिताएं व खेलें।

4-जो अनावश्यक है उसे खत्म करें।-

- क्या है जो आप अभी कर रहे हैं जिसे कोई और कर सकता है?
- क्या है जो आप अभी कर रहे हैं जिसे करना आप बन्द कर सकते हैं जिससे आपके संगठन में किसी चीज या किसी व्यक्ति पर नकारात्मक प्रभाव न पड़े।
- क्या है जो आप कर रहे हैं जिसके लिए किसी अन्य को करने के लिए प्रशिक्षित कर सकते हैं अथवा अपनी सेवा में किसी और को दे सकते हैं?
- क्या है जो आप कर रहे हैं जिसे कोई और कर सकता है उसे सौंपें जिससे आपको समय मिले कि आप वह कर सकें जिसे केवल आप ही कर सकते हैं?
- क्या चीजें हैं जिसमें आपका परिवार भाग ले रहा है जो सिर्फ जगह भर रहा है बिना वास्तविक योगदान के आपके सभी उद्‌देश्यों में एक परिवार के रुप में?

यदि आप संतुलन पाने के विषय में गंभीर हैं तो कुछ है जिसे आप अपने जीवन में कम करें और यदि आप वास्तव में चाहते हैं तो कार्यक्रम बनाएं।

5-जब सम्भव हो परिवार और सेवा को जोड़ें।-

गलत विचारों को न लें यहां पारिवारिक जीवन और सेवकाई के जीवन के बीच एक सही और सुनिश्चित रेखा है। यह ठीक उसी प्रकार है जैसे एक पत्थर से दो चिड़ियों को मारना।

सेवा केवल वह समय नहीं है जब आप एक परिवार के रुप में एक दूसरे के साथ समय बिता रहे हैं लेकिन अचानक से यह इन समयों में सम्मिलित है। जब आप सेवा में या विजिट में जा रहे हैं अपने बच्चों को अपने साथ ले जाना सीखें।

एक परिवार के रुप में एक दूसरे के साथ सेवाकाई में सेवा करना बहुत बड़ा तरीका बन सकता है आपके बच्चों के अन्दर प्रभु यीशु की सेवा करने का धैर्य देने का। एक माता-पिता के रुप में विजिटेसन और सेवा करने को खेल व आनन्दायक अनुभव बनाने में रचनात्मक बनें।

Creation Autonomous Academy

इसका अर्थ है कि सेवा के क्षेत्र में वे एक जिम्मेदारी को प्राप्त करें, पारिवारिक सेवकाई, व प्रभु की सेवकाई को एक साथ सामान्य एवं यादगार बनाएं।

6-अपने शाम की रक्षा करें।-

आवश्यक है कि शाम प्राथमिक रुप से परिवार का समय बने (एक सप्ताह में कम से कम 2-4 रातें)। उनके साथ एक योजना का अनुशरण करें क्रिया कलाप और भक्ति इत्यादि। आप चाहते हैं कि आपकी पत्नी व बच्चे भाग लें जब आप प्रत्येक शाम को घर आते हैं, और जब आप एक दूसरे के साथ कुछ विशेष चीजें करने की योजना बना रहे हैं कुछ भी चिल्लाकर न बोलें।

7-सहायता के लिए परमेश्वर को पुकारें।-

याकूब 1:5 में बाइबल कहती है परमेश्वर से बुद्धि मांगें, वह उसे आपको देगा।
प्रभु से प्रार्थना करें कि वह दिखाए कि परिवारिक जीवन और सेवकाई के जीवन में कैसे अच्छा संतुलन बनाएं। कुछ आत्मिक अगुवों से अपने जीवन में सहायता करने के लिए कहें कि किस तरह से आप प्रभावी तरीके से कार्य करते हैं उसका मूल्यांकन करें। वे जो सलाह देते हैं उसे लें और उसके अनुसार कार्य करें इससे आप और अधिक प्रभावशाली तरीके से कार्य कर सकेंगे।

- परमेश्वर आपकी सेवकाई में आपके परिवार को पीछे की सीट पर नहीं देखना चाहता।
- परमेश्वर आपकी सेवकाई में उसके साथ व्यक्तिगत समय से दूर नहीं रखना चाहता।
- परमेश्वर नहीं चाहता कि आप तनाव में रहें और अकेले आपने बोझ को उठाएं।

सेवा और परिवार के बीच संतुलन को बनाए रखना सम्भव है।

परिवार और सेवा में संतुलन बनाना-

1-एक परिवार की जिम्मेदारी-

गलती से कुछ लोग यह विश्वास करते हैं कि यदि वे परमेश्वर के कार्य की देखभाल करेंगे तो वह उनके परिवार की देखभाल करेगा। जैसे भी हो हमें यह याद रखने की आवश्यकता है हमारे पत्नियों व बच्चों के लिए हमारी जिम्मेदारियों के सम्बन्ध में परमेश्वर ने योजनाबद्ध मार्गदर्शन दिया है।

हमारे पास प्राथमिकता सूची हैः प्रथम परमेश्वर, द्वितीय पत्नी, तृतीय बच्चे, और चौथी सेवा।

क-विवाह परमेश्वर की योजना है-उत्पत्ति 2:20-25

1-स्त्री आदम की पसली से ली गयी है।
2-इस सम्बन्ध की प्राथमिकता - पद 24अ
3-वैवाहिक सम्बन्ध की एकता- पद 24ब
4-पारदर्शी सम्बन्ध पद 25
5-एकताका स्थायित्व मत्ती 19:3-6

ख- बच्चों का आनन्द- भजन 127:1-5

1-वे एक विरासत हैं
2-वे एक सम्पत्ति हैं न कि एक देनदारी
3-वे हमारे समय व ध्यान के लायक हैं
4-उन्हें हमारे प्रेम, चेतावनी और हमारी आवश्यकता है- इफि० 6:4

Creation Autonomous Academy

2-परमेश्वर द्वारा दी गयी सेवा की जिम्मेदारियां- 1 तीमु० 1:11-14

जैसे पौलुस, हम महसूस करें कि परमेश्वर ने हमारे लिए क्या किया है।

क- उसने हमें सुसमाचार समर्पित किया है
ख-उसने हमें सक्षम बनाया है
ग-वह हमारे लिए दयालू है
घ-उसने हमें अपना महान अनुग्रह दिया है

3- सेवा और परिवार विरोधी नहीं बल्कि पूरक हैं

परमेश्वर को मेरे परिवार और मेरी परमेश्वर प्रदत्त सेवा दोनों की आवश्यकता है फलवन्त बनने के लिए।

क-मै दोनों के लिए अवश्य धन्यवादी बनूंगा।

ख-मैं अवश्य दोनों की रक्षा करुंगा

ग- मैं अवश्य अपेक्षा को अनदेखा नहीं करुंगा

घ-मैं अवश्य समय के चोरों से रक्षा करुंगा

1-टीवी

2-कम्प्यूटर

3-अनुशासन की कमी

4-संगठन की कमी

5-प्राथमिकता बनाने की असफलता

च-मैं अवश्य आत्मा से भरा हुआ बनूंगा- इफि० 5:18

छ- मैं अवश्य परमेश्वर की बुद्धि रखूंगा-याकूब 1:6

'इसलिए चाहे खाओ या पीओ या जो कुछ भी करो सब कुछपरमेश्वर की महिमा के लिए करो' कुरि० 10:31

Creation Autonomous Academy

अध्याय-10

मसीही परिवार का नीतिशास्त्र

1- मसीही परिवार के नैतिक सिद्धान्त, मूल्य व नियम

1- मसीही परिवार के नैतिक सिद्धान्त-

1-ईमानदारी	6-समर्पण	11-निष्पक्षता
2-स्वामिभक्ति	7-कर्तव्यनिष्ठता	12-न्यायप्रियता
3-विश्वासयोग्यता	8-कर्मठता	13-पवित्रता
4-सत्यनिष्ठा	9-परिश्रम	14-क्षमाशीलता
5-आज्ञाकारिता	10-स्नेहशीलता	15-धैर्यवान

2-मसीही परिवार के नैतिक मूल्य-

- **स्वीकार्यताः** अपने से भिन्न विचार वाले का स्वागत करना।
- **सहानुभूतिः** दूसरों के दुखों को समझना।
- **सहयोगः** परिवार व मित्रों की सहायता करना।
- **साहसीः** कठिन कार्यों को करने की इच्छा।
- **समानताः** यह विश्वास करना कि सभी के अधिकार समान हैं। सभी का सम्मान करना।
- **निष्कपटताः** उचित सहभागिता बिना कपट के।
- **उदारताः** संसाधन देने की इच्छा। दूसरों की सहायता करना।
- **कृतज्ञताः** दूसरों का सम्मान करना।
- **ईमानदारीः** गम्भीर व सच्चा बनना।
- **सत्यनिष्ठाः** अपने नैतिक सिद्धान्तों व मूल्यों में बने रहना।
- **दयालुताः** दूसरों से अच्छा व्यवहार करना।
- **संरक्षणः** कार्य, विश्वास व उद्‌देश्य का संरक्षण करना।
- **नम्रताः** विनम्रता से अच्छे तरीकों का उपयोग करना।
- **सम्मानः** सभी का सम्मान करना।
- **उत्तरदायित्वः** जबाबदेह होना। जिम्मेदारी निभाना।
- **आत्मसंयमः** अपने शब्दों, कथन व व्यवहार में संयमित होना।
- **सहनशीलताः** अपने से भिन्न विचार, विश्वास, व्यवहार व अभ्यास वालों के लिए सही व्यवहार करना।
- **विश्वासयोग्यताः** कार्य को सही तरीके से करना। अपने कथन के प्रति सच्चे रहना।

Creation Autonomous Academy

3-मसीही परिवार के विशिष्ट नैतिक मूल्य-

- कथनी और करनी में अन्तर न हो।
- व्यक्तिगत अनुभवों को बांटना।
- अच्छे व्यवहार का उपहार देना।
- प्रभावशाली तरीके से बातचीत करना।
- समय का सदुपयोग करना।
- सभी का सम्मान करना।
- तालमेल बिठाना व समझौता करना।
- सहायता की मानसिकता रखना।
- धार्मिकता का सम्मान करना।
- किसी को दुख व नुकसान न पहुंचाना।
- शिक्षा से प्रेम करना।
- चोरी न करना।
- अच्छा कार्य करना व अच्छे को आगे ले जाना।
- दूसरों के प्रति हृदय से सहानुभूति रखना।
- एक दूसरे का बोझ उठाना।
- धन्यवाद करना।

4-मसीही परिवार के नैतिक नियम-

निर्गमन 20:3-17, व्यवस्था० 5: 7-21

- परमेश्वर से सम्पूर्ण प्रेम करें।
    - सच्चे एक परमेश्वर को मानें।
    - मूर्तिपूजा न करें।
    - परमेश्वर का नाम व्यर्थ न लें।
    - विश्रामदिन को पवित्र मानें।
- अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम करें।
    - माता-पिता का आदर करें।
    - हत्या न करें।
    - व्यभिचार न करें।
    - चोरी न करें।
    - झूठी गवाही न दें।
    - लालच न करें।

स्वर्गीय स्वर्णिम नियम-

मत्ती 5:3-7:24

- दीन हों।
- शोक करने वाले हों।
- नम्र हों।
- धार्मिकता के भूखे-प्यासे हों।
- दयावन्त हों।
- मन के शुद्ध हों।
- मेल कराने वाले हों।
- धार्मिकता के कारण सताव सहने वाले हों।
- निन्दा सहने वाले हों।
- पृथ्वी के नमक बनें।
- जगत की ज्योंति हों।
- अपने भाई पर क्रोध न करें।
- मेलमिलाप करने वाले हों।
- स्त्री पर कुदृष्टि न डालें।
- विचारों को शुद्ध रखें।
- सत्य बोलें।
- बुरे का सामना न करें।
- अपने बैरियों से प्रेम रखें।
- अपने सताने वालों के लिए प्रार्थना करें।
- सिद्ध बनें।
- दिखावा न करें।
- मनुष्य के अपराध क्षमा करें।
- कपट न करें।
- स्वर्गीय धन संचित करें।

Creation Autonomous Academy

- अपना दृष्टिकोण निर्मल रखें।
- चिंता न करें।
- किसी पर दोष न लगाएं।
- दूसरों की नहीं स्वयं की कमी को देखें।
- प्रार्थना करने वाले बनें।
- जैसा व्यवहार अपने लिए औरों से चाहते हैं वैसा ही औरों के साथ करें।
- स्वर्गीय मार्ग पर चलें।
- झूठी शिक्षा व झूठे शिक्षकों से सावधान रहें।
- स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चलें।
- वचन की शिक्षाओं का पालन करें।

प्रेरितों० 2:42-46

- अगुवों से शिक्षा प्राप्त करें।
- संगति रखें।
- प्रभु भोज में भाग लें।
- प्रार्थना करें।
- सामूहिक जीवन जिएं।
- एक मन हों।
- एक दूसरे की आवश्यकता का ख्याल रखें। गलातियों 5:19-23
- शरीर के काम न करें। गला० 5:19-21
- अपने अन्दर आत्मा के फल लाएं। गला० 5:22-23
  1-प्रेम
  2-आनन्द
  3-शांति
  4-धीरज
  5-कृपा
  6-भलाई
  7-विश्वास
  8-नम्रता
  9-संयम

2-मसीही परिवार के विभिन्न सदस्यों के लिए नैतिक नियम

क-परिवार में पति के लिए नैतिक नियमः-

1-अपनी पत्नी से अपने समान प्रेम करे-

पत्नी से किस प्रकार से प्रेम कर सकते हैं?

- प्रभु के समान बलिदानपूर्ण प्रेम करें।
- पूर्ण रीति से अपना हाथ बंटाकर।
- दूसरों के सामने आदर करके।
- बातचीत करके।

2-पति पत्नी से प्रेम करे-

- बुनियाद मसीह पर।
- क्या पत्नी आत्मिक रुप से मजबूत है?
- पत्नी को आत्मिक रुप से आगे बढ़ाएं।

3-प्रेम प्रदर्शित करने के लिए एक कदम आगे रखना होगा-

- पत्नी की खूबियों की तलाश कर उसको आगे बढ़ाएं।

Creation Autonomous Academy

4-अधिकार का प्रयोग प्रेम द्वारा करें-

- अधिकार का प्रयोग प्रेम व दीनता के द्वारा करें।(1 कुरि० 13)

पति की जिम्मेदारियां-

1-मुखिया-आदर्शः प्रभु के भय में
2-प्रेमी
3-शिक्षक (इफि० 6:4, उत्पत्ति 1:28)
4-याजक
5-संभालने वाला-रखवाला (1 पत० 3:7)
6-घर की आवश्यकताओं को पूरा करने वाला-प्रबंध करने वाला

ख-परिवार में स्त्री के लिए नैतिक नियम-

- नीति० 14:1 घर को बुद्धिमान स्त्री बनाती है।
- लूका 10:27 (1) परमेश्वर से प्रेम
  (2) अपने पड़ोसी से प्रेम
- नीति० 31:30 (1) परमेश्वर का भय मानने वाली स्त्री बुद्धिमान है।
  (2) जीवन से परमेश्वर की इच्छा पूरी हो।
- इफि० 5:22-24 (1) पति की अधीनता
  (2) प्रेम में खास उद्देश्य को पूरा करने के लिए समर्पण।
- 1 कुरि० 11:11, गला० 3:26-28 स्त्री-पुरुष एक समान हैं।

अधीनता क्यों-

- फिलि० 2:6-10 प्रभु यीशु की परमेश्वर के प्रति अधीनता।
- कुलु० 3:18 अधीनता जैसा प्रभु में उचित है।
- उत्पत्ति 2:18 सहायक।
  किस प्रकार से हम एक दूसरे के सहायक बन सकते हैं?

Creation Autonomous Academy

ग-माता-पिता के लिए नैतिक नियम-

1-बच्चों से प्रेम करें (तीतुस 2:4):-

- बच्चों को प्रभु यीशु मसीह की जानकारी हो ऐसी व्यवस्था करें।
- बच्चों को हरेक क्षेत्र में आगे बढ़ाएं।

2-बच्चों को सही करें (नीति० 3:11-12):-

- साथ बैठकर गलती महसूस कराएं।
- गलती महसूस कराने के बाद सजा दें।
- मां बाप एक स्तर पर एकताबद्ध खड़े हों।

3-बच्चों को अनुशासित करें (नीति० 13:24):-

- प्रेम द्वारा।
- परमेश्वर की बातों में आगे बढ़ाएं।

4-बच्चे परमेश्वर की आशीष हैं (भजन० 127:3-5):-

- बच्चों को समय दें उनसे बातचीत करें।
- बच्चों के मित्र बनें।

भावनात्मक आवश्यकताएं (भजन० 103:13-14):-

- उम्र बढ़ने के साथ उनकी उम्र के अनुसार उनसे सम्बन्ध रखें।(1 कुरि० 4:14-15)
- माता पिता बच्चों को अनुशासन में रखें।(इफि० 6:4, कुलु० 3:21)
- बच्चों को उत्साहित करें।
- बच्चों के प्रशिक्षण के लिए माता पिता जिम्मेदार हैं कि उन्हें प्रभु की शिक्षा में प्रशिक्षित करें।(नीति० 22:6)
- प्रशिक्षित करते समय बच्चों को जिम्मेदारी भी देना है।
- अच्छी बातें प्रशिक्षित करने के लिए स्वयं आदर्श बनें।

1-पालन-पोषण 2-अनुशासन 3-प्रशिक्षण

3-मनुष्य के व्यक्तित्व विकास के नैतिक नियम

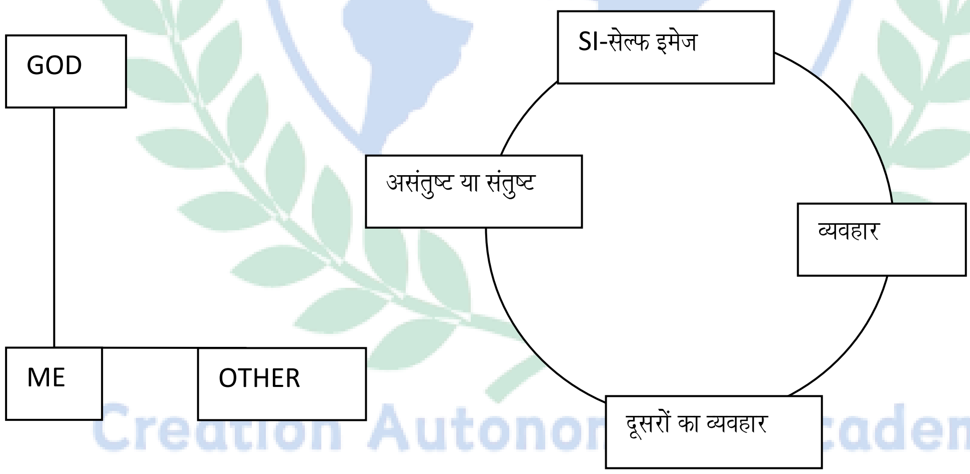

सेल्फ इमेज-अपने बारे में क्या सोचते हैं?

-अपने आपसे प्रेम करना।

मनुष्य के व्यक्तित्व का विकास करने वाली बातें-

- हम कैसे दिखते हैं?
- योग्यता
- माता-पिता (पृष्ठभूमि)
- वातावरण

दूसरों के दृष्टिकोण से देखना गलत है।

4-मसीही परिवार में वार्तालाप के नैतिक नियम-

विचारों का आदान-प्रदान-

- संचार का सही न होना समस्या उत्पन्न करता है।

संचार सही न होने के कारण-

- पहले से किसी कार्य में व्यस्त होना।
- एक दूसरे की रुचि का ध्यान न रखना।
- बिना बोली की भाषा (प्रतिक्रिया) 55 प्रतिशत
- आवाज 38 प्रतिशत
- पूर्वधारणा 7 प्रतिशत
- शब्द

सही संचार के लिए कुछ बातें-

- अच्छे सुनने वाले बनें।
- पूर्वधारणाओं से काम न लें।
- विचारों की भिन्नता संभव।
- गड़े मुर्दे न उखाड़ें (पुरानी बातों को न बोले)।
- चुप्पी न रखें।
- गलती मानने के लिए तैयार हों
- साथी को बोलने का मौका दें।

कुछ विशेष बातें-

- संस्कृति (पृष्ठभूमि)
- व्यस्त न हों-बातचीत का समय अवश्य निकालें।
- अनुशासन
- यौन सम्बन्ध
- पर्स-पैसे छिपाएं नहीं।
- रिश्तेदारों की समस्या-बुजुर्गों का सम्मान करें।
- दूसरों के लिए बोझ।
- पैसों की लालच का शक।
- बच्चे बुजुर्गों का सम्मान करें।
- बुजुर्गों से मिलने वाले का स्वागत करें।
- बुजुर्गों के स्वाद का खाना।

Creation Autonomous Academy

5-मसीही परिवार में नैतिकता स्थापित हो।-

- वचन के अध्ययन व प्रार्थना में कुछ समय व्यतीत करें।
- मसीही घर देश की रीढ़ की हड्डी के समान है।
- हम देश के लिए नमक हैं।
- मसीही घर सीखने की जगह है।-

क -एक दूसरे को क्षमा करना।
ख -एक दूसरे को प्रेम करना।
ग -टीम वर्क-एक दूसरे के साथ मिलकर कार्य करना।
घ -एक दूसरे की सेवा करना।
च -प्रार्थना करना

अध्याय-11

थकान से निपटना

यदि आप तनावग्रस्त हैं तो आप थकान के रास्ते पर हैं। जब आप थक गए तो सब कुछ अंधकारमय दिखता है देखभाल में शक्ति लगाना कठिन लगता है। अकेले अपनी सहायता के लिए कदम उठाना कठिन लगता है। अप्रसन्नता व थकान आपके कार्य, सम्बन्ध, और आपके स्वास्थ्य को प्रभावित करता है। यदि समय से इसकी पहचान कर ली जाए तो आप रक्षात्मक कदम उठा सकते हैं। यदि आप ने पहले से टूटे बिन्दु को पा लिया है तो आप अपने संतुलन को पुनः बना सकते हैं और पुनः सकारात्मक व सहायक अनुभव करना आरम्भ कर सकते हैं।

थकान क्या है?

थकान एक भावनात्मक, शारीरिक, और मानसिक तनाव का स्तर है। यह आता है जब आप अभिभूत अनुभव करते, भावनात्मक रुप से खाली अनुभव करते और मांग की पूर्ति कर पाने में अक्षम अनुभव करते हैं। जैसे- जैसे तनाव निरन्तर बना रहता है, आप रुचि व प्रेरणा को खोना आरम्भ करते हैं। थकान आपकी उत्पादकता और क्षमता को कम करता है, आप असहाय, निराश अनुभव करते हैं। आप अनुभव करते हैं कि आपके पास और अधिक देने के लिए कुछ नहीं है।

थकान का नकारात्मक प्रभाव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र पर पड़ता है आपके घर, कार्य, और सामाजिक जीवन इत्यादि। थकान आपके शरीर को बदल देता है यह आपको बीमार बना देता है जैसे सर्दी और फ्लू। यह आवश्यक है कि थकान से सही तरीके से निपटा जाए।

क्या आप थकान के रास्ते पर हैं?

सम्भवतः आप थकान के रास्ते पर हैं यदिः

- प्रत्येक दिन एक खराब दिन है।
- आपने कार्य व घर को ऐसे आगे ले जाना मानो यह क्षमता को बेकार करना है।
- यदि आप हमेशा थके रहते हैं।
- प्रमुख रुप से आपका दिन कार्यों पर खर्च होता है आप पाते हैं कि आपका मन कहीं और है या थका है।
- आप अनुभव करते हैं कि आप कुछ भिन्न नहीं कर सकते अथवा ऐसा नहीं कर सकते जिसका सम्मान किया जाए।

थकान के चिन्ह व लक्षण-

हम में से प्रत्येक के पास ऐसे दिन होते हैं जब हम असहाय, अतिरिक्त बोझ, अथवा असम्मानित महसूस करते हैं। जब आप ऐसा प्रतिदिन अनुभव करते हैं तो आप थकान की दिशा में हैं।

थकान एक प्रक्रिया है। यह एक रात में नहीं हो जाती, लेकिन यह आपको जकड़ सकती है। चिन्ह और लक्षण पहले आते हैं लेकिन समय बीतने पर थका देते हैं। आरम्भिक लक्षणों के बारे में सोचें खतरे की झण्डी जैसे कुछ गलत

हो रहा है जिस पर ध्यान देने की आवश्यकता है। यदि आप ध्यान दें और सक्रियता से अपने तनाव को कम करें, आप प्रमुख थकान से बच सकते हैं। यदि आप इसे अनदेखा करते हैं तो आप थक जाएंगे।

थकान के शारीरिक चिन्ह व लक्षण-

- हमेंशा थकान और खलीपन महसूस करते हैं।
- तेज सिरदर्द अथवा मांसपेशी का दर्द
- भूख अथवा सोने की आदत में बदलाव
- निम्न रोग प्रतिरोधक शक्ति अथवा तेज बीमारी

थकान के भावनात्मक चिन्ह व लक्षण-

- असफलता और आत्मसंदेह की समझ
- प्रेरणा की कमी
- असहाय, फंसा और पराजित अनुभव करना
- अलगाव, संसार में अकेला महसूस करना
- तेजी से सनकी और नकारात्मक दृष्टिकोण
- संतुष्टी की कमी और उपलब्धि का बोध

थकान के व्यवहारिक चिन्ह और लक्षण-

- जिम्मेदारियों से निकलना
- सामना करने के लिए भोजन, नशीली दवाइयों अथवा शराब का उपयोग करना
- अन्यों से अपने को नीचा करना
- अपनी निराशा को दूसरों पर निकालना
- विलम्ब करना,चीजों को पूरा करने में लम्बा समय लेना
- कार्य को छोड़ना या देर से आना और जल्दी चले जाना।

थकान व तनाव में अन्तर-

थकान सम्भवतः असम्बन्धित तनाव का परिणाम है, लेकिन यह अत्यधिक तनाव के समान नहीं है। तनाव, लम्बा, अत्यधिक भागेदारी,कई दबाव ये अत्यधिक मांग करते हैं शारीरिक, मानसिक जैसे भी, तनावग्रस्त लोग देख सकते हैं कि वे यदि सब कुछ प्राप्त कर लें नियंत्रण में रहकर, वे अच्छा अनुभव करेंगे।

दूसरी तरफ थकान पर्याप्त नहीं हैं के विषय में है। थकान का अर्थ है खालीपन और मानसिक रुप से थका, प्रेरणा की कमी और क्षमता से बाहर वहन करना। लोग थकान को दिखाते हैं उनकी अपनी परिस्थिति में सकारात्मक बदलाव की कोई आशा न देखना। यदि तनाव अनुभव करते हैं आप अपनी जिम्मेदारियों छोड़ रहे हैं, थकान एक अर्थ में

सब कुछ सूख जाना है। बहुत सारे तनावों के प्रति आप क्यों जागरुक हों, आप हमेशा नहीं देख पाते जब थकान आती है।

तनाव	थकान
अधिक भागेदारी के द्वारा चरित्रित करना	भागेदारी न करने के द्वारा चरित्रित करना
भावनाएं प्रतिक्रिया से अधिक हैं	भावनाएं हैं पा लिया
तात्कालिकताऔर सक्रियता को उत्पन्न करता है	असहायता और आशाहीनता को उत्पन्न करता है
क्षमता का खोना	प्रेरणा, आदर्शों और आशा को खोना
हमेशा कुछ गलत होने की आशंका की ओर ले जाता है।	अलगाव और अवसाद की ओर ले जाता है
प्राथमिक रुप से शरीर को नुकसान करता है	प्राथमिक रुप से भावनाओं को नुकसान करता है
समय से पहले आपको मार देगा	जीवन को बिना जीने योग्य बना देगा

थकान के कारण-

थकान आपके कार्य से आती है। लेकिन कोई जो अधिक कार्य का बोझ और अमूल्यांकित अनुभव करता है थकान के खतरे में है, कठिन परिश्रमी कार्यालय कर्मचारी जो साल में एक छट्टी नहीं पाता।

लेकिन थकान धीरे धीरे तनावपूर्ण कार्य अथवा जिम्मेदारियों के कारण नहीं आता, थकान में अन्य तथ्य, जैसे आपकी जीवन शैली और आपका व्यक्तित्व भी भाग लेते हैं। कैसे आप कार्य करते हैं और कैसे आप संसार को देखते हैं ये सब बड़ी भूमिका निभाते हैं कार्य व घर की मांग तनाव को बढ़ाते हैं।

कार्य से सम्बन्धित थकान के कारण-

- अपने आपको छोटा समझना अथवा आपके कार्य पर कोई नियंत्रण नहीं है
- अच्छे कार्य के लिए पहचान अथवा ईनाम की कमी
- अस्पष्ट या कार्य की अधिक मांग की प्रत्याशाएं
- ऐसा कार्य करना जो नीरस है अथवा चुनौतीभरा नहीं है
- अराजक अथवा उच्च दबाव के वातावरण में कार्य करना

जीवनशैली थकान के कारण-

- सामाजीकरण अथवा आराम के लिए बिना पर्याप्त समय के बहुत अधिक कार्य करना
- निकट, समर्थित सम्बन्धों की कमी
- दूसरों से पर्याप्त मदद लिए बिना बहुत सी जिम्मेदारियों को लेना
- पर्याप्त रुप से न सोना

व्यक्तित्व थकान के लिए भागेदारी कर सकता है-

- पूर्णतावादी प्रवृत्ति,कुछ भी पर्याप्त अच्छा नहीं है
- स्वयं को और संसार को देखने का निराशावादी दृष्टिकोण
- नियंत्रण में रहने की आवश्यकता, दूसरों को प्रतिनिधित्व देने की अनिच्छा
- उच्च प्राप्ति, टाइप ए व्यक्तित्व

कार्य करने के लिए समय-

जहां आपने थकान के चिन्हों को पहचान लिया है अथवा टूटन बिन्दु से गुजर चुके हैं

थकान को धक्का देने का प्रयत्न कर रहे हैं और लगातार भावनात्मक व शारीरिक गिरावट कारण है। अब वह समय है कि दिशा को बदलें यह सीखने के द्वारा कि थकान से बाहर आने और पुनः सकारात्मक व स्वस्थ अनुभव करने में आप स्वयं की कैसे सहायता कर सकते हैं।

पहचानें-थकान के चेतावनी चिन्हों के लिए देखें

वापस लौटें-तनाव का समर्थन और प्रबन्ध खोजने के द्वारा क्षति की पूर्ति करें।

लचीलापन-अपने शारीरिक और भावनात्मक स्वास्थ्य की देखभाल के द्वारा तनाव के लिए अपने लचीलेपन को बनाएं।

थकान से निपटने के लिए, अन्य लोगों की ओर मुड़ें-

जब आप थकान के मार्ग पर हैं, आप असहाय अनुभव कर सकते हैं। लेकिन आप बहुत अधिक नियंत्रण में हैं तनाव के जितना कि आप सोचते हैं। यहां सकारात्मक कदम हैं जिन्हें आप तनाव से निपटने के लिए आप ले सकते हैं और अपने जीवन को वापस संतुलित कर सकते हैं। उनमें से एक प्रभावशाली कदम है कि दूसरों तक पहुंचें।

समाजिक सम्पर्क तनाव का स्वाभाविक विषहर औषध है और आपके नर्वस सिस्टम को ठंडा करने और तनाव को कम करने का आमने-सामने एक अच्छा श्रोता लेना एक सबसे तेज तरीका है। व्यक्ति जिससे आप बात करेंगे वह आपके तनाव को ठीक करने की क्षमता नहीं रखता, वे मात्र एक अच्छे श्रोता बनें, दूरी बनाने अथवा न्याय किए बिना कोई जो आपको ध्यान से सुने।

वे जो आपके निकटतम हैं उन तक पहुंचें।: जैसे आपका सहभागी, परिवार और मित्र। आपका खुलना दूसरों के लिए एक बोझ न बने। प्रमुख मित्रों को विश्वास में लें इससे आपका सम्बन्ध मजबूत होगा।जो चीज आपको थका रहा है उसके विद्माय में न सोचने का प्रयत्न करें, जो समय आप अपने प्रिय के साथ बिताएंगे सकारात्मक व आनन्ददायक बनाएं।

अपने सहकर्मियों के साथ अधिक सामाजिक बनें।: जिनके साथ आप कार्य कर रहे हैं उन लोगों के साथ मित्रता विकसित करें ये आपको कार्य की थकान से निपटने में आपकी सहायता करेंगे। जब आप एक अवकाश लेंगे, उदाहरण

के लिए, अपने स्मार्ट फोन पर की तरफ ध्यान दिलाने की अपेक्षा, अपने साथियों के साथ शामिल हों। कार्य के बादहम एक साथ सामाजिक आयोजन का कार्यक्रम बनाएं।

नकारात्मक लोगों के साथ अपने सम्पर्क को सीमित करें।: नकारात्मक लोगों के साथ अपने को जोड़ना जो करेंगे कुछ नहीं लेकिन मात्र शिकायत करेंगे जो आपके मनोदशा को खराब करेंगे। यदि आप एक नकारात्मक व्यक्ति के साथ कार्य कर रहे हैं, तो उसके साथ समय बिताना कम करें।

एक कारण अथवा एक सामुदायिक समूह के साथ सम्पर्क करें यह आपके लिए व्यक्तिगत रुप से अर्थपूर्ण होगा।: एक धार्मिक, सामाजिक, अथवा सहायता समूह के साथ जुड़ना जो आपको अपने समान लोगों से बात करने के लिए कि कैसे प्रतिदिन के तनाव के साथ निपटें और नए मित्र बनाने के लिए एक स्थान देगा। यदिआपका कार्य एक व्यवसायिक संघ का है, आप बैठक में भाग ले सकते हैं और एक समान मांग के लिए दूसरों से बाचीत कर सकते हैं।

नए मित्र खोजें।: यदि आप अनुभव करते हैं कि आप किसी को नहीं मोड़ सकते तो देरी नहीं हुई है नयी मित्रता बनाएं और अपने सामाजिक नेटवर्क को बढ़ाएं।

देने की शक्ति

सहायक बनना दूसरे को सौभाग्य देता है और तनाव को कम करने में आपके सामाजिक क्षेत्र में सहायता कर सकता है।

अधिक समय लगाने की आवश्यकता नहीं है यह एक छोटी चीज जैसे दया का एक शब्द अथवा मित्रता भरी मुस्कान आपको अच्छा अनुभव कराएगी और आप दोनों को आपको व दूसरे व्यक्ति को तनाव कम करने में आपकी सहायता करेगी।

कार्य को आप जैसे देखते हैं उसकी पुनः रचना करें।-

आपके पास जो भी कार्य है आप अपने मानसिक स्तर को बदलें। अपने कार्य से बाहर आएं नए कार्य का चुनाव करें जिससे आप प्रेम करते हैं।

अपने कार्य में कुछ मूल्यों को खोजने का प्रयत्न करें।: आप ध्यान दें कि आपकी भूमिका कैसे दूसरों की सहायता करती है, उदाहरण के लिए अधिक आवश्यकतापूर्ण उत्पाद अथवा सेवा। ध्यान दें कार्य की ऐसी प्रत्याशा जिसमें आप आदन्दित हो सके, यहां तक कि हो सकता है यह दोपहर के भोजन के समय अपने सहकर्मियों के साथ चैट करना हो।अपने कार्य के प्रति अपने रवैये को बदलें जो आपको उद्देश्य और नियंत्रण पाने में आपकी सहायता कर सकती है।

अपने जीवन में संतूलन खोजें।: यदि आप अपने कार्य से घृणा करते हैं, अपने जीवन में और कही अर्थ और संतुष्टि के लिए देखें अपने परिवार, मित्रों, शौक अथवा सहायक कार्य। अपने जीवन के उस भाग पर ध्यान दें जो आपको आनन्द दे सके।

कार्य पर मित्र बनाएं।: मजबूत मित्रता थकान के प्रभाव को कम करने में सहायता कर सकती है। ऐसे मित्र जिनके साथ आप दिन के दौरान चैट कर सकें, मजाक कर सकें, ये अपूर्ण या कार्य की मांग से थकान कम करने में सहायता करेगा। अपने कार्य में सुधार करें।

छुट्टी लें।: यदि थकान अधिक है तो कार्य से एक पूर्ण अवकाश लेने का प्रयत्न करें। छुट्टी पर जाएं, बीमारी की छुट्टी का उपयोग करें, अस्थाई छुट्टी मांगें, स्वयं से कोई भी चीज हटाएं जो आपकी परिस्थिति को बदल सकती है। समय का उपयोग करें जो आप को पुनः भर सके और अन्य विधियों का उपयोग करें जो आपको स्वास्थ्य लाभ दे सकें।

प्राथमिकताओं का पुनः मूल्यांकन करें।-

थकान इस बात का चिन्ह है कि कुछ महत्वपूर्ण है आपके जीवन में जो कार्य नहीं कर रहा है। अपने आशा, लक्ष्य और स्वप्नों के विषय में सोचने के लिए समय निकालें। क्या आप कुछ चीज को अनदेखा कर रहे हैं जो आप के लिए महत्वपूर्ण है? यह अवसर हो सकता है जो आपको पुनः स्वस्थ बना सकता है, आपको वास्तविक रुप से प्रसन्नता दे सकता है और स्वयं को आराम करने, प्रतिबिम्बित करने और स्वास्थ होने के लिए समय दें सकता है।

सीमाएं बनाएं।: स्वयं को अधिक न फैलाएं। अपने समय हेतु निवेदनों के लिए 'न' कहना सीखें। इसके अपेक्षा कि सभी के लिए हां कहें कुछ के लिए न कहना सीखें।

तकनीकि से प्रतिदिन का एक अवकाश लें।: एक समय निश्चित करें जब आप पूर्ण रुप से अलग होंगे। अपने लेपटाप को दूर रखें, अपने फोन को बन्द रखें और ईमेल चेक करना बन्द करें।

अपने रचनात्मक पक्ष का लालन-पालन करें।: थकान का एक शक्तिशाली विषहरी रचनात्मकता है। कुछ नया करने का प्रयत्न करें, एक खेल आरम्भ करें, अथवा एक पसन्दीदा शौक को पुनः सामने लाएं। रचनात्मकता का चुनाव करें कोई भी ऐसा कार्य न करें जो आपके तनाव को बढ़ाता है।

विश्राम का समय बनाएं।: विश्राम की तकनीकि जैसे व्यायाम, ध्यान-मनन और गहरी सांस लेना विश्राम के प्रतिउत्तर के लिए शरीर को सक्रिय करें। विश्राम का एक स्तर तनाव के प्रतित्तर के विपरीत है।

बहुत सारा विश्राम करें।: रात में एक अच्छा विश्राम करने के द्वारा अपनी तनावपूर्ण परिस्थिति को कम करें।

कार्य पर स्थिर रहने के लिए अपनी क्षमता को बढ़ाएं।

थकान के कष्ट में निम्नलिखित आपकी सहायता कर सकते हैं।-

- तनाव को कम करना सीखें।
- कष्टदायी विचारों व भावनाओं का प्रबन्ध करें।
- तनाव व थकान को कम करने वाले कदमों को उठाने के लिए अपने आपको प्रेरित करें।
- कार्य व घर पर अपने सम्बन्ध सुधारें।
- आनन्द को पुनः स्थापित करें जो कार्य व जीवन को अर्थपूर्ण बनाए।

व्यायाम की प्राथमिकता बनाएं।: 30 मिनट का व्यायाम
स्वास्थ्य वर्धक भोजन द्वारा अपनी मनोदशा और शक्ति के स्तर की सहायता करें।: रिफाइन्ड और सुगर को कम करें।
जो आपकी मनोदशा पर प्रभाव डाल सकते हैं ऐसे उच्च भोजन को कम करें।: काफी, मोटापा बढ़ाने वाले, रसायन वाले भोजन, हार्मोन्स बढ़ाने वाले भोजन।
ओमेगा-3 खाएं जो आपके मनोदशा को बढ़ाएगा।
निकोटिन से बचें।: तम्बाकू
कम से कम मात्रा में अल्कोहल लें

थकान से निपटने के दस तरीके

1-कार्य करना बन्द कर दें।
2-आराम करें।
3-अल्कोहल व निकोटिन से एक छुट्टी लें।
4-भिन्न जिम्मेदारियां मांगें।
5-हृदय से किसी सहृदय की निकटता में जाएं।
6-कार्य को अधिक रुचिकर व खेल जैसा बनाने के रास्ते खोजें।
7-अपनी मेज से बाहर जाकर कार्य करें।
8-परिवार व चिकित्सा छुट्टी कानून का लाभ लें।
9-अधिक विश्राम, व्यायाम करें व अच्छे से खाएं।
10- अपना कार्य छोड़ें।

स्वयं को थकान से बचाने की सात रणनीतियां।

1-अपने जीवन में तनाव को कम करें।
2-डिजिटल अव्यवस्था में न फंसें।
3-अपने समय को बचाने के लिए रणनीति का उपयोग करें।
    1-प्रत्येक दिन अपने महत्वपूर्ण कार्य के लिए निर्बाध समय बनाएं।
    2-ध्यान केन्द्रित समय हो उस समय कुछ और न करें।
    3-प्रतिउत्तर के समय के चारों ओर प्रत्याशाओं को बनाएं।
4-छुट्टी लें और उत्पादक बनें।
5-अपने जीवन में कुछ रस्म रिवाज लाएं।
6- सुदृढ़ प्रयाश, नतीजा नहीं।
7-नियमित पुनरावलोकन सहित अपनी स्वजागरुकता को बनाएं।

Creation Autonomous Academy

अध्याय-12

परिवार के रुप में परमेश्वर की विश्वासयोग्यता का उत्सव मनाना

परमेश्वर अच्छा है---------सभी समय

परमेश्वर वास्तविक है और वह अपने बच्चों के लिए विश्वासयोग्य है। इसीलिए मसीहियत कार्य करती है। मसीही संसार में प्रमुख सकारात्मक लोग हैं। परमेश्वर की वास्तविकता और विश्वासयोग्यता के उत्सव में अपनी ओर लोगों को आकर्षित करने की क्षमता है। यह सचेत, आनन्दपूर्ण एवं सार्वजनिक रुप से परमेश्वर की विश्वासयोग्यता का उत्सव मनाने के द्वारा नकारात्मकता को प्रतिउत्तर देने का समय है।

उत्सव यादगार की अपेक्षा बड़ा है।-

यादगार और उत्सव में एक बहुत बड़ा अन्तर है। मसीहियत और अन्य विश्वासों के बीच उत्सव मनाने के अर्थ में बहुत बड़ा अन्तर है। प्रमुख धर्मों में यादगार घटनाएं हैं मुस्लिम करबला में मोहम्मद साहब के नाती हुसैन को याद करते हैं, बुद्धिस्ट बुद्ध के एक दांत अथवा पदचिन्ह को याद करते हैं। समस्या यह है कि यादगार भूतकाल से जुड़ी हैं ये वर्तमान या भविष्य से जुड़ी नहीं हैं। सही मसीहियत यादगार के बाहर जाती है। मसीही उत्सव मनाते हैं। जब विश्वास द्वारा सक्रिय होते हैं, उत्सव की धारा विश्वास से आती है कि परमेश्वर सर्वदाकाल का परमेश्वर है। उसका वचन सत्य है, उसकी प्रतिज्ञाएं पूर्ण होती हैं, और हमारा जीवन उसी में पूर्ण होता है, उसकी विश्वासयोग्यता सदा की है, जो कुछ भी हम करते हैं वह उसे देखता है। भजन 89:1-2, 121

बइबल आधारित मसीही वैधानिकता, अनजाने से डर, जो उन्होंने किया से स्वतंत्र हो सकते हैं। विश्वासी जानते हैं कि परमेश्वर वास्तव में है और वह बहुत हमारे निकट है वह हमसे चाहता है कि हम उससे व्यक्तिगत स्तर पर सम्बन्ध बनाएं और वह इसे समझता है जिसका हम मानवीय यात्रा में कदम-कदम पर सामना करते हैं। हमारी सहायता एक व्यक्ति में है कुछ भी ऐसा नहीं है जो वह न जानता हो। वह हमारी प्रत्येक गलतियों, धोखे को देखता है। वह एक पिता के समान प्रेम करता है। एक विश्वासयोग्य पिता की तरह वह अनुशासित करता है, अथवा शिक्षादेता है। (इब्रा० 12:4-11) यदि हम उपयोगी बनना चाहते हैं, तब आवश्यहता है कि हम देखें उसके हाथों को जो वह हमें प्रशिक्षित करने व तैयार करने में उपयोग कर रहा है। जो चर्च उसका उत्सव मनाएगा परमेश्वर उसे भिन्न बनाएगा। संसार देखेगा कि वह वास्तव में व अभी है। जो हमारे पास है वे उसे चाहेंगे। वे उसे समझने के लिए आएंगे कि परमेश्वर जीवित, अदभुत, संप्रभु, प्रेमी और जीवन जीने के लिए उपयोगी है।

Creation Autonomous Academy

प्रमाणों में पीछे जाकर देखना-

जब आप एक बच्चे हैं भविष्य सब कुछ क्षमतावान है। जब बाल सफेद हो जाते हैं और मील के पत्थर आते और चले जाते हैं तब क्षण प्रतिबिम्बित करते हैं कि क्या वास्तव में स्थान लेता है। जैसे मैं पीछे देखता हूं, मैं जानता हूं कि परमेश्वर वहां सभी जगह है। वह सभी चीजों को प्रदान करता है जिनकी हमें आवश्यकता है। उसकी उपस्थिति को मैं अपने साथ महसूस करता हूं, यहां तक कि अकेलेपन के समय में और अपने प्रिय खोने के समय में, ऐसे क्षणों में परमेश्वर हमारे है।

मैं सबसे पहले परमेश्वर की चेतना में आया जब मैं एक बच्चा था। जैसे मैं बूढ़ा हुआ मैं उसी तरह की हताशा, पीड़ा आदि में बढ़ा गिरा जैसे कोई भी व्यक्ति सामना करता है, परन्तु परमेश्वर ने हमें कभी नहीं छोड़ा। यीशु ने कहा,'मैं तुम्हें अनाथ नहीं छोडूंगा'। मैं उसकी उपस्थिति में गिरा खतरे के समय में, उसकी सुरक्षा हमने पाया, बीमारी में उसकी

क्षमता को पाया, निराशा में तैयार किया गया, कठिन समयों में प्रबन्ध की बंद्धि पाया और अदभुत अवसर के दरवाजे खुले।

परमेश्वर सभी जगह अच्छा है। जहां मैं जिन समयों में उसकी उपस्थिति को महसूस नहीं किया अथवा उसकी आवाज को नहीं सुना लेकिन अभी भी वह वहां था। कभी-कभी हमारा सामान चोरी हो जाता है, छुट्टी के दौरान हमारे मित्र या परिवार का सामान, पासपोर्ट, टिकट, और नकद चोरी हो जाता है ऐसे कमी के समय में भी वह उपस्थित होता है और कमी का सामना करने के लिए मुस्कराने के लिए अपना अनुग्रह प्रदान करता है। जब मुझे सताया गया, जब मेरे परिवार को बन्धक बनाया गया, जब मेरे पिता की मृत्यु हुई मैं अन्दर से रो रहा था वह वहां था (प्रका० 7:17)। मैं जानता हूं वह मेरे जीवन के प्रत्येक दिन में मेरे साथ होगा। (यशायाह 46:4) वह किसी ऐसी परीक्षा में नहीं पड़ने देगा जो मेरे सहने से बाहर है उससे बचने का उपाय भी करेगा (1 कुरि० 10:13) मैं अपने परिवार के भविष्य के कल्याण के लिए उस पर भरोसा कर सकता हूं। बाइबल के लोगों के समान, हम सभी समय कह सकते हैं,' यहां तक परमेश्वर ने हमारी सहायता की है (1 शैमु० 7:12) वह अपने बच्चों के लिए विश्वासयोग्य है।

परमेश्वर की विश्वासयोग्यता मानवीय परिस्थितियों से महान है।-

बाइबल बताती है कि सभी चीजों के लिए एक समय और एक मौसम है। मजबूत से मजबूत मसीही भी जीवन और मृत्यु, स्वास्थ्य और बीमारी, बहुतायत और कमी, का सामना करेंगे। चीजें सभी समय अच्छी नहीं होंगी। अय्यूब देखता है कि कभी-कभी परमेश्वर अनुमति देता है कि बुरी चीजें हों (अय्यूब 2:10) दानिय्येल के जीवन में कोई अर्थ नहीं है। बाइबल बांझ को गाने के लिए आज्ञा देती है जहां पर इसके लिए कोई कारण नहीं है (यशायाह 54:1) यहां तक कि धर्मी लोगों को भी परीक्षाओं का सामना करना पड़ता है। हम महसूस करते हैं कि कठिन समय में आराधना करना कठिन है। लेकिन आराधना हमारे विषय में नहीं है, यह परमेश्वर के विषय में है। यह हमारे परम्पराओं और प्रत्याशाओं द्वारा नहीं चलती बल्कि उसके द्वारा चलती है। स्वभाव से हम स्वार्थी और घमण्डी हैं। हम अपनी भावनाओं को प्रकट करना कठिन पाते हैं। हम स्वयं के बारे में सोचने के लिए प्रशिक्षित हैं जब चीजें अच्छी हो रही हैं। मसीही ऊंचे-नीचे सम्बन्धों में नहीं हैं न ही परिस्थितियों में व्यक्तिगत भावनाएं। यह पीछे देखना है जिसे हम आंक सकते हैं जो सब कुछ चला गया है और यह देखना किपरमेश्वर का हाथ हमें थामे है और उसकी आत्मा हमें खड़ा कर रही है। (भजन 3:20) जैसे यीशु हमें याद दिलाता है, परमेश्वर एक जीवन का परमेश्वर है अभी, परमेश्वर उससे कहीं अधिक कर सकता है जितना हम सोचते अथवा मांगते हैं (इफि० 3:20) वह कहता है 'यदि तुम मुझे पुकारो मैं तुम्हें उत्तर दूंगा।' (यिर्मयाह 33:3, भजन 50:15) मित्रों की देखभाल सीमित है पर परमेश्वर की असीमित। परमेश्वर हमें हटाने की अनुमति नहीं देगा (भजन 55:22) कुछ भी उसके हाथ से हमें अलग नहीं कर सकता (यूहन्ना 10:28-29) उसने हमसे विश्राम की प्रतिज्ञा की है (मत्ती 11:28) हम हमारे सभी कुछ के लिए उस पर भरोसा कर सकते हैं एक जीवन शैली का चुनाव हेतु। हम जानते हैं कि उसने हमारी परिस्थितियों में सभी कुछ घटित होने के लिए बनाया है कि हमारे लिए भला करे (रोमि० 8:28) और वह गिरने से बचाएगा (1 कुरि० 1:8, ६, यहूदा 24)

कैसे परमेश्वर अपनी विश्वासयोग्यता को दिखाता है।-

परमेश्वर विश्वासयोग्य है। परमेश्वर अपने बच्चों के लिए व अपने वचन के लिए सत्य है। वह सब कुछ को थामे हुए है (इब्रा० 1:3)। यदि वह एक क्षण के लिए अपना हाथ हब ले तो संसार अनियंत्रित हो जाएगा। जो सांस हम लेते हैं उसके लिए हमें उसकी आवश्यकता है। बाइबल कहती है क्योंकि उसी में हम जीवित रहते, चलते फिरते और अस्तित्व में रहते हैं (प्रेरितों० 17:28) यदि वह अपना हाथ हटा लेगा तो हम मर जाएंगे। इसलिए हमारा परिवार प्रत्येक

Creation Autonomous Academy

भोजन पर उसे धन्यवाद देता है, एक चेतावनी के रुप में कि वह हमारा निर्वाहक है। सब कु उसी की ओर से आता है। परमेश्वर की भलाई का उत्सव मनाना स्वयं के जीवन का उत्सव मनाना है।

कई प्रकार से मसीही परमेश्वर की विश्वासयोग्यता का अनुभव करते हैं। उसकी उपस्थिति दुख के समय, प्रलोभन में उसकी सामर्थ्य, उसकी विश्वासयोग्यता हमें बुद्धि देती है कि हम अपने मानवीय सम्बन्धों में कैसे बुद्धिमानी से जिएं, उसके वचन व लोगों द्वारा , हम विश्वास कर सकते हैं कि वह हमारे मन में हमारा परमेश्वर है। परमेश्वर अपनी विश्वासयोग्यता सम्बन्धों में रखने के द्वारा दिखाता है, परिवार जैसे, अथवा अनुभवी मसीहियों को अगुवे व शिक्षकों के रुप में देकर हमारे आत्मिक देखभाल के लिए (इब्रा० 13:17) जो भी होता है उसमें एक परिवार के पिता के रुप में दिखता है, एक पास्टर भेंड़ों की रखवाली करते हुए (भजन 23) यहां तक कि अपने लोगों की मृत्यु के अन्दर (भजन 116:15)

परमेश्वर ने अपना वचन रखा है। वह अपनी प्रतिज्ञा पाप क्षमा करने के प्रति विश्पासयोग्य है जब हम अंगीकार करते व क्षमा मांगते हैं (1 यूहन्ना 1:9) जब हम विश्वासपूर्वक प्रार्थना करते हैं वह सुनता है और उत्तर देता है। वह विश्वासयोग्य है जो कहता है वह करता है (भजन 143:1, 1 यूहन्ना 5:14-15) यहां तक कि व्यक्तिगत या राष्ट्रीय आवश्यकता के समय भविष्यद्वक्ता यिर्मयाह घोषित करता है कि परमेश्वर की विश्वासयोग्यता महान है (विलापगीत 3:23)। विश्वासयोग्यता उसके चरित्र का भाग है और उसके प्रतिज्ञा पर आधारित है (भजन 132:11, मीका 7:20) उसने अपना अनुग्रह दिया है उस सब को करने के लिए जिसकी हमें आवश्यकता है (2 कुरि० 9:8, 12:9-10) हमारे परमेश्वर जैसा कोई परमेश्वर नहीं है।

अध्याय-13
प्रलोभन एवं शमन

मसीहियत में प्रलोभन क्या है?

प्रलोभन एक व्यक्ति को जानबूझकर फुसलाना है, कुछ चारा द्वारा-घमंड, सभी जगह आत्म संतुष्टिदायक-परमेश्वर के प्रकाशित वचन का उल्लंघन करने के लिए। विधेय सम्भवतः शैतानी अथवा कामुक, लेकिन उद्‌देश्य सब जगह परमेश्वर के संसार को नष्ट करना और संसार में परमेश्वर की सेवा की आज्ञा का उल्लंघन करनाहै।

प्रलोभन और मूल पाप-

प्रलोभन उतना ही पुराना है जितना अदन का बगीचा। सर्प रुप में शैतान ने हमारे प्रथम माता-पिता आदम हव्वा को लालच दिया। वे झूठ के लिए गिर गए, जो उन्हें खुश किया, और उनकी अगुवाई मृत्यु व हानि के फंदे की ओर किया। पूरी बाइबल प्रभु यीशु में परमेश्वर के उद्धार की योजना का खोलना है।

मसीह का प्रलोभन-

हमारा प्रभु यीशु दूसरा आदम आत्मा द्वारा जंगल में ले जाया गया जहां शैतान ने उसकी परीक्षा लिया (मत्ती 4:1)। प्रभु की अगुवाई द्वारा उद्धारकर्ता शैतान द्वारा परखागया था। (मरकुस 1:13, मत्ती 4:1-11, लूका 4:1-13) शैतान ने यीशु से कहने प्रयत्न किया ईश्वरत्व और मानवता उसकी प्रवंचना है इन तीन तरीकों सेः

1-शैतान ने भोजन की आवश्यकता को पूरा करने के लिए प्रभु यीशु को रोटी बनाने की आज्ञा दिया।

2-शैतान ने यीशु को आज्ञा दिया कि वह अपने को मंदिर के शिखर पर से गिरा दे स्वयं को बचाने की शक्ति को दिखाने के लिए।

3-अन्त में, शैतान ने प्रभु यीशु को संसार का सारा राज्य देने को कहा यदि वह शैतान को झुककर दण्डवत करे तो।

आदम और हव्वा जहां असफल हुए, यीशु विजयी हुआ। जंगल में विजय आदम के परिवर्तन का चिन्ह मात्र नहीं है, लेकिन जंगल में इस्राएल की असफलता और मनुष्य का बड़ा पतन है।

प्रलोभन का अर्थ-

प्रलोभन वर्तमान में विश्वासी के लिए और संसार में मसीह के कार्य के लिए खतरा है। प्रलोभन यह भी दिखता है कि दोनों मसीह की विजय की क्षमता द्वारा और हमारे स्वयं के जीवन में विश्वासी के पास विजय है। हम सुरक्षित हैं मसीह की धार्मिकता में जो मसीह द्वारा जीती गयी उसके जीवन में रहने और हमारे पापों के लिए उसकी मृत्यु द्वारा जीती गयी। हम प्रलोभन से बचाए गए हैं आन्तरिक मनुष्य के मजबूत करने के द्वारा, हमारे सभी भागों के पवित्र किए जाने और अनुग्रह की देखभालपूर्ण उपस्थितिः वचन, संस्कार और प्रार्थना।

'जिस प्रकार आदम में सब मरते हैं, उसी प्रकार मसीह में सब जिलाए जाएंगे।' (1 कुरि० 15:22)

प्रलोभन पर यीशु की विजय सरक्षित करती है कि एक पवित्र परमेश्वर के पहले हमें धार्मिकता की आवश्यकता है। लेकिन हम यह न समझें कि हम यीशु में छिपाए गए हैं इसलिए हम प्रलोभन से छूट गए हैं। हम नहीं हैं। यह प्रलोभन का एक बहुत ही खतरनाक रुप है कि इस पर अन्य तरीके से विश्वास करें। यह सही है कि हम अपने चारों ओर प्रलोभन को दूर रखने के लिए आत्मिक तटबंध बनाएं।

परिक्षण और प्रलोभन-

यह महत्वपूर्ण है कि प्रलोभन पर बाइबल की शिक्षा को देखें। 'हमें परीक्षा में न डाल' हम प्रार्थना करें, यह शैतान से हमें छुड़ाती है। लेकिन प्रेरित याकूब घोषणा करता है कि परमेश्वर हमारी परीक्षा नहीं करता (याकूब 1:3)।

Creation Autonomous Academy

मात्र शैतान परमेश्वर के विरुद्ध विरोधी बनाता है। क्यों हम प्रार्थना करें 'हमें परीक्षा में न डाल' यदि परमेश्वर परीक्षा नहीं करता? यह भ्रमित कर सकता है।

यह भ्रम दूर होता है जो बाइबल सिखाती है उसकी समझ के द्वारा कि यहां एक अन्तर है 'प्रलोभन' जो शैतान का, देह और संसार का है, और परीक्षा जो परमेश्वर का है।

प्रलोभन के विषय में क्या करें?-

एक वचन में एक अच्छा उपाय है प्रलोभन के लिए इससे छुटकारा मसीह पर विश्वास द्वारा मिलेगा। 'परमेश्वर के अधीन हो जाओ। शैतान का सामना करो तो वह तुम्हारे पास से भाग जाएगा' (याकुब 4:7)।

प्रलोभन की ताकत खत्म होगी जब यीशु का प्रेम हमारे आवश्यकताओं को संतुष्ट करेगा।

यदि आप परीक्षा में असफल होते हैं पतरस के समान (मत्ती 26:69-75) अथवा ललचाए और फंसाए जाते हैं, दूसरों के समान, परमेश्वर का अनुग्रह और प्रेम पाप की बहुलता से आपको बचाएगा। प्रभु यीशु आपसे प्रेमत करता है। उसने ऐसा जीवन जिया जो आप नहीं जी सकते। जिस मृत्यु में हमें मरना था उसमें वह मरा। उसने हमें अनन्त जीवन दिया उन सब के लिए जो उसकी ओर मुडते हैं। यह सुसमाचार का संदेश स्वयं में प्रलोभन की ताकत से हमारी सुरक्षा करता है।

शमन

शमन की प्रभावशाली रणनीतियां-

1- खतरे को अच्छी तरह समझें।
2- संकट के स्तर पर पहुंचने के पहले पहचानें
3-खतरे की चेतावनी सही, पूर्ण व जल्दी दें
4-जिम्मेदार लोग चेतावनी को समझें और कदम उठाएं

बातचीत

प्रभावी शमन के लिए बातचीत की आवश्यकता है कई भिन्न स्तर पर कई समूहो के बीच जो संकट में हैं:

- विशेष समुदाय के साथ
- पास्टर्स व सलाहकारों के बीच
- विशेषज्ञों और लोगों के बीच

शमन की योजना बनाएं।

Creation Autonomous Academy

योजना और लागूकरण

प्रलोभन के शमन के लिए योजना बनाने और उसे लागू करने की आवश्यकता है:

- खतरे का विश्लेषण
- योजना और नियमितता
- आपातकालीन योजना
- समस्या समाधान
- पहलकदमी

शमन की सामाजिक प्रत्याशा-
शमन हेतु समाज की क्या प्रत्याशाएं हैं?

अध्याय-14
धन्य परिवार

धन्य परिवार का जीवन-

1-धन्य परिवार एक अच्छा उदाहरण बनेगा।-

धन्य परिवार सम्पूर्ण भविष्य की सेवा का अनुभव करेगा। एक परिवार में एक जोड़ा और बच्चे हैं। परिवार आदतों का दास नहीं बनेगा। परिवार आरम्भिक बिन्दु पर चार पदों की बंनियाद है। एक पति-पत्नी की यहां आवश्यकता है। आप मूल मानदण्ड जो परमेश्वर की आवश्यकता है उसके साथ एक हो सकते हैं।

एक परिवार की स्थापना में-बुनियादी स्तर पर, जब एक पत्नी पति में समाती है, जब एक पति पत्नी में समाता है, और जब बच्चे एक हो जाते हैं, परिवार धन्य होगा। अब परिवार के उद्धार की उम्र है। हम परिवार को पुनःस्थापित करेंगे, असकी अपेक्षा यहां कोई अच्छी गवाही नहीं है। टूटे दिनों में एक जोड़ा बच्चों का हाथ पकड़कर आंसुओं में प्रार्थना करेगा, इसलिए बच्चे अपने माता-पिता को सुनकर गीत गाएंगे जब वे घर से बाहर हैं।

अब से हम एक खतरे को काटते हुए चीजों को सम्मानजनक करेंगे। आप इसे अपने आप से नहीं करेंगे। अनोखी कलीसिया स्वर्ग के राज्य को स्थापित करेगी, इसलिए हम परिवार के लिए देख रहे हैं, न कि व्यक्तिगत। क्या आप समझ रहे हैं। हमारी कलीसिया में परिवार का विभाग बहुत ही महत्वपूर्ण पद होगा। एक व्यक्ति जो पारिवारिक जीवन में एक अच्छा उदाहरण नही होगा विश्वस्तरीय दोष को प्राप्त करेगा।

आशीषें जिम्दारियों की शर्तों को पूरा करने के बाद सम्माननीय हैं। पुरुष पहले संषर्ष की रचना न करे और स्त्री अपने मुंह के साथ सावधान रहे। बाहरी संसार की तरह की शोषण की भाषा का प्रयोग न करें। कुछ तरीके से वे भिन्न हों। परिवार छोटी कलीसिया है, यह स्वर्ग की एजेन्सी है। इस प्रकार के परिवार से परमेश्वर भेंट करना चाहता है। कम से कम तीन परिवार एक घर को चलाते हैं। प्रथम एक परिवार स्थान बनेगा जहां बहुत लोग आ जा सकते हैं, पुरुषों के बीच नम्रता एकता महत्वपूर्ण है। द्वितीय स्वर्गीय परिवार एक में एकताबद्ध हों। कम से कम एक परिवारों की त्रियेकता पूर्णरुप से एक हो।

हम परिवार पर केन्द्रित हैं, न कि व्यक्तियों पर। इसका यह मतलब नहीं है कि परिवार को केन्द्रित करने के लिए सब कुछ को काट दिया जाए, इसकी अपेक्षा परिवार को केन्द्रित करने के लिए सब कुछ जुड़ जाए। नैतिक जीवन पर्याप्त नहीं है। कई बार अधिक पहलकदमी की आवश्यकता होगी।

दुष्ट की चुनौतियों से जीवन से हम कई बार थक जाएंगे। जब आप अकेले थे उसकी अपेक्षा परिवार स्थापित करने के बाद आपको और अधिक पहलकदमी लेनी होगी।

परिवार ध्यान को सही करने के लिए है। इस वास्तविकता को हम नहीं छोड़ सकते हैं। सम्बन्ध सामने और पीछे, दाएं और बाएं, ऊपर और नीचे एक परिवार में स्थापित होंगे।

जिस प्रकार का विश्वास आप बीते दिनों में रखते थे पर्याप्त नहीं है, न ही पहले की एकतरफा मनोवृत्ति ही पर्याप्त है।

जब आप अकेले थे व्यक्तिगत प्रार्थना काम करती थी, लेकिन यदि परिवार में एक विरोधी व्यक्ति है, तो परिवार एक साथ समस्या का सामना करेगा, अलगाव के क्रूस की सेना अन्यथा मूल मानदण्ड प्राप्त होगा। व्यक्तिगत रुप में रेलरोड कार के समान है और परिवार लोकोमोटिव के समान है। व्यक्तिगत गलती को पुनःस्थापित करना सरल है लेकिन पारिवारिक गलती पुनरुत्थान की तरफ ले जाती है।

परिवार महत्वपूर्ण है। यदि एक सहभागी असफल होता है, कोई सम्बन्ध नहीं बन सकता। जब एक कुंवारी या कुंवारा प्रेम में हैं, वे वास्तव में वे अपने सभी आदर्शों को भूल जाते हैं। हमारे लिए सभी कुछ का आरम्भिक बिन्दु परिवार

Creation Autonomous Academy

है। जब आप अपने स्वयं की सोच के साथ अन्दर लड़ते हैं,राष्ट्र, स्वर्ग और पृथ्वी प्रभावित होती है। परिवार सम्पूर्ण है जिसके द्वारा हम सांस ले सकते हैं।

एक अच्छे अगुवे से मिलने पर व्यक्तिगत विश्वास अच्छी तरह से बढ़ सकता है, लेकिन एक परिवार में, सभी एक दूसरे के लिए अगुवे होंगे।

एक परिवार में माता-पिता और बच्चों के बीच पूर्ण एकता के बुनियाद की आवश्यकता है। लेकिन क्या धन होगा यदि वहां राष्ट्र नहीं है, यहां तक आपके पास बहुत सारे बच्चे हैं? कुछ भी उपयोगी नहीं होगा यदि वहां कोई राष्ट्र नहीं है।

अपने आदर्श नमूनों को वास्तविक नमूने के रुप में न लें। वे नमूनों में अच्छे पिता हैं जो आदम के बाद पैदा हुए, लेकिन कई प्रकार से वे परमेश्वर के प्रति अविश्वासयोग्य रहे--इसलिए आप उन्हें अपने वास्तविक नमूने के रुप में न लें। तब कौन हमारा आदर्श नमूना है? हमारे पतित नमूने वैसे न लिए जाएं। लेकिन उनके बीच, वहां बहुत अच्छे चुने हुए नमूने हैं। परमेश्वर के लिए उनके कठिन कार्य के सम्मान के क्रम में हम आदम, नूह, अब्राहम, मूसा और यीशु पर जो बाइबल में हैं उन पर ध्यान देंगे। इसलिए विश्वासयोग्य नमूनों को केन्द्रित करेंगे, हम एक होंगे। आइए ध्यान दें और सेवा करें जो बुलाए गए हैं, जो ध्यान दे रहे हैं और हमारे पिता जैसे जी रहे हैं।

2- धन्य परिवार का पारिवारिक जीवन

परिवारों का शौभाग्यः

हम परिवार रिश्तों, भाइयों और बहनों के केन्द्र में हैं सच्चे माता-पिता के खून से जुड़े हैं नए स्वर्ग के पहले, इसके पहले कि सच्चे माता-पिता विजय की महिमा को प्राप्त हों हमारी स्थितियों में उत्तरदायित्वपूर्ण कार्यों को करते हुए और परिवार के नियमों और परम्पराओं का अवलोकन करने के द्वारा स्वर्ग द्वारा घटाए जाएं। यह मेरा सौभाग्य है।

क्योंकि मूल मानव परिवार के सौभाग्य के संदर्भ में उत्पन्न बंधन का प्रतिनिधित्व करते हैं, वे जीते या मरते हैं इन सौभाग्यों के साथ। बिना शर्म के हम इन सौभाग्यों को पढ़ सकते हैं।

हम असावधानी से रहते व बोलते हैं, लेकिन अब हम अपने परिवारों में नियमों को विकसित कर सकते हैं। माता-पिता क्रोध के कारण अपने बच्चों ककी पिटाई न करें अथवा उनको नीचा करने के लिए सांसारिक शब्दों को न बोलें। अब सभी एक हैं। शब्द, मनोवृत्ति और जीवन के तरीके एक होंगे, परमेश्वर पर केन्द्रित।

आशीष स्वयं एक पीढ़ी में कोई अर्थ नहीं रखती है। यह एक स्त्री और एक पुरुष के एक साथ रहने की अपेक्षा अधिक नहीं है। तब व्यक्तियों की आशीष का भविष्य का संदर्भ क्या है? यह धन्य परिवार के लिए पर्याप्त नहीं है उनके अपने मूल मन के अनुसार जीने के लिए, लेकिन वे परमेश्वर पर केन्द्रित चार पदों की बुनियाद विकसित कर सकते हैं। क्योंकि मानव इतिहास शैतान पर केन्द्रित पतन से आरम्भ हुआ, यह परमेश्वर पर केन्द्रित होकर पुनः स्थापित होगा। यह पतित मनुष्य के लिए सम्भव नहीं है।

शीर्ष क्रम में परिवार के सदस्य परिवार के नियमों को स्वीकार करते हैं व उनका सचेतन अभ्यास करते हैं। लेकिन लोग ऐसी मनोवृत्ति के साथ जैसे कि,'वे नियम मेर साथ कुछ नहीं कर सकते हैं,' परिवार के मुखिया की बातों का उल्लंघन नहीं कर सकते। यदि कोई बड़े पुत्र के रुप में परिवार के मुखिया के नहीं पैदा हुआ है तो परिवार के मुखिया के रुप में उसकी कोई नहीं सुनेगा।

परमेश्वर से आने वाली रक्त रेखा को कैसे बनाए रखा जाए यह चुनौती है। अपरिवर्तनीय रक्त शुद्धता को बनाए रखना, ऐसे नहीं जो गिरने के लिए सम्भव हो। हम अवश्य सचेत रुप से इसके लिए सावधान रहें। इस पतित संसार में शुद्धता को बनाए रखना बहुत कठिन है, अदन के बगीचे में पहला मनुष्य पतित हो गया। कई समस्याएं यहां जुड़ी हैं। धन्य माता-पिता पतित संसार में पैदा हुए हैं, अपने दुख में, अपने धन्य बच्चों के लिए वातावरण का निर्माण

Creation Autonomous Academy

करेंगे। यह पिता का विचार है कि ऐसे वातावरण को नयी पीढ़ी के लिए जितना जल्दी सम्भव हो तैयार किया जाए, चाहे जितना बलिदान करना पड़े। हम जल्दी करें।

हम पतित संसार में रह रहे हैं, हमारे पास उसी के रीति रिवाज और आदतें हैं, भाषा, कपड़े, जूते और महिलाओं के सजावट के सामान को सम्मिलित करते हुए। जब तक हम सांसारिक इतिहास, आदतों और बुरी रीतियों पर पिजय नहीं पाते जो वातावरण प्रदान करती हैं कोइ विकल्प नहीं है।

हम खराब वातावरण में रह रहे हैं इससे अलग हों यदि हम सच्चे व्यक्ति, पुनःस्थापित और स्वर्ग के राज्य में जाने वाले बनना चाहते हैं।

आपका परिवार सांसारिक व आदतों का दास न बने। आप यह न सोचें, 'आज चीजें खराब हैं भविष्य में अच्छी हो जाएंगी। आप अभी सही हैं, वर्तमान समस्या है। जब भूतकाल और वर्तमान काल सही होगा भविष्य सही होगा। अदन के बगीचे में सही दिन का न होना पतन की गवाही है। वह स्थान जहां भूतकाल, वर्तमान काल और भविष्य काल एक में एकताबद्ध हो सकते हैं आदर्श है।

आप वर्तमान को भेंट करें। परमेश्वर की आवश्यकता है अनन्त पत्थर को पृथ्वी पर रखना। यह ऐतिहासिक बिन्दु है।

इस्राएल के अलगाव का कारण है कि वे कनान में प्रवेश करने के बाद कठोर हो गए और उनका मानसिक ध्यान खाने और सुविधाजनक जीवन पर चला गया। इस्राएली धनी हो गए यहां तक कि उन्होंने अन्यजातियों से विवाह किया। वे ज्ञान व सामर्थ्य पाने के बाद। उन्होंने कनानी संस्कृति को अपनायाचुने हुओं की आत्मा को अन्यजातियों के लिए बेंच दिया।

गलत आदतों के दास न बनें। आदतें बुरी बीमारियां हैं। यदि आप विवाह के बाद आदतों के जीवन द्वारा अगुवाई किए जाते हैं तो आप आपने बच्चों के लिए क्यों चिल्लाते हैं उनमें आपकी शारीरिक आदतें आएंगी। आप प्रार्थना के लिए समय नहीं निकाल पाएंगे। जब आपके बच्चे आपके पीछे शोर मचाएंगे प्रार्थना के लिए कोई समय नहीं होगा।

3-एक धन्य परिवार में पति और पत्नी का जीवन-

आदर्श धन्य परिवार के लिए परमेश्वर की आवश्यकता थी कि वे परमेश्वर की महिमा में वापस लौटें, लेकिन पतित जोड़ों ने परमेश्वर को दुखी किया। यहां आदम हव्वा की जिम्मेदारी में अस्वामिभक्ति है। प्रथम रचना स्वामिभक्ति की स्थिति में थी वह परमेश्वर की महिमा करती परन्तु वह यह करने में असफल हो गयी। इसलिए पुनःस्थापना का प्रबन्ध स्वामिभक्ति की शर्त पर किया गया, अन्ततः प्रेम।

यहां तक कि हम पतित लोग प्रेम की शर्त को रखने का प्रयत्न कर रहे हैं हम मूल स्तर को नहीं प्राप्त कर सकते क्योंकि शत्रु हमारी स्वामिभक्ति में बाधा डाल रहा है। हमारे लिए यह बोलना व सोचना सरल है, राष्ट्र के प्रति स्वामिभक्त हों, हमारे माता-पिता के लिए जिम्मेदार होना और हमारी पत्नियों के लिए विश्वासयोग्य होना, लेकिन मूल स्वामिभक्ति और प्रेम जैसा देखते हैं उससे भिन्न है। इसलिए हमें केन्द्रीय बिन्दु की आवश्यकता है।

क्योंकि परमेश्वर स्वामिभक्ति के हृदय केन्द्र को बना रहा है, प्रेम में, सभी धर्म और नैतिकता अवश्य इस स्तर का अनुशरण करें। सभी धार्मिक लोग और यीशु स्वामिभक्त की शर्त पर बनाने के उद्देश्य से परिवार को स्थापित करने का प्रयत्न कर रहे हैं, और प्रेम में। परमेश्वर ने इस्राएल राष्ट्र को एक परिवार की तरह से स्थापित किया। जब बच्चे परिपक्व होंगे, वे परमेश्वर के सिद्धान्त को पुनः अपने स्थान पर रखेंगे।

धन्य परिवार किसी के सामने स्वामिभक्त व प्रेम को स्थापित करने में गिरेगा नहीं, स्वामिभक्त व प्रेम परिवार से आरम्भ होगा। पिता की इच्छा है कि धन्य बनें। इतिहास में परमेश्वर के सामने परिवारों की स्वामिभक्ति, लेकिन कोई भी परिवार प्रेम में नहीं है। परमेश्वर के दिन व शैतान का विनाश आने के पहले प्रेम की शर्त को हम नहीं बना सकते हैं।

Creation Autonomous Academy

संसारिक पतियों से अधिक अपनी पत्नियों से पुरुष प्रेम करते हैं। महिलाएं अपने पतियों से सांसारिक पत्नियों से अधिक प्रेम करती हैं। यह प्रेम की नैतिकता है जो धन्य परिवारों के माता-पिता रखेंगे।

धन्य जोड़े स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करते हैं जब वे प्रेम की बुनियाद रखते हैं। जब एक पति अथवा एक पत्नी एक दूसरे को स्वर्ग, पृथ्वी और सभी मनुष्यों के प्रतिनिधि के रुप में प्रेम करते हैं, ऐसा परिवार सभी धन्य परिवारों का प्रतिनिधित्व करता है। प्रभु यीशु को परिवार का केन्द्र बनाएं। भूतकाल को भूल जाएं। पाप में लिप्त न रहें। आज्ञाकारी बनें।

जब एक धन्य जोड़ा एक परिवार का आरम्भ करता है, पति सार्वजनिक जीवन की अगुवाई करे, और पत्नी पारिवारिक जीवन अर्थात घरेलू जीवन की अगुवाई करे। कार्य आरम्भ करने के पहले पति-पत्नी परमेश्वर के सामने जाएं। धन्य परिवार अपने जीवन को स्वर्गीय नियमों सं व्यवस्थित करता है।

4- धन्य परिवार का भविष्य का जीवन

जोड़ा जानता है कि वह परमेश्वर की इच्छा की पूर्ति का आवश्यक तत्व है। यदि परिवार स्वयं के लाभ के लिए जीता है परमेश्वर की इच्छा की पूर्ति के लिए नहीं जीता बच्चे इसे देखते हैं। परमेश्वर की इच्छा पूर्ति के लिए जीवन जिएं। परिवार में परमेश्वर के आदर्शों की बुनियाद डालें। बच्चों के साथ मिलकर परमेश्वर की इच्छा की पूर्तिकरें।

5-धन्य परिवार के विश्वास का जीवन-

कितने परिवार आराधना के पहले चर्च आकर तैयारी में सहायता करते हैं। बहुत से गीत समाप्त होने पर संदेश आरम्भ होने के पहले आते हैं। वे कैसे विश्वासियों की परमेश्वर की इच्छा को पूरा करने में सहायता कर सकते हैं। लोग अनेकों बहाने बनाते हैं।

धन्य परिवार आराधना के पहले आएं और तैयारी में सहायता करें। आप यह प्रत्याशा न करें किआपके बच्चे बढ़ेंगे जब आप प्रातःकालीन स्तुति नहीं करते और न ही रविवार की आराधना। धन्य परिवार अपने बच्चों को सिखाते हैं सब्त के बारे में आपने उदाहरण के द्वारा। माता-पिता एक अच्छा उदाहरण बनें।

6-त्रियेकता पर केन्द्रित जीवन-

धन्य परिवार त्रियेकता पर केन्द्रित जीवन जिएं। तीन व्यक्ति मिलकर एक हों। मानसिक एकता स्थापित करें। आप विश्वास के मार्ग पर अकेले नहीं जा सकते। त्रियेक परमेश्वर पर निर्भर हों।

7-धन्य परिवार का सामूहिक जीवन-

Creation Autonomous Academy

धन्य परिवार सामूहिक जीवन जिएं। आत्मिक माता-पिता आत्मिक संतान बनाएं। उनके साथ विश्वास का जीवन जिएं। एक दूसरे की सहायता करें। एक दूसरे की आवश्यकता का ख्याल रखें।

एक धन्य परिवार का रहस्य-

उत्पत्ति 12:3

1-परमेश्वर की प्रतिज्ञा पर विश्वास करें अपने परिवार को आशीषित करने के लिए।

2-परमेश्वर के वचन को अपना मार्गदर्शक बनाएं।

3-परमेश्वर को प्रसन्न करने के लिए जिएं।

4-मनोरंजन करें।

धन्य परिवार का चरित्र-

भजन 128:1-6

1-क्या ही धन्य है प्रत्येक जो यहोवा का भय मानता है और उसके मार्गों पर चलता है। उसके आज्ञाओं के अनुसार जीवन जीता है।

2-तु अपने हाथों के परिश्रम का फल खाएगा, तू प्रसन्न रहेगा और तेरा भला होगा।

3-तेरी पत्नी तेरे घर के भीतर फलवन्त दाखलता के समान और तेरे बच्चे तेरी मेज के चारों ओर जैतून के पौधों के समान होंगे।

4-देखो जो यहोवा का भय मानता है, वह ऐसा ही आशीषित होगा।

5-यहोवा तुझे सिय्योन से आशीष दे, और तू जीवन भर यरुशलेम की सुख समृद्धि देखता रहे।

6-वरन् तू अपने नाती-पोतों को भी देखने पाए। इस्राएल को शान्ति मिले।

आपका परिवार मेहमान नवाजी, चंगाई और सुरक्षा का स्थान हो। 2 राजा 4, सुनेम की स्त्री धन्य परिवार का एक अच्छा उदाहरण प्रस्तुत करती है। एक धन्य परिवार निम्नलिखित कार्य करती है।

1-एक पुरुष और एक स्त्री एक दूसरे के साथ आत्मिक और कानूनी रुप से एक होते हैं। प्रेमियों के साथ रहने के लिए बाइबल में कोई स्थान नहीं है।

2-दो वयस्कों की एकता। मात्र उम्र में परिपक्वता नहीं बल्कि बुद्धि, सिद्धान्त, सम्बन्धें और अन्य गुणों आदि में एकता।

3-दो आत्मिक और परमेश्वर से प्रेम करने वाले लोगों की एकता। वचन के अनुसार जीवन जीने वाले भजन 112:1-3 धन्य परिवार परमेश्वर की उपस्थिति को सम्मान देता है। 2 राजा 4:8-10

4-प्रत्येक सहभागी अपनी- अपनी भूमिका जानता है और प्रसन्नता से इसे निभाता है। 1 पत० 3:7

5- दर्शन, समझ और एकता। आमोस 3:3

6-फलवन्तता। वे आत्मिक और शारीरिक रुप से फलवन्त होते हैं। उत्पत्ति 1:28, 18:17-19

7-आत्मिक, आर्थिक और पदार्थीय आशीष। भजन 128:2, 2 राजा 4:18-37

8-धन्य परिवार परमेश्वर की शान्ति का अनुभव करता है। 2 राजा 4:18-37

आपके वैवाहिक जीवन की हर बाधा प्रभु के नाम में गिरा दी जाएं। आपकी एकता फलवन्त, आशीषित और मजबूत हो। प्रभु के नाम में आमीन

Creation Autonomous Academy

अध्याय-15

पारिवारिक वित्तीय योजना और देना

'जहां आपका धन होगा वहीं आपका मन होगा।' मत्ती 6:21

परमेश्वर के पास आपके जीवन व वित्त के लिए एक अच्छी योजना है। आपके जीवन के लिए परमेश्वर की वित्तीय योजना को लागू करने के लिए कुछ महत्वपूर्ण बिन्दुओं को देखना आवश्यक है।

सही बुनियाद

वित्तीय योजना की प्रथम प्रत्याशा है कि अपने उद्देश्य को लें। आपका उद्देश्य जीवन में और जिस उद्देश्य के लिए परमेश्वर ने आपके परिवार को बुलाया है इसका बड़ा प्रभाव पड़ता है परमेश्वर द्वारा दिए गए संसाधनों का कैसे आप प्रबन्ध करते हैं।

यदि आप अपने जीवन के उद्देश्य को पहले समझ लेते हैं, आप अधिक प्रभावशाली होंगे अपने दिन प्रतिदिन के जीवन में और जिन वित्तीय निर्णयों को लेने की आवश्यकता है उनके विषय में अधिक स्पष्ट होंगे। व्यक्ति का महान उदाहरण जिसने अपने उद्देश्य को समझा विलियम विलबरफोर्स हैं, जो इंगलैण्ड की दासता को खत्म करना चाहते थे, और मार्टिन लूथर सुधार में। दोनों पुरुष उद्देश्य के साथ जी रहे और इस ज्ञान के परिणामस्वरुप वे अद्भुत प्रभावशाली थे।

और कहां हम एक उद्देश्य के समझ के प्रभाव को देख सकते हैं? हम इसे अधिक स्पष्टता से देख सकते हैं हमारे जीवन में कैसे परमेश्वर मार्गदर्शन करता है। परमेश्वर ने अपने पवित्रता की घोषणा की इसलिए वह हमें अपनी तरफ खींचता है। परमेश्वर उस योजना को जानता है जो हमारे लिए उसके पास है और वह उसे अपने पवित्र उद्देश्य के लिए संचालित करता है। उसके लागूकरण के विषय में सोचें जो आपके जीवन के लिए है। परमेश्वर अपनी पवित्रता को आपके द्वारा प्रकाशित करने के लिए खोज रहा है और वह उस उद्देश्य के लिए शांत नहीं होगा। क्या एक महान उदाहरण परमेश्वर ने दिया है जिस पर हमें ध्यान देने की आवश्यकता है।

कदम उठाना

1-लक्ष्य निर्धारित करें।

2-एक बैलेन्स सीट बनाना और नकद बहाव का कथन बनाना।

3-एक वजट व वित्तीय योजना विकसित करें।

4-मूल्यांकन करें और तालमेल करें।

नीति॰ 2:6, श्रेष्ठगीत 2:26

Creation Autonomous Academy

पैसे का प्रबन्धन

पैसे के प्रबन्ध के लिए हम तीन कदम ले सकते हैं।-

1-परमेश्वर को पहले दें।-

मसीही होने के नाते हमारी प्रथम वित्तीय प्राथमिकता परमेश्वर और उसके कार्य के लिए देना होना चाहिए। हमारे सभी वरदानों के प्रबन्ध का मुद्दा वित्त सहित परमेश्वर को महत्व देना है। एक परिवार को कितना देना है यह पता करना आसान है। बाइबल का निर्देश है एक दशमांस देना, आय का दशमांस परमेश्वर के पास लाएं। सभी जरुरतों को पूरा करने हेतु जब पर्याप्त होगा तब देने का इन्तजार करने की अपेक्षा पहले परमेश्वर को देना आरम्भ करें।

2-नियमित बचत के लिए पैसा एक तरफ रखें।-

दूसरा महत्वपूर्ण कदम है अनुशासन विकसित करना एक तरफ पैसा रखने का बड़ी खरीददारी के लिए। एक घर के लिए डाऊन पेमेन्ट, कालेज की शिक्षा, छुट्टी व सेवानिवृत्ति आदि। खर्च की योजना के बाद बचत की योजना न बनाएं। एक प्रतिशत निर्धारित करें। बचत करना अभी से आरम्भ करें।बाइबल स्पष्ट करती है कि हम बचत करें कितना अधिक या कितना कम यह नही बताती। बचत का उद्देश्य है भविष्य की आवश्यकता को पूरा करना और दूसरों की सहायता करना।

3-शेष को अपनी आवश्यकता के लिए खर्च करें।-

पैसे के प्रबन्ध की कुंजी खर्च का प्रबन्ध है। परमेश्वर ने जो हमें दिया है उसके नीचे जीना हमें सीखने की आवश्यकता है। यह हम सभी के लिए कठिन है लेकिन यह महत्वपूर्ण जीवन शिक्षा है। कुंजी है कि एक अच्छा वजट बनाएं, जो आधारभूत रुप से खर्च की एक योजना है। सहायक सामग्री काउपयोग सीखने में समय लगाएं। यदि आपके पास वजट नहीं है तो दो या तीन महीने पर खर्चे को जांचें। जब भी आप पैसे खर्च करते हैं एक लाग रखें। जिससे आप अपने वजट की समझ को सुधार सकें। तब अपनी आदत के जांचें कि कैसे चलाएं और कहां कटौती करें। तुरन्त परिणाम न प्राप्त हो तो निराश न हों यह समय लेता है।

अन्ततः दो महत्वपूर्ण बिन्दु-

सब समय एक जोड़े के रुप में पैसे के विषय में बात करें। पति-पत्नी एक साथ बातचीत करें। कुछ पत्नियां पैसे के प्रबन्ध के मामले में अधिक कुशल होती हैं कुछ कम कुशल होती है। पत्नियों को पैसे के मामले में न शामिल करने का यह बहाना नहीं होना चाहिए। जिन मुद्दों का सामना कर रहे हैं उसे दोनों को समझने की आवश्यकता है और एक टीम के रुप में निर्णय लें। पैसे की समस्या एक विवाह के टूटने का महत्वपूर्ण कारण है। यह तब आरम्भ होती है जब एक सहभागी को अंधेरे में रखा जाता है। यदि आप समस्या में हैं तो शीघ्र समाधान तलाशें।

सब से पहले परमेश्वर को सुनें कि आपकी वित्तीय समस्या से वह आपसे क्या कहना चाहता है। पैसा विवाह में अलगाव पैदा करता है परन्तु यह आपको नए तरीके से एक साथ ला सकता है जैसे ही एक साथ आप परमेश्वर पर भरोसा रखते हैं उसकी योजना का अनुशरण करें। यदि आप उसकी योजना का अनुशरण करना चाहते हैं बुद्धिमानी और प्रार्थनापूर्वक अपनी आय का दसमांस उसे दें। हमारा विश्वास है कि आपकी पैसे की समस्या में सुधार आएगा। प्रमुख महत्वपूर्ण बात है कि आप स्वर्ग में धन इकट्ठा कर रहे हैं, जो वास्तव में गिना जाएगा।

बाइबल आधारित देना

Creation Autonomous Academy

गला० 6:10

मन में लें:

अपने हृदय को जांचें।

स्वयं से पूछें क्यों:

एक आदत बनाएं जब आप वित्त का निर्णय ले रहे हैं स्वयं से पूछें आप यह निर्णय क्यों ले रहे हैं। मत्ती 22:21

अपने पैसे से अधिक दें:

परमेश्वर कहता है अपना समय, पैसा, पहलकदमी, वरदान आदि दें।

मन से दें:

व्यवहार मन से होना चाहिए। देना मन से होना चाहिए।

मन से देना महत्वपूर्ण है।:

विधवा का दान, मन से देना महत्वपूर्ण है वरना सब कुछ बेकार है। मर० 12:42-44, व्यवस्था० 16:17

रेंगती जीवनशैली:

रेंगती जीवन शैली रेंगता देना में बदल जाती है।

बिना कटौती देना :

यह करमुक्त है।

आप कहां दे रहे हैं?:

सुसमाचार फैलाने के लिए और आत्मिक परिवार की देखभाल के लिए देना है।

बटोरने का कार्य-

व्यवस्था० 24:19-21 अपनी आय का शतप्रतिशत अपने खर्चे के लिए उपयोग न करें। कुछ भाग अपने वजट से बचाकर रखें जिसे आप स्वतंत्रता से आवश्यकता मंद को दे सकें जिससे उनकी आवश्यकता पूरी हो। आय का स्वामी परमेश्वर है। भजन 104:15, नहेमायाह 8:10, भजन 35:27, 1 तीमु० 6:17

नीतिवचन के कुछ नियम-

- बुद्धिमान का मुकुट उसका धन है। (14:24)
- परिश्रमी की योजनाएं निःसंदेह लाभदायक होती है। (21:5)
- भला मनुष्य अपने नाती -पोतों के लिए धन-सम्पत्ति छोड़ जाता है। (13:22)
- अपने धन से परमेश्वर को आदर दें (3:9-10)
- छल से प्राप्त किया हुआ धन घटता ही जाता है परन्तु जो परिश्रम से धन एकत्र करता है उसे बढाता है। (13:11)
- हे आलसी चींटी के पास जा और उसके कार्यों को ध्यान से देख-----वह ग्रीष्मकाल में अपने भोजन का प्रबन्ध करती हैऔर कटनी के समय भोजन सामग्री एकत्रित करती है। (6:6-8)
- परमेश्वर की आशीष ही से धन मिलता है और और वह उसके साथ दुख नहीं मिलाता। (10:22)

देने के व्यवहारिक तरीके-

- उदारता से दें।
- नियमित दें।
- जानबूझकर दें
- स्वेच्छा से दें

Creation Autonomous Academy

- बलिदानपूर्वक दें
- उत्कृष्ट दें
- हर्ष से दें
- आदर से दें।
- अधिकाई से दें।
- चुपचाप दें।

यह अध्ययन इस बात पर ध्यान केन्द्रित करेगा कि किस प्रकार पवित्र आत्मा की अगुवाई में परिश्रम पूर्वक सही प्रकार से परिवार की देखभाल किया जाए। लेखक ने स्वयं पारिवारिक जीवन व्यतीत करते हुए विभिन्न बातों का अनुभव किया है। जिनको इस अध्ययन में शामिल किया है।

‘ मसीही परिवार ’ नामक यह पुस्तक अनेक वर्षों के अध्ययन-अध्यापन एवं पारिवारिक जीवन के अनुभव के उपरान्त हिन्दी भाषी विश्वासी परिवारों की आवश्यकता के अनुसार तैयार की गयी है। यह पुस्तक मसीही पारिवारिक जीवन में मार्गदर्शन के लिए लिखी गयी है। ताकि कलीसिया के परिवारों को उनकी आवश्यकता के अनुसार देखरेख किया जा सके। यह पुस्तक सभी पाठकों के लिए सरल, रोचक एव व्यवहारिक है। पुस्तक में उदाहरणों का समुचित प्रयोग किया गया है।

Creation Autonomous Academy

परिवार

Dr. Ram Raj David

Duluvamai, Manikpur, Pratapgarh,
Uttar Pradesh – 230202
Email: drramraj64@gmail.com

Creation Autonomous Academy